ISSN 2348-4683
मूल्यः ₹20 मात्र

पाँचवाँ स्तंभ

सकारात्मक चिंतन एवं विकास का संवाहक

सं जानीध्वं, सं गच्छध्वम्

फरवरी 2020

वर्ष 14, अंक 151

समाज्ञी श्वसुरे भव, समाज्ञी श्वश्रवां भव।
ननान्दरि समाज्ञी भव, समाज्ञी अधि देवृषु ॥

सभी देशवासियों को महाशिवरात्रि की
हार्दिक शुभकामनाएँ!
श्री बी. एन. सिंह
ALKEM
Alkem Laboratories Limited
Alkem House, “Devashish” Next To Matulya Centre
Senapati Bapat Marg, Lower Parel (west),
Mumbai - 400 013 Tel : - 022 3982 9999 , Fax : - 022 24903642

लोकतंत्र का
पाँचवाँ स्तंभ
सकारात्मक चिंतन एवं विकास का संवाहक
वर्ष 14, अंक, 151, (कुल पेज 60, कवर सहित)

संस्थापक संपादक : मृदुला सिन्हा
संपादक : संगीता सिन्हा
सलाहकार संपादक : डॉ. रामशरण गौड़
सह–संपादक : संजय कुमार मिश्र
कला एवं सज्जा : प्रहलाद यादव
: नीता राय

कार्यालय
पी.टी. 62/20, डी.डी. ब्लॉक, कालकाजी,
नई दिल्ली- 110019
इ.मेलः editorpanchwastambh@gmail.com
panchvan.stambh@gmail.com
वेबसाइट : www.sathionline.com
फोन/फैक्स : 011-26231999

शुल्क
एक अंक : ₹20
वार्षिक : ₹220
पाँच वर्षीय : ₹1000
आजीवन के लिए : ₹2500

समस्त चेक/बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर,
पाँचवाँ स्तंभ (Panchwa stambh)
नई दिल्ली के नाम स्वीकार्य होंगे।

प्रकाशक, मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी
श्रीमती संगीता सिन्हा द्वारा,
पी.टी. 62/20, कालकाजी,
नई दिल्ली–110019
से प्रकाशित तथा
एना प्रिंट ओ ग्राफिक्स प्रा.लि.
347–के, उद्योग केन्द्र एक्सटेंशन-II,
सेक्टर–ईकोटेक-II, ग्रेटर नोएडा,
गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र. से मुद्रित

सं जानीध्वं, सं गच्छध्वम्
'साथी' (सोशल एक्शन थ्रू इंटिग्रेटेड नेटवर्क) का मासिक प्रकाशन

पाँचवाँ स्तंभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी कानूनी विवादों का निपटारा दिल्ली न्यायालय की अधिकारिता में।

इस अंक में

मंथन 04

संकल्प
सच्चा पुरुष कौन है?
मृदुला सिन्हा 06

चिंतन
काल ने ही सृष्टि को सिरजा है
हृदयनारायण दीक्षित 08

सरोकार
नकल से मुक्ति आवश्यक है
जगमोहन सिंह राजपूत 10

एक देश-एक राशन कार्ड : भ्रष्टाचार को मिटाने की सार्थक पहल
रमेश कुमार दुबे 12

सरस्वती पुनरुद्धार : पर्यटन-विकास उपक्रम
प्रो. मोहन मैत्रेय 14

विवाह विशेष
विदा हो रही बिटिया के नाम पाती
मृदुला सिन्हा 16

एक पत्र होने वाली बहू के नाम
मृदुला सिन्हा 19

हिंदू विवाह : समाज को जोड़ने का पवित्र संस्कार
सीता श्रीवास्तव 21

विवाह संस्कार : विधि-विधानों का सुंदर इंद्रधनुष
डॉ. शान्ति जैन 23

विवाह के रस्मों से घुलती है रिश्तों में मिठास
डॉ. श्रीभगवान सिंह 26

उत्तर भारत में मुसलमानों की शादी की रस्में
शाहीना खान 28

विवाह पर विविध विचार 30

कविताएँ
सप्तपदी
ऋता शुक्ल 34

रथ चढ़ा सूर्य
इन्दिरा मोहन 34

वसंत आ गया
अज्ञेय 35

आज प्रथम गाई पिक पंचम
सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' 35

विज्ञान दिवस
विज्ञानसम्मत हैं लोक के विश्वास
डॉ. ओम प्रकाश शर्मा 36

ईश्वर की आत्मकथा
राजेश जैन 39

अभिनव प्रयास
सामूहिक विवाहों के माध्यम से समरस समाज बना रही है सेवा भारती
डॉ. नीलिमा भारती 42

स्वैच्छिक प्रयास 44

परीक्षा पे चर्चा 45

संस्कार प्रवाह
बड़ा कमरा
राजेश अहूजा 47

आई ऋत वसंती
नरेन्द्र सिंह नीहार 49

राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार 50

कहानी
स्नेहबंध
मालती जोशी 51

'सत्य के प्रयोग' से
महात्मा गांधी 57

किस्त-दर-किस्त
संजय कुमार मिश्र 58

दुल्हन से सास, ससुर, देवर–ननद की सम्राज्ञी बनने की ही अपेक्षा रहती है।

मैं गीत हूँ तुम ऋचा...

वक्त का बदलना एक सतत प्रक्रिया है। मौसम, दिन-रात, जन्म-मृत्यु समय और जीवन का बदलाव चक्र यों ही चलता रहता है। कली हमेशा कली नहीं रहती, फूल हमेशा फूल नहीं रह सकता। समय गुजर जाता है, इस संदेश के साथ कि जो बीत गया, उसका शुक्र मनाएँ और जो आने वाला है, उसके स्वागत की तैयारी में हम लग जाएँ। यह ठीक है कि वक्त सबकुछ बदल देता है। हमारी दुनिया भी धीरे-धीरे या एक झटके से नए स्वरूप को ग्रहण कर ही लेती है।

आम्रकुंजों में मंजरियों का महकना, पलाश का फूलना, चमेली का चमकना भौंरों की गुंजार का सुनाई देना, कोयल की कूक से मोर की उजास का गूँजन, ये सब बसंत के आगमन की आहटें हैं। इन्हीं आहटों के बीच मदमाता बसंत आता है और उल्लास के अथाह मधुसागर में प्रकृति डूब जाती है। पद्माकर जैसे कवि का मन गा उठता है-

द्वार में, दिसान में, दुनी में, देस-देसन में,
देखौ दीप-दीपन में दीपत दिगंत है,
बीथिन में, ब्रज में, नवेलिन में, बेलिन में,
बनन में, बागन में, बगरयो बसंत है।

दिल्ली जैसे शहर में कैसे पता चलता है कि बसंत आ गया है? जब राष्ट्रपति भवन के मुगल गार्डन को आम लोगों के लिए खोल दिया जाता है। 'वैलेंटाइन-डे' के लाल, गुलाबी उपहारों से सजे बाजारों को देखकर या अखबार में बसंत पर कोई लेख पढ़कर... बाकी जो बचा-खुचा रहता है, परीक्षाओं के बीच से गुजर जाता है। हम यह भूल जाते हैं कि यह जो प्रकृति का ताना-बाना है, हम भी इसी का एक हिस्सा हैं। हम कितने भी व्यस्त हों, मौसम यह खबर दे ही जाता है कि मधुमास आ गया। रात के सन्नाटे और अँधेरों को चीरकर, अँधेरे पर जीत हासिल कर झूमती, गाती, चहचहाते हुए अपनी लालिमा बिखेरती आती है, खूबसूरत सुबह। शक्तिपुँज सूरज आसमान पर छाता है। सूरज की किरणों से यह दुनिया जगमगा जाती है। धीरे-धीरे अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हुए फिर वही सुबह, शाम और रात का संघर्ष रह जाता है।

वक्त का बदलना एक सतत प्रक्रिया है। मौसम, दिन-रात, जन्म-मृत्यु समय और जीवन का बदलाव चक्र यों ही चलता रहता है। कली हमेशा कली नहीं रहती, फूल हमेशा फूल नहीं रह सकता। समय गुजर जाता है, इस संदेश के साथ कि जो बीत गया, उसका शुक्र मनाएँ और जो आने वाला है, उसके स्वागत की तैयारी में हम लग जाएँ। यह ठीक है कि वक्त सबकुछ बदल देता है। हमारी दुनिया भी धीरे-धीरे या एक झटके से नए स्वरूप को ग्रहण कर ही लेती है। एक बार फिर, समय है कि जो नया है, अनदेखा है, उसे चुनौती के रूप में स्वीकार करें। यह भी ठीक है कि कलेंडर बदलना जितना आसान है, उतना खुद को बदलना नहीं। कभी पीछे मोह सताता है, तो कभी आगे का सोचकर डर लगता है। जो भी हो, बिना बदलाव तरक्की नहीं हो सकती और शायद इसीलिए आता है बसंत। तन-मन को उल्लास से भरने के लिए शिशिर रातों के अँधेरे को इंद्रधनुषी रोशनी से भरने के लिए, धरती पर जीवन को प्रेम से भरपूर जीने के लिए।

धरती पर जब मानव आया तो वह अकेला नहीं आया, अपने साथ अपनी साथी को भी लेकर आया, सृष्टि की रचना की। जाहिर है, इंसान अकेले रहने की कल्पना भी नहीं कर सकता। मानव जाति का अस्तित्व हमेशा झुंड में दिखा, मिलकर उसने अपने लिए संसाधन जुटाए, मिलकर आपदाओं से संघर्ष किया और इन्हीं संघर्षों से गुजरकर एक सुंदर समाज की रचना की, जिससे यह दुनिया सजी। इसमें चार चाँद लगाए रिश्ते-नातों ने। कुछ रिश्ते ईश्वर ने बनाए और कुछ रिश्ते हमने खुद गढ़ लिए। यहाँ 'कुटुम्ब' व्यवस्था का अपना विशेष महत्त्व है। दादा-दादी, बेटे-बहुओं और पोते-पोतियों के एक छत के नीचे रहने और एक रसोई में पका भोजन करने से प्यार की ऐसी रसधार बहती है, जो संबंधों को और मजबूत बनाती है। घर प्रेम और खुशियों से भरा रहता है।

यहाँ मैं का विकास नहीं, हम की व्यापकता है, जो इकाई के रूप में व्यक्ति को और साथ-साथ पूरे परिवार को ऐसे सकारात्मक रूप में गढ़ती है कि आदर्श समाज की नींव का पत्थर तैयार हो जाता है। 'धन्यो गृहस्थाश्रमः' यों ही नहीं कहा गया। चार आश्रमों में बँटे जीवन के तीन आश्रमों का आधार यह कुटुम्ब व्यवस्था ही है और इस कुटुम्ब व्यवस्था का एक मजबूत स्तंभ है हमारी विवाह संस्था। दो अनजान डगर से चलते हुए दो व्यक्ति मिलते हैं, जीवन भर साथ चलने का मन बनाते हैं। विवाह के खूबसूरत बंधन में बँधकर जीवनसाथी के रूप में आगे बढ़ते हैं और परिवार की नींव रखते हैं। इस रिश्ते में परस्पर विश्वास और आदर की भावना ही एक-दूसरे के लिए स्नेह और समर्पण का बीज बनती है, जिससे दाम्पत्य रूपी वटवृक्ष फलता-फूलता है। शादी से पहले दो व्यकित एक-दूसरे को कितना कम जानते हैं, लेकिन

विवाह हो जाने के बाद यह रिश्ता इतना अटूट और प्रगाढ़ हो जाता है कि जिंदगी की आखिरी साँस तक दोनों का साथ बना रहता है। आज विवाह के पारंपरिक स्वरूप के साथ नए आयाम जुड़े हैं। लड़कियाँ 'ऐसा वर ढूँढ़ो बाबा' जैसे गीतों से किनारा करते हुए अपने लिए खुद वर चुनती हैं। लड़के भी अपना जीवनसाथी खुद चुनना चाहते हैं, लेकिन विवाह जैसी संस्था में रिश्ते में आपसी प्रेमभाव, भरोसा और एक-दूसरे की मानसिकता का सम्मान करना जैसे भावों में बदलाव नहीं आया है। हाल फिलहाल केरल की चेरुवल्ली मुस्लिम जमात मस्जिद ने आपसी सौहार्द की मिसाल कायम की। जब वहाँ के परिसर में 22 वर्षीय अंजू की पारंपरिक हिंदू रीति-रिवाजों से शादी करवाई। ऐसी कोशिशे निश्चित रूप से समाज को प्रेरणा देती हैं और एक-दूसरे को सम्मान देने की बात करती हैं, जो सराहनीय है।

एक सुखी और खुशहाल परिवार तभी बनता है, जब पति-पत्नी दो पहियों की तरह परिवार रूपी गाड़ी को चलाते हैं। अगर इसमें से एक भी पहिया कमजोर हुआ तो पूरी गाड़ी चरमरा जाती है। भारतीय संस्कृति में विवाह को पवित्र संस्था माना गया है। मधुर दाम्पत्य जीवन की नींव है आपसी प्रेम और विश्वास। ऐसा तब संभव है, जब पति-पत्नी एक-दूसरे के कामों में सहयोग दें; विचारों, भावनाओं को समझें और सम्मान करें। यह एक ऐसा रिश्ता है, जहाँ अधिकार का भाव दोस्ती में बदल जाता है। अपने दोस्तों से जिस तरह हम बिना स्वार्थ के, बिना औपचारिकता निभाए हर छोटी-बड़ी बात साझा करते हैं और अपना जीवन खुशहाल बनाते हैं। कुछ ऐसी ही माँग होती है, इस रिश्ते की भी!

पति-पत्नी का रिश्ता उम्र के साथ और मजबूत होता चला जाता है। इस रिश्ते का बनना दुनिया के करीब-करीब हर क्षेत्र में उत्सव का कारण बन जाता है। दो अलग-अलग परिवेशों से आकर अपने समाज के सामने उनकी मौजूदगी में दो लोग साथ-साथ जीने-मरने की कसमें खाते हैं। कुछ वादे करते हैं, जिंदगी के हसीन सपने बुनते हैं और उन सपनों को सच करने की लगन में अपनी पूरी जिंदगी बिता देते हैं। अथर्ववेद में इस रिश्ते के लिए कहा गया, ''मैं गीत हूँ, तुम ऋचा हो, मैं आकाश हूँ, तुम पृथ्वी हो।''

कई ऐसे उदाहरण देखने को मिलते हैं, जब पति-पत्नी ने मिलकर इतिहास रचे हैं। रेडियम का आविष्कार करने वाली मैडम क्यूरी, जिन्हें अपने पति का भरपूर सहयोग मिला। सावित्री और सत्यवान की अद्‌भुत कथा कौन नहीं जानता। भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान दुर्गा भाभी जब भगत सिंह को अंग्रेजों से छिपाकर अपने साथ लेकर हावड़ा पहुँचती हैं तब दुर्गा भाभी की सूझबूझ और उस सुरक्षित यात्रा पर उनके पति स्वतंत्रता सेनानी भगवती चरण वोहरा ने भाव-विभोर होकर कहा था कि ''सचमुच मेरा विवाह आज ही सफल हुआ है।'' महात्मा गांधी और बा के रिश्ते को सब जानते है। मशहूर बॉक्सर पद्‌म विभूषण मैरी कॉम के पति का सहयोग न मिला होता तो आज वे उस ऊँचाई पर न होतीं। एक-दूसरे का सहयोग, एक-दूसरे की उपलब्धि में साथ होना इस रिश्ते की खूबसूरती है। सोलह संस्कारों में पाणिग्रहण संस्कार सामाजिक दृष्टि से सबसे खास है, जो आध्यात्मिक भाव से प्रकृति और पुरुष के

एक सुखी और खुशहाल परिवार तभी बनता है, जब पति-पत्नी दो पहियों की तरह परिवार रूपी गाड़ी को चलाते हैं। अगर इसमें से एक भी पहिया कमजोर हुआ तो पूरी गाड़ी चरमरा जाती है। भारतीय संस्कृति में विवाह को पवित्र संस्था माना गया है। मधुर दाम्पत्य जीवन की नींव है आपसी प्रेम और विश्वास।

एकीकरण का आदर्श है। यही कारण है कि हमारे यहाँ विवाह जन्म-जन्मांतर का बंधन माना गया है, सात जन्मों का बंधन शुभ हो, इस पर कोई आँच न आए। इसके लिए करवाचौथ, तीज जैसे व्रत करने का विधान है। यह कोई छोटी बात नहीं कि इंसान इंसान की पूजा करे। एक-दूसरे के लिए व्रत रखे, चाँद-तारों को गवाह मानकर प्यार, मुहब्बत की कसमें खाए।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखें तो शादी सिर्फ दो लोगों के बीच नहीं बल्कि दो परिवारों के बीच होती है। लेकिन यह भी सच है कि पत्नी के घर में आने पर ही पुरुष पति बनता है, उसका परिवार बनता है, जिसकी धुरी उसकी पत्नी होती है। माना जाता है कि वह परिवार में सुख-समृद्धि लाने वाली होती है। वेदों में कहा गया है- 'सुमंगलीर इमं वधुर।' हमारे आख्यानों में अर्धनारीश्वर का प्रारूप है। सृष्टि के निर्माण के हेतु शिव ने अपनी शक्ति को स्वयं से पृथक् किया। पुरुष (शिव) एवं स्त्री (शक्ति) का एका होने के कारण शिव नर भी हैं और नारी भी, अतः वे अर्धनारीश्वर हैं। जब ब्रह्मा ने सृजन का कार्य आरंभ किया, तब उन्होंने पाया कि उनकी रचनाएँ अपने जीवनोपरांत नष्ट हो जाएँगी तथा हर बार उन्हें नए सिरे से सृजन करना होगा। गहन विचार के उपरांत भी वे किसी भी निर्णय पर नहीं पहुँच पाए। तब अपनी समस्या के समाधान के हेतु वे शिव की शरण में पहुँचे। उन्होंने शिव को प्रसन्न करने हेतु कठोर तप किया। ब्रह्मा के कठोर तप से शिव प्रसन्न हुए। ब्रह्मा की समस्या के समाधान हेतु शिव अर्धनारीश्वर स्वरूप में प्रगट हुए। अर्ध भाग में वे शिव थे तथा अर्ध में शिवा। अपने इस स्वरूप से शिव ने ब्रह्मा को प्रजननशील प्राणी के सृजन की प्रेरणा प्रदान की। साथ ही साथ उन्होंने पुरुष एवं स्त्री के समान महत्त्व का भी उपदेश दिया। शिव-पार्वती का विवाह-उत्सव हम धूम-धाम से मनाते हैं। माना जाता है कि सृष्टि का प्रारंभ इसी दिन से हुआ।

महाशिवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

संगीता सिन्हा

संगीता सिन्हा

सच्चा पुरुष कौन है?

मृदुला सिन्हा
पूर्व राज्यपाल, गोवा

यह तो विदित था और है कि मनुष्य को मनुष्य कहलाने के लिए अपने को बहुत से व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक गुणों से सुशोभित करना पड़ता है। वे गुण केवल सिद्धांत नहीं हों, व्यवहार में भी प्रगट होना चाहिए। तभी समाज के गुणी जन उस व्यक्ति की पहचान एक मनुष्य के रूप में करते हैं।

''इन्द्रियार्थाननुभवन् बुद्धिमांल्लोकपूजितः।
सम्मतः सर्वभूतानामुच्छ्वसन् को न जीवति।।''

पिछले प्रश्नों में अपने द्वारा पूछे गए प्रश्नों और युधिष्ठिर के अनुभव-भंडार से दिए गए उत्तरों से यक्ष प्रसन्न हो रहे थे। युधिष्ठिर जैसे स्थिर चित्त व्यक्ति, जो ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम और वानप्रस्थ आश्रम को पार करते हुए तीनों लोकों में गुजरने वाले प्राणियों की विशेष रूप से जानकारियाँ रखते थे, मनुष्य जीवन ही नहीं, सभी प्राणियों की आवश्यकताओं तथा उनकी पूर्ति करने वालों के बारे में ज्ञान रखते थे। इसलिए यक्ष का प्रश्न समाप्त नहीं होता। पिछले प्रश्न में यक्ष ने खेती करने वालों, बीज बिखेरने वालों, प्रतिष्ठित लोगों के लिए और संतानोत्पादन करने वालों के लिए 'श्रेष्ठ क्या है', यह प्रश्न पूछा और युधिष्ठिर द्वारा दिए गए उत्तर से संतुष्ट हो गए। ऐसा लगता है जैसे अपने ही द्वारा पूछे गए प्रश्नों के युधिष्ठिर द्वारा दिए गए उत्तरों से यक्ष संतुष्ट हो रहे हैं, लेकिन देश-दुनिया की और अधिक जानकारी के लिए शास्त्रों की जगह एक अनुभवी व्यक्ति से प्राप्त करना चाहते थे। इसलिए आगे का प्रश्न है, ऐसा कौन पुरुष है, जो बुद्धिमान है, लोक में सम्मानित है और सभी प्राणियों का माननीय है, लेकिन वही पुरुष इन्द्रियों के विषयों को अनुभव करते तथा श्वास लेते हुए भी वास्तव में जीवित नहीं है?

यक्ष द्वारा पूछे गए इस प्रश्न के अंदर मानव कहलाने के लिए उसमें किसी विलक्षण गुण का होना आवश्यक माना गया है। इस प्रश्न का उत्तर अनुभवहीन व्यक्ति दे नहीं सकता था। युधिष्ठिर ने बड़ा लंबा जीवन जीया था। साथ ही विविधताओं से भरा हुआ उनका जीवन रहा। इसलिए यक्ष अपने इस प्रश्न के सही उत्तर के लिए युधिष्ठिर जैसे व्यक्ति को चुनते हैं। युधिष्ठिर ने गहराई से सोचकर उत्तर दिया, ''जो पुरुष देवता, अतिथि, भरणीय कुटुम्बीजन, पितर और आत्मा, इन पाँचों का पोषण नहीं करता, वह श्वास लेते हुए भी जीवित नहीं है।'' युधिष्ठिर ने बहुत संक्षेप में यक्ष के बृहत्तर प्रश्न का उत्तर दिया था। यक्ष अवश्य प्रसन्न हुए होंगे। उन्हें तुष्टि मिली होगी। हमारे शास्त्रों में उल्लिखित मानव और प्रकृति जीवन के सूत्र हजारों वर्ष बीतने के बाद आज भी उपयोगी है। या यों कहें कि वर्तमान जीवन के लिए भी यथावत् है।

यह तो विदित था और है कि मनुष्य को मनुष्य कहलाने के लिए अपने को बहुत से व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक गुणों से सुशोभित करना पड़ता है। वे गुण केवल सिद्धांत नहीं हों, व्यवहार में भी प्रगट होना चाहिए। तभी समाज के गुणी जन उस व्यक्ति की पहचान एक मनुष्य के रूप में करते हैं। यहाँ यक्ष ने यह भी कह दिया कि जो समाज स्थित महत्त्वपूर्ण मनुष्यों तथा प्राणियों का भी सम्मान नहीं करता, वह मनुष्य साँस तो लेता है, लेकिन उसकी साँसें उसे जीवित की श्रेणी में गणना नहीं करवातीं। अर्थात् जीवित मनुष्य का मनुष्योचित धर्म है कि वह

इन्द्रिय सुख और सांसारिक सुख का भोग करते हुए स्वयं अपने लिए ही नहीं जीये।

मनुष्य को देवता, अतिथि तथा अपने उन कुटुम्बीजनों का भी भरण-पोषण करना चाहिए, जो उनपर निर्भर हैं। इतना ही नहीं, बल्कि अपने पितर (जो स्वर्ग सिधार चुके) और आत्माओं का भी भरण-पोषण करना है। ऐसा ही मनुष्य मनुष्य कहलाने योग्य है। जो उपरोक्त मानवीय कार्य नहीं करता उसका साँस लेना भी व्यर्थ है। हाड़-मांस, धमनियों और शिराओं से बने शरीर में साँस ही महत्त्वपूर्ण है। संपूर्ण शरीर के अवयव धरे रह जाते हैं, जब शरीर से साँस निकल जाती है। वही शरीर जो सबका प्यारा था, शव बन जाता है। युधिष्ठिर का कहना है कि उपरोक्त पाँचों श्रेणियों के लोगों की सेवा और भरण-पोषण नहीं करने वाले मनुष्य की साँस तो चलती है, लेकिन उसे जीवित नहीं कहा जा सकता। वह चलता-फिरता, इन्द्रियों का भोग करता साँस लेते हुए भी शव के समान है।

यक्ष ने अपने प्रश्न में मनुष्य के लिए बुद्धिमान, लोकजीवन में सम्मानित होना तथा सभी प्राणियों का माननीय होना आवश्यक माना है। इन गुणों के रहते हुए भी कुछ गुणों से वंचित पुरुष साँस लेते हुए भी जीवित नहीं कहा जा सकता। प्रश्न में दिए गए गुण, मनुष्य को समाज में प्रतिष्ठित बनाता है। युधिष्ठिर ने मनुष्य के जीवित कहलाने के लिए उपरोक्त पाँचों का भरण-पोषण आवश्यक बतलाया है।

यक्ष द्वारा पूछा जा रहा एक-एक प्रश्न सटीक और शाश्वत है।

मनुष्य को देवता, अतिथि तथा अपने उन कुटुम्बीजनों का भी भरण-पोषण करना चाहिए, जो उनपर निर्भर हैं। इतना ही नहीं, बल्कि अपने पितर (जो स्वर्ग सिधार चुके) और आत्माओं का भी भरण-पोषण करना है। ऐसा ही मनुष्य मनुष्य कहलाने योग्य है।

क्योंकि हर काल में देवता, अतिथि तथा भरणीयम कुटुम्बीजन का पालन-पोषण हर व्यक्ति को करना ही चाहिए, जो दीखते हैं, लेकिन पितर और आत्मा दिखती नहीं। हमारे समाज में पितरों और प्यासी आत्मा को भी पानी देने की परंपरा है। युधिष्ठिर के अनुसार जो व्यक्ति ऐसा नहीं करता, उसे मनुष्य कहलाने का हक नहीं है।

महाभारत काल से लेकर आजतक इन्हीं सूत्रों के आधार पर हाड़-मांस के प्राणी को मनुष्य बनाने की चेष्टा की जा रही है। हमारे शास्त्रों में ऐसे अनमोल विचार हैं, जिन्हें कई संस्थाओं, संत-महात्माओं और पंडितों-शिक्षकों द्वारा हर मनुष्य तक पहुँचाया जाता है। दुःख तब होता है, जब शास्त्रों में लिखने तथा पंडितों द्वारा लिखने और समझाने के बाद भी मनुष्य को मनुष्य बनाना कठिनतर कार्य है।

(प्रश्न यक्ष का, उत्तर युधिष्ठिर का–8)

विवाह सूत्र

विवाह का वचन

गृभ्णामि ते सौभागत्वाय हस्तं
मया पत्या जरदष्टिर यथासः।
भगो अर्यमा सविता पुरंधिर
मह्यं त्वादुर् गार्हपत्याय देवाः।।

अर्थात् सौभाग्य के लिए मैं तुम्हारा हाथ (अपने हाथों में) ग्रहण कर रहा हूँ, ताकि तुम मेरे साथ, यानी अपने पति के साथ वृद्धावस्था तक रह सको। भाग, अर्यमा, सविता, पुरंधि आदि देवताओं ने तुम्हें मुझे दिया है, ताकि तुम मेरे घर की स्वामिनी बन सको।

विवाह के इस वचन ने भारत में हजारों वर्षों तक दंपतियों का मिलन कराया है। 'किसी गृह की स्वामिनी होना', अर्थात् गार्ह्पत्य का अर्थ आदर्श गृहस्थ जीवन-गृहस्थाश्रम में जीने से लगाया गया।

अपने नए घर में पत्नी का स्थान

पूषा त्वेतो नयतु हस्तगृह्या
अश्विना त्वा प्र वहतां रथेन
गृहान् गच्छ गृहपत्नी यथासो
वशिनी त्वं विदथम् आ वदासि।।

अर्थात् अब के बाद पुषान तुम्हारे हाथों को ग्रहण करे और पथप्रदर्शन करे, दोनों अश्विन तुम्हें अपने रथ पर ले जाएँ। तुम्हारे घर जाएँ, ताकि तुम उस घर की स्वामिनी बन सको। (घर की) स्वामिनी बनकर तुम सभा को संबोधित करोगी। गृहस्थी में पत्नी का स्थान उच्च होता है।

संयुक्त जीवन

पुत्रिणां ता कुमारिणा
विश्वम् आयुर् व्यश्नुतः।
उभा हिरण्यपेशसा।।

अर्थात् वेद उस प्रसन्न परिवार से आनंदित होता है, जिसमें पति-पत्नी, पुत्रों और पुत्रियों के साथ परस्पर सामंजस्य के साथ रहते हैं और लंबे जीवन तथा समृद्धि का आनंद लेते हैं।

सम्राज्ञी श्वसुरे भव

सनातन संस्कृति में विवाहित महिलाओं को पति द्वारा माँग में सिंदूर भरा जाता है सिंदूर भरते समय मंत्रोच्चार में कहा जाता है कि

सम्राज्ञी श्वसुरे भव, सम्राज्ञी श्वश्रवां भव।
ननान्दरि सम्राज्ञी भव, सम्राज्ञी अधि देवृषु ।।
इहैव स्तं मा वि योष्टं विश्वसायुर्वयश्नुतम्।
क्रीडन्तौ प्त्रैर्नप्तृभिर्मोदमान्नौ स्वस्त कौ।।

अर्थात् श्वसुरजी की सम्राज्ञी बनो, तुम सास, ननदें, और देवरजन की सम्राज्ञी बनो, हे स्नेह राज्य की सम्राज्ञी नवदम्पति होकर सदा साथ रहो। आबद्ध प्रेम-आकर्षण में तुम पूर्ण आयु आनन्द करो। मिल जग आंगन सुख वर्षण में प्रिय पुत्र-पौत्र शिशु क्रीडाएँ, उल्लास बढ़ायें जीवन में, हो प्रेम श्रेय के अधिकारी, तुम तन-मन कीर्ति आयुधन में।

काल ने ही सृष्टि को सिरजा है

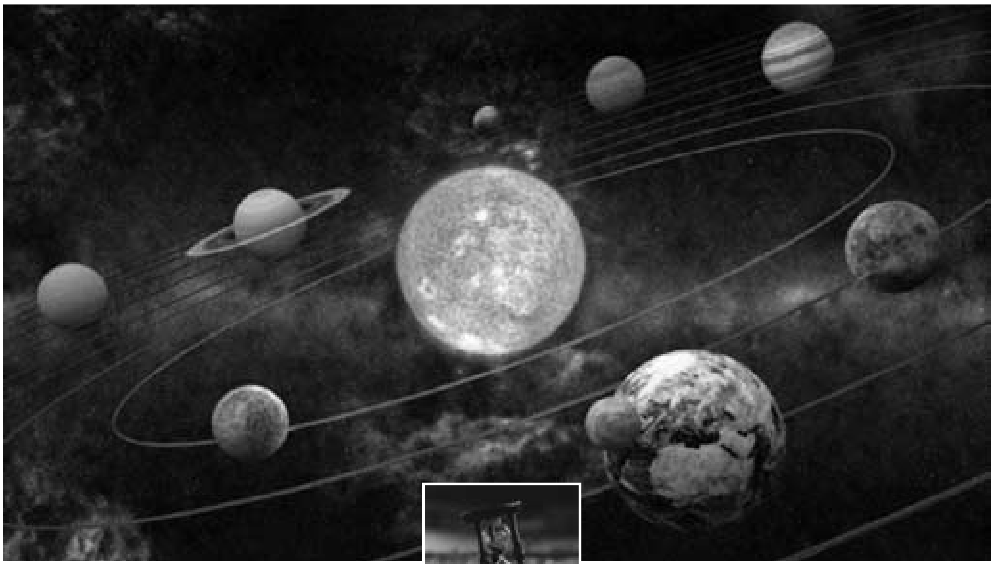

हृदयनारायण दीक्षित
विधानसभा अध्यक्ष, उ.प्र.

अथर्ववेद में काल का सर्वव्यापी प्रभावशाली अस्तित्व गाया गया है। 19वें काण्ड के सूक्त 53 व 54 के 15 मंत्रों के ऋषि कवि भृगु ने काल की सुंदर महिमा गाई है। बताते हैं कि ''काल अश्व है। यह विश्व रथ है। काल अश्व इस विश्वरथ का वाहक है। यह सात किरणों व सहस्रों आँखों वाला है। यह कभी जर्जर या बूढ़ा नहीं होता। सभी लोक इसके चक्र हैं। इस पर कवि ही आरोहण करते हैं।''

कालचिंतन भारतवासियों का प्रिय विषय रहा है। ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में दिन रात्रिविहीन दशा का उल्लेख है। काल की धारणा में दिन और रात्रि समय के ही चेहरे हैं। ऋषि के अनुसार, तब न रात थी, न दिवस। मूलभूत प्रश्न है कि क्या तब काल था? वस्तुतः काल का बोध गति से हुआ। ऋषि के अनुसार, केवल 'वह' था। वह अपनी क्षमता के कारण वायुहीन स्थिति में भी स्पंदित था। स्पष्ट है कि तब काल नहीं था। अनेक देशों में काल आधुनिक विश्व में भी भिन्न भिन्न प्रतीत होता है। भारत और अमेरिका या ब्रिटेन का काल अलग है।

वर्ष, मास, दिवस, प्रहर, घंटा, मिनट, सेकेंड काल के विभाजन हैं। भारतीय कालगणना में पल, विपल के साथ मुहूर्त भी है। समय विभाजन में नववर्ष की चर्चा ज्यादा होती है। नवदिवस, नवप्रहर व नए मिनट की कम। वस्तुतः काल की कोई इकाई नई या पुरानी नहीं है। काल धारणा अखण्ड है। ईसा का नववर्ष 2020 प्रारम्भ हो चुका है। इस कालगणना में बीते दिसंबर की अंतिम तिथि को 2019 चला गया और 2020 चल रहा है। इस तरह सोचने में 2019 एक स्वतंत्र सत्ता जान पड़ता है और 2020 भी। वस्तुतः वे दो नहीं हैं। समय नया या पुराना नहीं होता। हम सब ही अपने जन्म, यौवन और वृद्ध होने में नए या पुराने होते हैं।

अथर्ववेद में काल का सर्वव्यापी प्रभावशाली अस्तित्व गाया गया है। 19वें काण्ड के सूक्त 53 व 54 के 15 मंत्रों के ऋषि कवि भृगु ने काल की सुंदर महिमा गाई है। बताते हैं कि ''काल अश्व है। यह विश्व रथ है। काल अश्व इस विश्वरथ का वाहक है। यह सात किरणों व सहस्रों आँखों वाला है। यह कभी जर्जर या बूढ़ा नहीं होता। सभी लोक इसके चक्र हैं। इस पर कवि ही आरोहण करते हैं।'' (वही 53.1) यहाँ अश्व गति का पर्याय है। गति के कारण ही अश्व की प्रतिष्ठा है। कवि को ही इस रथ पर बैठने का पात्र बताया गया है। काल की वास्तविक अनुभूति या कालबोध के लिए कवि जैसी संवेदनशीलता चाहिए। काल प्राचीन, अर्वाचीन या नूतन नहीं होता। काल की दृष्टि में संसार या प्रकृति के गोचर प्रपंच ही नए पुराने होते रहते हैं। भृगु कहते हैं, ''काल में मन है, काल में प्राण हैं और काल में ही सारे नाम हैं। काल की अनुकूलता में ही प्रजा को आनंद मिलते हैं- कालेन नन्दन्त्यागतेन प्रजा इमाः।'' (वही 7) प्रकृति का अणु परमाणु गतिशील है। गति से समय का बोध है। अनुकूल गति आनंद देती है, प्रतिकूल गति व्यथा देती है। इसे ही हम सब अच्छा या बुरा समय कहते हैं। महाभारत के रचनाकार व्यास भी कालवादी थे। वे भी अथर्ववेद की तर्ज पर शीत, ग्रीष्म आदि ऋतु को भी काल का प्रभाव मानते थे, लेकिन उन्होंने राजा और काल के प्रभाव के प्रसंग में प्रश्नोत्तर के माध्यम से कहा है कि ''क्या राजा काल का निर्माता है या काल ही राजा का कारण है? उत्तर है कि राजा ही काल का निर्माता है।'' भृगु ने मन को भी काल के अधीन बताया है, लेकिन कभी-कभी मन भी यांत्रिक काल का

अतिक्रमण करता है। मित्र या आत्मीय की संगति में काल छोटा लगता है और प्रतिकूल या विरोधी की संगति में दीर्घ। यहाँ काल पर संगति का प्रभाव भी पड़ता है।

वैदिक देवता नाम और कतिपय विशेषताओं के कारण अलग-अलग हैं। लेकिन अपनी व्याप्ति में वे संपूर्ण लोकों को आच्छादित करते हैं। ऋग्वेद के इन्द्र पृथक् नाम है और वरुण भी। लेकिन इन्द्र, वरुण अपनी व्याप्ति में सर्वत्र शक्तिमान सर्वसमुपस्थित हैं। अथर्ववेद में भी यही स्थिति है। काल भी ऐसी ही देव अनुभूति है। भृगु कहते हैं, ''काल ने ही सृष्टि सृजन किया है। सूर्यदेव काल की प्रेरणा से ही तपते हैं- काले तपति सूर्यः। समस्त प्राणी काल आश्रित हैं। नेत्र भी काल आश्रित होकर देखते हैं।'' (वही 6) कहते हैं, ''काल ने दिव्यलोक उत्पन्न किए। सभी प्राणियों की आश्रयदाता भूमि को भी उन्होंने ही उत्पन्न किया। भूत, भविष्य और वर्तमान काल के आश्रित हैं।'' (वही 5) कहते हैं, ''काल में तप है- काले तपः। काल में वरिष्ठता है। काल में ब्रह्म भी समाहित है। काल सबका पिता है, पालक है, प्रजापति है और सबका इश्वर है- कालो ह सर्वस्य ईश्वरो।'' (वही 8) इन तीनो मंत्रों में काल ही स्रष्टा द्रष्टा व विधाता हैं। यहाँ काल की व्याप्ति अनंत है। ऋषि कवि का कालबोध संपूर्णता के बोध तक विस्तृत है। कवि के सृजन में काल अनंत व अपरिमेय सत्ता हो गए हैं।

सृष्टि सृजन के पूर्व काल का अस्तित्व विचारणीय है। दिक् और काल सृष्टि के भाग हैं। तब काल की उत्पत्ति भी सृष्टि के साथ या बाद में होनी चाहिए। भृगु के मत में ''काल ने सबसे पहले प्रजापति का सृजन किया। फिर प्रजा का- कालः प्रजा असृजन, कालो अग्रे प्रजा पतिम्। काल स्वयंभू उत्पन्न हैं।'' (वही 10) बताते हैं कि ''संसार काल प्रेरित काल द्वारा उत्पन्न है, काल में प्रतिष्ठित है।'' (वही 9) यहाँ काल स्वयंभू है। सदा से है। तब सृष्टि की अव्यक्त दशा में भी काल का अस्तित्व होना चाहिए। लेकिन ऋग्वेद की धारणा में अव्यक्त दशा में गति नहीं है। दिन व रात जैसे काल रूप नहीं हैं। भृगु संभवतः सृष्टि की अव्यक्त दशा में भी कालबीज को अव्यक्त सृष्टि का अंग मानते थे। उन्होंने इसी सूक्त (19.53.4) में कहा है, ''वह काल समस्त भुवनों में व्याप्त है। सबका पोषण करता है। पहले सबका पिता है और बाद में वही सबका पुत्र है।'' इस तरह वही भूत है और वही वर्तमान होता है। वर्तमान और भूत एक हैं। अलग-अलग इनका कोई अस्तित्व नहीं है।

भूत और भविष्य काल का विभाजन जान पड़ते हैं। वे समय-बोधक प्रतीत होते हैं। वस्तुतः सबका भूतकाल सबकी अपनी स्मृतियाँ हैं, जिसकी जितनी स्मृति उसका उतना भूतकाल। लेकिन स्मृति का अस्तित्व वर्तमान में होता है। घटना हमेशा वर्तमान में घटती है। इसके बाद वह भूत हो जाती है। उसकी स्मृति वर्तमान में ही होती है। पूर्व घटित घटनाओं का स्मरण ही भूतकाल है। भृगु कहते हैं, ''काल के द्वारा ही पूर्व में भूत व भविष्य को उत्पन्न किया गया है।'' (वही 19.54.3) काल ने किसी पूर्वकाल में भूत-भविष्य को जन्म दिया है। इसका सीधा अर्थ निकलता है कि इसके भी पहले एक समय भूत व भविष्य नहीं थे। काल भी था या नहीं? यह बड़ी पहेली अभी भी अनुत्तरित है।

वैदिक मंत्रो में शाश्वत व तात्कालिक विवरण हैं। शाश्वत सदा से है, सदा रहता है। तात्कालिक उसी मनोभूमि में प्रकट होता है और भूत हो जाता है। भृगु कहते हैं ''ऋग्वेद और यजुर्वेद के मंत्र भी काल से प्रकट हुए हैं।'' (वही 3) इसका प्रत्यक्ष यथार्थ है कि सदा विद्यमान शाश्वत का विवरण और मंत्र रूप प्रकटीकरण सदा से नहीं है। शाश्वत सदा से है। उसका मंत्र गान बाद में हुआ है। भृगु ने ऋग्वेद और यजुर्वेद का उल्लेख किया है। दोनों अथर्ववेद के पूर्ववर्ती हैं। अथर्ववेद के रचनाकाल में ऋग्वेद व यजुर्वेद की अतिरिक्त प्रतिष्ठा थी। भृगु ने काल सूक्त की रचना में स्वाभाविक ही दोनों संहिताओं का उल्लेख किया है।

पृथ्वी गतिशील है। यूरोप के देशों में यह ज्ञान आधुनिक काल में हुआ। वे पहले पृथ्वी को स्थिर मानते थे। पृथ्वी को गतिशील बताने वाले वैज्ञानिक उत्पीड़ित किए गए। अथर्ववेद ईसा से लगभग तीन हजार वर्ष प्राचीन है। अथर्व के ऋषि पृथ्वी के गतिशील गुण से सुपरिचित थे। कहते हैं, ''काल से ही पृथ्वी गतिशील है और दिव्यलोक काल के आश्रय में स्थित हैं।'' (वही 2) अथर्ववेद का कालचिंतन गंभीर विचार के योग्य है। बड़ी बात है कि यहाँ हजारों वर्ष पहले काल धारणा थी। काल का विवेचन था। ऐसे जटिल दार्शनिक व वैज्ञानिक विषयों पर चिंतन था। अथर्वा अंगिरा, वैदिक समाज के प्रतिष्ठित दार्शनिक ऋषि कवि थे। वैसे अथर्ववेद की कालधारणा में समस्त लोक काल आश्रित हैं, लेकिन भृगु ऋग्वेद व यजुर्वेद के मंत्रों के साथ ही अथर्वा-अंगिरा का पृथक् उल्लेख नहीं भूलते। वे इन दोनों दार्शनिक कवियों को भी काल में अधिष्ठित बताते हैं। (वही 5) काल ब्रह्माण्ड में व्याप्त है। इस तरह वह आस्तिक भाव में प्रकृति की महान भावशक्ति बन जाता है। आयु कालाधीन हो जाती है और जन्म व मृत्यु भी। अथर्ववेद की कालधारणा आधुनिक वैज्ञानिक युग में भी प्रवाहित है। ऐसे काल-प्रवाह नमस्कारों के योग्य हैं। ©पाँ.स्तं.

सृष्टि सृजन के पूर्व काल का अस्तित्व विचारणीय है। दिक् और काल सृष्टि के भाग हैं। तब काल की उत्पत्ति भी सृष्टि के साथ या बाद में होनी चाहिए। भृगु के मत में ''काल ने सबसे पहले प्रजापति का सृजन किया। फिर प्रजा का- कालः प्रजा असृजन, कालो अग्रे प्रजा पतिम्। काल स्वयंभू उत्पन्न हैं।'' (वही 10) बताते हैं कि ''संसार काल प्रेरित काल द्वारा उत्पन्न है, काल में प्रतिष्ठित है।'' (वही 9) यहाँ काल स्वयंभू है। सदा से है। तब सृष्टि की अव्यक्त दशा में भी काल का अस्तित्व होना चाहिए, लेकिन ऋग्वेद की धारणा में अव्यक्त दशा में गति नहीं है। दिन व रात जैसे काल रूप नहीं हैं। भृगु संभवतः सृष्टि की अव्यक्त दशा में भी कालबीज को अव्यक्त सृष्टि का अंग मानते थे।

नकल से मुक्ति आवश्यक है

जगमोहन सिंह राजपूत
लेखक, शिक्षाविद

आज देश में परीक्षाओं में नकल की जो स्थिति है, उसे जानकार और देखकर मन में उदासी तो आती है, निराशा भी होती है कि इसके दुष्परिणामों को सही परिमाण में सही जगहों पर क्यों समझा नहीं जाता है!

देश भर में बच्चे परीक्षाओं की, विशेषकर बोर्ड परीक्षा की तैयारी प्रारंभ कर चुके हैं। माता-पिता भी यथासंभव सहयोग करते हैं, बच्चों की आवश्यकताओं का ध्यान रखते हैं। तब भी चाहते हैं की उनके परीक्षा परिणाम बिना किसी बाधा के संपूर्ण हो जाएँ। लगभग प्रतिवर्ष नकल या परचा 'लीक' होने के कारण अनेक प्रकार की समस्याएँ पैदा होती हैं। अनेक प्रकार के प्रयासों के बावजूद भी इनका समाधान निकल नहीं पाता है। अनेक बार इस दिशा में कुछ हास्यास्पद प्रयास भी सामने आते हैं। अक्टूबर को समाचार-पत्रों में एक चित्र छपा, हावेरी के एक कॉलेज में नकल रोकने के लिए छात्रों को कार्ड बोर्ड के डिब्बे पहनाए गए, ताकि वे इधर-उधर न देख सकें, नकल न कर सकें! इसके पहले कि मैं शीर्षक के आगे जाकर खबर विस्तार से पढ़ता, मुझे उत्तर प्रदेश के अपने गाँव की वे यादें ताजा हो गईं, जो लगभग 5-6 वर्ष की आयु से मैंने सहेजकर रखी हुई हैं। छोटा-सा ऊँचाई पर बसा गाँव, चारों तरफ तीन-चार किलोमीटर के दायरे में केवल खेत, बगीचे, तालाब, चरागाह, कच्ची पगडंडियाँ, हरियाली, खेतों में काम करते लोग। बच्चों के अपने-अपने प्रिय जानवर चिह्नित हो जाते थे। मुझे बैलों की एक जोड़ी पसंद थी और सारा घर इसे जानता था। जब बैलगाड़ी जिला मुख्यालय के लिए तैयार होती थी, तो बच्चों का कौतूहल उछाल लेने लगाता था, किसे आज जाने का मौका मिलेगा! जब गाड़ी चलने के पहले मूँज का घर में बना हुआ 'मास्क' वहाँ उसे मुशिक्का कहते थे! बैलों के मुँह पर पहनाया जाता था, तो मुझे कष्ट होता था। ऐसा तब भी होता था, जब हल चलाने के लिए बैलों को तैयार किया जाता था और पास के खेतों में हरियाली होती थी। हरियाली चाहे कच्ची सड़क के आसपास हो या खेत के किनारे, बैल उस पर ध्यान अवश्य देते थे और 'मुँह मारते थे!' मास्क-मुशिक्का पहनाकर उसे रोका जा सकता था। पड़ोस के गाँव में मैंने कोल्हू के बैल को मास्क पहने देखा, तब सोचा कि यहाँ तो कोई हरियाली नहीं है, इसको क्यों पहनाते हैं? इससे जुड़ा मुहावरा तो बहुत बाद में पढ़ाया गया। 'कोल्हू के बैल' की सार्थकता शिक्षा क्षेत्र में कहीं भी देखी जा सकती है। यह सब मुझे तब भी याद आया था, जब टोकयो की सड़कों पर मैंने पहली बार लोगों को जहरीले हवा से बचने के लिए मास्क का प्रयोग करते देखा था। अब तो दिल्ली में भी देखता हूँ, मुझे भी पहनने की राय दी गई है। जिस प्रकार हम सब मिलकर हवा को जहरीली बनाने में योगदान करते हैं, फिर बच्चों को मास्क बाँटते हैं, उसी प्रकार शिक्षा जगत् नकल के लिए परिस्थितियाँ उत्पन्न करता है, फिर उसे रोकने के उपाय ढूँढ़ता है। बच्चों को, युवाओं को नकल रोकने के लिए हावेरी जैसा नवाचार मैंने पहली बार जाना, वैसे लोगों ने गूगल सर्च कर पता लगा लिया है कि ऐसे नवाचार पहले भी हो चुके हैं। यानी यह स्वयं में ही एक नकल थी!

आज देश में परीक्षाओं में नकल की जो स्थिति है, उसे जानकार और देखकर मन में उदासी तो आती है, निराशा भी होती है कि इसके दुष्परिणामों को सही परिमाण में सही जगहों पर क्यों समझा नहीं जाता है! हर स्कूल बोर्ड, लोक सेवा आयोग तथा अनेक प्रवेश परीक्षाएँ लेने वाले आप को विस्तार से बताएँगे कि उन्होंने नकल रोकने के अकाट्य उपाय कर लिए हैं। मगर नकल है कि रुकती ही नहीं है। इसे समझने की लिए इस तथ्य को स्वीकार करना होगा जिनके ऊपर नकल रोकने की जिम्मेवारी है, वे ही इसके समाप्त नहीं होने के लिए जिम्मेवार हैं। जब कोई स्तरहीन मेडिकल कॉलेज स्वीकृत होता है, तब उसके लिए जिम्मेवार वह विशेषज्ञों, यानी वारिष्ठ डॉक्टरों की संस्तुति होती है, जिसमें सबकुछ सही ठहरा दिया जाता है। सब जानते हैं और ऐसा बी.एड., मैनेजमेंट, फॉर्मेसी इत्यादि की संस्थाओं की स्वीकृति में भी होता है। जब नियमित अध्यापक और प्राध्यापक ट्यूशन और कोचिंग संस्थानों में समय देने को अधिक महत्त्व देंगे तो वे नकल क्यों

रोकेंगे? क्या वैसा करने की साख उनके पास बचेगी? 2015 में बिहार के वैशाली में नकल को लेकर कुछ चित्र और वीडियो लोगों के समक्ष आए थे, जो भुलाए नहीं जा सके, न ही भुलाए जाने चाहिए। जिस अबोध बच्ची को टॉप कराया गया था, उसे भी संवेदनहीनता के झंझावात में पुलिस के समक्ष जाना पड़ा। उसने अपने एक वाक्य में समस्या और समाधान देश के सामने उजागर कर दिए; 'मैं तो सेकेंड डिवीजन चाहती थी, चाचा ने टॉप करा दिया!' मैं जीवनपर्यंत यह वाक्य भूल नहीं सकूँगा। हावेरी के जिस संस्थान में जो कुछ हुआ, उस पर देश-विदेश में टीकाएँ हुईं, संस्थान नें क्षमा याचना भी कर ली, मगर क्या बात समाप्त हो गई? इस प्रकरण के सार तत्त्व से और वैशाली की घटना को सामने रखकर शिक्षा-जगत् से जुड़े हर व्यक्ति को शिक्षा लेनी चाहिए।

1977-88 दौरान एक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान का प्रमुख रहकर मैंने भी नकल रोकने की जिम्मेवारी अपने सहयोगियों के साथ निभाई और बहुत कुछ सीखा। परीक्षा के एक महीने पहले से ही कुछ अध्यापक तथा प्राचार्य और अन्य वरिष्ठ सहयोगी विद्यार्थियों के साथ कक्षाओं तथा छात्रावासों में जाकर चर्चा करते थे। इनके अंत में विद्यार्थी स्वयं ही कहने लगते थे कि वे समझ रहे हैं कि नकल उनके लिए कितनी घातक है, अमान्य है, चूँकि अभी समय था, अतः वे परीक्षा के लिए आवश्यक तैयारी करेंगे। संस्था की तरफ से यह आश्वासन दिया जाता था कि जिसे भी अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता होगी, मिलेगी और अध्यापक इसके लिए समय और सहयोग देंगे। इसका अत्यंत सकारात्मक प्रभाव पड़ता था, लाइब्रेरी में भीड़ बढ़ जाती थी, अध्यापकों को अतिरिक्त समय देकर आंतरिक प्रसन्नता होती थी। परीक्षा के लिए जब विद्यार्थी अपने कक्ष में प्रवेश करते थे, तो वहाँ कक्ष-निरीक्षक पहले से ही उपस्थित होते थे, वे उन सभी को शुभकामनाएँ देते थे, जब परीक्षा पत्र देने का समय होता था, तो उसके पहले अध्यापक यह कहकर बाहर निकल जाते थे कि अगले दो मिनट में यदि 'गलती' से कोई कागज जेब में रह गया हो तो निकालकर बाहर डाल दें, जब वे वापस आते थे, तो दो-चार ऐसे कागज-पुर्जियाँ मिल ही जाती थीं। इसका अर्थ यह निकाला जाता था कि प्रयत्न में सघनता तथा सतर्कता के साथ सततता भी आवश्यक है। इस सबसे संस्था कि साख बढ़ी और लगभग दस-ग्यारह वर्षों तक उसमें शामिल होने का संतोष मुझे आज भी है। यह तीस वर्ष तक के पहले की स्थिति थी। अब संख्याएँ बढ़ी हैं, प्राध्यापकों/अध्यापकों के रिक्त पद बढ़े हैं, राजनेता बढ़े हैं और उनके अंदर अपना प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने की इच्छा भी बढ़ी है। शिक्षा में निजी निवेश और उससे जुड़ा लाभांश लगातार बढ़ाया जा रहा है। परीक्षा में प्राप्तांक 99 प्रतिशत के ऊपर तक छलाँग लगा चुके हैं। इस सबका प्रभाव पूरी व्यवस्था को डगमगा चुका है। राज्यों के स्कूल बोर्ड, सीबीएसई या टेक्स्टबुक बोर्ड के अध्यक्ष अब शिक्षाविद् नहीं होते हैं, केवल नौकरशाह या मंत्रीजी के प्रिय पात्र ही इस योग्य समझे जाते हैं। उत्तर प्रदेश, बिहार जैसे राज्यों में कुछ क्षेत्रों और कुछ स्कूलों ने नकल के क्षेत्र में 'ख्याति' प्राप्त कर ली है, कुछ नकल माफिया राष्ट्रीय स्तर पर अपना 'नेटवर्क' चलाने का श्रेय लेते हैं। रोजगार की परीक्षाएँ कभी नकल से दूर मानी जाती थीं, उन संस्थाओं की अपनी साख होती थी, लोग उनपर विश्वास करते थे। वह अब इतिहास हो गया है।

नकल की चर्चा हो और गाँधीजी को न याद किया जाए, ऐसा असंभव है। स्कूल निरीक्षण के समय वे अंग्रेजी के केटल शब्द की वर्तनी गलत लिख रहे थे, अध्यापक ने इशारा किया कि बगल वाले से नकल कर लो, मगर वे नहीं माने। बाद में पाता चला कि सारी कक्षा में सभी की वर्तनी शत-प्रतिशत सही थे, केवल मोहनदास गाँधी ही गलत थे! उन्होंने बाद में लिखा कि 'मैं नकल करने की कला कभी सीख नहीं पाया।' बापू भले ही सीख न पाए हों, मगर इस कला का 21वीं सदी में विकास अब सभी को दिखाई देने लगा है और यह अपना प्रभाव भी डाल रहा है। आज विश्व के अनेकानेक विकसित देशों में स्कूल के प्रोजेक्ट बाजार से खरीदकर जमाकर देना और उनका स्वीकृत हो जाना, एक प्रचलित व्यवस्था है और ऐसा प्रचलन तभी बढ़ता है, जब लोग अस्वीकार्य को स्वीकार कर लेते हैं। दिल्ली जैसे शहरों में भी थके-हारे माता-पिता जब नामी-गिरामी निजी स्कूलों द्वारा इनके बच्चों को दिए गए प्रोजेक्ट करने के लिए समय नहीं निकल पाते हैं, तब बना-बनाया प्रोजेक्ट कहाँ से खरीदना है, इसकी जानकारी सहायक होती है। आश्चर्य तो यह है कि यह जानकारी स्कूलों तथा अध्यापकों से स्वतः ही मिल जाती है। अनेक देशों में खुलेआम ऐसी कंपनिया बाकायदा विज्ञापन देती हैं, कुछ थोड़ा ढका-छुपा ढंग अपनाती हैं। विश्वविद्यालयों के सामने समस्या है, शोध-पत्रों की चोरी रोकना, किसी की थीसिस को चोरी कर अपने लिए 'डॉक्टर' की उपाधि पा लेना। यह सब नकल के नए संस्करण हैं। मुझे यह कहने में कोई हिचक नहीं है कि इस सबमें सहायता हर स्तर से मिलती है। रोकने के अनेक उपाय किए जाते हैं, मगर नकल-चीटिंग और प्लागिअरिज्म रुकते नहीं हैं, बढ़ते ही जा रहे हैं। अनगिनत विद्यार्थियों और युवाओं के जीवन में यह सब जहर घोलता रहा है।

समाधान तो ढूँढ़ना ही पड़ेगा। मेरे विचार से सबसे सशक्त उपाय एक प्रश्न पूछने से उजागर हो जाता है : 1950-60 तक विश्वविद्यालयों में अकादमिक चोरी अपवाद ही नहीं, घोर शर्मनाक अपराध मानी जाती थी। शोध में किसी प्रकार की चोरी शोध निर्देशक की जिम्मेवारी बनती थी। यदि अपराध सही होता था तो ऐसे व्यक्ति का प्राध्यापक बने रहना असंभव था। स्कूलों के विद्यार्थियों को बने-बनाए प्रोजेक्ट बेचने का व्यापार पहले क्यों नहीं होता था? इसका उत्तर हम सभी जानते हैं, मगर जब कोई प्रकरण उभरता है, तो सहानुभूति, संबंधित व्यक्ति का भविष्य जैसे शब्दों का प्रयोग कर स्थिति को दबाने का प्रयास किया जाता है। संस्था और व्यवस्था की साख को इस सबमें भुला दिया जाता है और फिर हम शिक्षा में गुणवत्ता तथा मूल्यों के ह्रास पर बहसें आयोजित करते रहते हैं। शिक्षा यदि व्यक्ति-निर्माण करती है और अपना लक्ष्य व्यक्ति में समाहित पूर्णता को प्रस्फुटित करने को लेकर चलती है, तो उससे जुड़े हर व्यक्ति को, विशेषकर अध्यापक, प्राध्यापक और प्राचार्य को, अपने अंदर झाँकना होगा और अपने से ही प्रश्न पूछकर उत्तर पाना होगा। परीक्षा प्रणाली की पवित्रता को बनाए रखने का सबसे बड़ा उत्तरदायित्व शिक्षकों, प्रशिक्षकों, प्राध्यापकों तथा अध्यापकों को मिल-बैठकर स्थानीय परिस्थितियों को सामने रखकर निकालना होगा।

संपर्क : 9810481415

एक देश-एक राशन कार्ड योजना : भ्रष्टाचार की जड़ें मिटाने की सार्थक पहल

रमेश कुमार दुबे
केंद्रीय सचिवालय सेवा के अधिकारी

एक जनवरी 2020 से केंद्र सरकार ने देश के 12 प्रांतों में एक देश-एक राशन कार्ड योजना शुरू कर दी है। इस योजना को देश भर में लागू करने के लिए पहले 1 जून, 2020 की समय सीमा तय की गई थी, लेकिन अब इसे 15 जनवरी, 2020 से लागू करने की तैयारी है। 30 जून तक सभी राज्यों को इससे जोड़ने का लक्ष्य है। इससे न सिर्फ कोटेदारों की मनमानी रुकेगी, बल्कि उनके भ्रष्टाचार पर भी अंकुश लगेगा।

वस्तु एवं सेवा कर, यानी जीएसटी और वन रैंक वन पेंशन के बाद 'एक देश, एक राशन कार्ड' की परिकल्पना को साकार कर केंद्र सरकार देश की सार्वजनिक वितरण प्रणाली यानी पीडीएस को नया रूप देने के साथ ही एक तरह से देश को आर्थिक रूप से एक सूत्र में पिरोने का काम कर रही है। इस योजना के तहत लाभार्थी एक ही राशन कार्ड से राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत किसी भी उचित दर की दुकान से अपने कोटे का अनाज ले सकेंगे।

एक देश-एक राशन कार्ड योजना को 15 जनवरी से पूरे देश में लागू करने की तैयारी

एक जनवरी 2020 से केंद्र सरकार ने देश के 12 प्रांतों में एक देश-एक राशन कार्ड योजना शुरू कर दी है। इस योजना को देश भर में लागू करने के लिए पहले 1 जून, 2020 की समय सीमा तय की गई थी, लेकिन अब इसे 15 जनवरी, 2020 से लागू करने की तैयारी है। 30 जून तक सभी राज्यों को इससे जोड़ने का लक्ष्य है। इससे न सिर्फ कोटेदारों की मनमानी रुकेगी, बल्कि उनके भ्रष्टाचार पर भी अंकुश लगेगा। इसका सबसे अधिक फायदा एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने वाले गरीबों विशेषकर प्रवासी मजदूरों को मिलेगा।

उचित दर की दुकान भ्रष्टाचार का केंद्र-पीडीएस पर वाधवा समिति की रिपोर्ट

पीडीएस पर गठित वाधवा समिति ने अपनी रिपोर्ट में बताया था कि उचित दर की दुकानें ही भ्रष्टाचार की केंद्र हैं। यहाँ जनता को ठगने के लिए दुकान मालिक, ट्रांसपोर्टर, नौकरशाह और नेताओं में साँठगाँठ है। इसी साँठगाँठ के चलते खाद्यान्न की कालाबाजारी होती है और योजना का लाभ जरूरतमंदों को नहीं मिल पाता। इसी को देखते हुए मोदी सरकार ने 2014 से ही राशन कार्डों का डिजिटलाइजेशन शुरू किया और अब तक यह किया जा चुका है। इतना ही नहीं 90 प्रतिशत राशन कार्ड आधार नंबर से जोड़े जा चुके हैं। इसमें 2.98 करोड़ राशन कार्ड फर्जी पाए गए, जिन्हें रद्द कर दिया गया।

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा कानून के तहत राशन कार्ड का एक मानक प्रारूप किया गया

राष्ट्रीय स्तर पर राशन कार्ड पोर्टेबिलिटी लक्ष्य हासिल करने के लिए यह जरूरी था कि विभिन्न राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों में जारी होने वाले राशन कार्ड एक मानक प्रारूप में हों। इसी को देखते हुए राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा कानून के तहत राशन कार्ड जारी करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर मानक प्रारूप जारी किया गया।

देश की सभी उचित दर की दुकानों को पॉइंट ऑफ सेल डिवाइस से जोड़ दिया जाएगा

जिन प्रांतों में उचित दर की दुकानें शत प्रतिशत ऑनलाइन इलेक्ट्रॉनिक पॉइंट ऑफ सेल डिवाइस से युक्त हो चुकी हैं, वहाँ पीडीएस लाभार्थी अब किसी भी प्रदेश में निवास करते हुए अपने मौजूदा राशन कार्ड से ही अपने हिस्से का अनाज प्राप्त कर रहे हैं। जल्द ही देश की सभी ऐसी दुकानों को पॉइंट ऑफ सेल डिवाइस से जोड़ दिया जाएगा। पीडीएस के लाभार्थी खाद्यान्न से वंचित न रह जाएँ, इसके लिए राशन डीलरों को हाइब्रिड मॉडल की पॉइंट ऑफ सेल मशीनें दी जा रही हैं। ये मशीनें ऑनलाइन मोड के साथ ही ऑफलाइन भी काम करेंगी।

75 फीसद ग्रामीण, 50 फीसद शहरी आबादी को केंद्र सरकार रियायती दर पर खाद्यान्न मुहैया कराती है। गौरतलब है कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013 के तहत 75 फीसद ग्रामीण आबादी और 50 फीसद शहरी आबादी को केंद्र सरकार रियायती दर पर खाद्यान्न मुहैया करा रही है। इसके लिए देश में 23.18 करोड़ राशन कार्ड जारी किए गए हैं। कुल संख्या को देखें तो केंद्र सरकार देश में 81 करोड़ से अधिक लोगों को सस्ते दाम पर खाद्यान्न मुहैया कराती है। इसके लिए 2019-20 में 18,4000 करोड़ रुपए की खाद्यान्न सब्सिडी का अनुमान लगाया गया था।

पीडीएस भ्रष्टाचार का पर्याय बन चुकी

2018-19 की आर्थिक समीक्षा में तेजी से बढ़ती खाद्य सब्सिडी का हल ढूँढ़ने की जरूरत पर बल दिया गया था। इतनी भारी-भरकम धनराशि खर्च करने के बावजूद देश में यदा-कदा भुखमरी की खबरें आती रहती हैं, तो इसका कारण है कि खाद्यान्न का वितरण जिस पीडीएस के माध्यम से होता है, वह भ्रष्टाचार का पर्याय बन चुकी है।

42 फीसद अनाज राशन की दुकानों से निकलकर कालाबाजारी की भेंट चढ़ जाता

पीडीएस में सुधार पर गठित वाधवा समिति ने यह पाया था कि 42 फीसद अनाज राशन की दुकानों से निकल कर कालाबाजारी के लिए पहुँच जाता है। पूर्वोत्तर प्रांतों में तो 97 फीसद अनाज बाजार में पहुँच जाता है। इसके बावजूद तमिलनाडु, केरल, आंध्र, छत्तीसगढ़ और ओडिशा में पीडीएस अच्छी तरह चल रही है। पीडीएस सुधार के लिए छत्तीसगढ़ में पीडीएस की सफलता रोल मॉडल बन सकती है।

छत्तीसगढ़ में पीडीएस की दुकानों में स्थानीय लोगों की भागीदारी से समय से राशन मिलने लगा

2004 तक छत्तीसगढ़ में पीडीएस की कहानी उत्तर भारत के किसी भी राज्य से अलग नहीं थी, लेकिन राज्य सरकार द्वारा तीन स्तरों पर किए गए उपायों ने तस्वीर ही बदल दी। सबसे पहले सरकार ने अति गरीबों और आदिवासियों को घर के नजदीक अनाज मुहैया कराने के लिए उचित दर की दुकानों के लाइसेंस निजी व्यापारियों के बजाय स्थानीय समुदाय को सौंप दिए। इसका लाभ यह हुआ कि स्थानीय लोगों की भागीदारी से दुकानें पूरे दिन खुलने लगीं और गाँव वाले अपनी सुविधानुसार राशन लेने लगे।

छत्तीसगढ़ में हर ग्राम पंचायत में एक दुकान खोली गई, जिससे लंबी कतार लगनी बंद हो गई

दूसरा सुधार राशन की दुकानों की संख्या बढ़ाकर किया गया। हर ग्राम पंचायत में कम-से-कम एक दुकान खोली गई। इससे राशन लेने की लंबी कतारों में कमी आई और कम समय में ही राशन मिलने लगा।

ट्रकों से पूरी सामग्री सीधे दुकानों तक पहुँचती है, दुकानदारों का कमीशन भी बढ़ा गया

तीसरा सुधार दुकानों तक अनाज पहुँचाने में किया गया। इसके तहत हर महीने की छह तारीख तक पीले रंग के विशेष ट्रकों में पूरी सामग्री सीधे दुकानों तक पहुँचाई जाने लगी। सरकार ने दुकानदारों का कमीशन भी बढ़ा दिया, जिससे उनका घाटा कम हुआ और उन्होंने अनाज को बाजार में बेचना कम किया।

सरकार ने पुराने राशन कार्डों को खत्म कर नए प्रकार के कार्ड जारी किए

फर्जी राशन कार्डों से छुटकारा पाने के लिए सरकार ने पुराने राशन कार्डों को खत्म कर नए प्रकार के कार्ड जारी किए। इन कदमों से पीडीएस की लागत भले बढ़ी, लेकिन अनाज की कालाबाजारी रुकी और गरीबों के मुँह में निवाला पहुँचने लगा।

'एक देश-एक राशन कार्ड' योजना भी भ्रष्टाचार मिटाने में सहायक होगी

सरकार भ्रष्टाचार की जड़ पर हमला करने के लिए प्रत्येक स्तर पर तकनीक रूपी चौकीदार बैठा रही है। पिछले पाँच वर्षों में सरकार राशन कार्ड, रसोई गैस, छात्रवृत्ति और वृद्धावस्था पेंशन जैसी योजनाओं से जुड़े छह करोड़ से अधिक फर्जी लाभार्थियों की पहचान कर उन्हें योजना से बाहर कर चुकी है। इससे सरकारी खजाने में 90,000 करोड़ रुपये की बचत हो रही है। एक देश-एक राशन कार्ड योजना भी भ्रष्टाचार मिटाने और वास्तविक लाभार्थियों तक खाद्यान्न पहुँचाने में मील का पत्थर साबित होगी। ©पाँ.स्तं.

पीडीएस पर गठित वाधवा समिति ने अपनी रिपोर्ट में बताया था कि उचित दर की दुकानें ही भ्रष्टाचार की केंद्र हैं। यहाँ जनता को ठगने के लिए दुकान मालिक, ट्रांसपोर्टर, नौकरशाह और नेताओं में साँठगाँठ है। इसी साँठगाँठ के चलते खाद्यान्न की कालाबाजारी होती है और योजना का लाभ जरूरतमंदों को नहीं मिल पाता। इसी को देखते हुए मोदी सरकार ने 2014 से ही राशन कार्डों का डिजिटलाइजेशन शुरू किया और अब तक यह किया जा चुका है। इतना ही नहीं 90 प्रतिशत राशन कार्ड आधार नंबर से जोड़े जा चुके हैं। इसमें 2.98 करोड़ राशन कार्ड फर्जी पाए गए, जिन्हें रद्द कर दिया गया।

सरस्वती पुनरुद्धार : पर्यटन-विकास उपक्रम

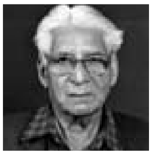

प्रो. मोहन मैत्रेय
वरिष्ठ लेखक एवं चिंतक

यह प्रयास पुनरुद्धार होगा। वामन पुराण में भगवान् शिव द्वारा सरस्वती के उद्धार अथवा पूर्व रूप प्रदान करने का उल्लेख है। पिटोवा (पृथूदक) में प्राची तीर्थ सरस्वती नदी के पूर्व में प्रवाहित होने के कारण प्रख्यात था। वसिष्ठ तथा मुनि विश्वामित्र में वैमनस्य था। कारण वसिष्ठ ऋषि विश्वामित्र को ब्रह्मर्षि न कहकर राजर्षि कहते थे।

देवनदी सरस्वती हरियाणा क्षेत्र की जीवन-धारा रही है। इस क्षेत्र का नामकरण यहाँ की हरियाली पर आधारित है और यह हरियाली सरस्वती नदी की ही देन थी। सरस्वती विषयक भ्रम फैलाया गया कि यह एक 'मिथक' है। प्राचीन ग्रंथों में सरस्वती की चर्चा सतत प्रवाहशील नदी के रूप में हुई है। विश्वभर का इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि नदियाँ निरंतर अपना मार्ग बदलती हैं, सूखती हैं और लुप्त हो जाती हैं। ये परिवर्तन प्राकृतिक घटनाक्रम, जलवायु परिवर्तन, भूकंप, विवर्तनिक गतिविधि के कारण होते हैं। सरस्वती के लुप्त होने में इन्हीं कारणों की भूमिका होगी। पी.सी. बाकलीवाल तथा ए.के. ग्रोवर के अनुसार सरस्वती का स्थानांतरण सात चरणों में ईसा पूर्व तीन हजार वर्ष से प्रारंभ होकर हुआ। भू-वैज्ञानिक प्रमाणों, साहित्यिक उल्लेखों, उपग्रह चित्रों, इकोलॉजिक मॉडल के आधार पर सरस्वती का अस्तित्व प्रमाणित हो चुका है। इसके उद्धार की योजनाएँ भी बनीं। कुछ गोष्ठियाँ हुईं, बोर्ड संगठित हुआ, परंतु ये वेतनभोगी को अभी तक योजना क्रियात्मक रूप नहीं दे पाए।

यह प्रयास पुनरुद्धार होगा। वामन पुराण में भगवान् शिव द्वारा सरस्वती के उद्धार अथवा पूर्व रूप प्रदान करने का उल्लेख है। पिटोवा (पृथूदक) में प्राची तीर्थ सरस्वती नदी के पूर्व में प्रवाहित होने के कारण प्रख्यात था। वसिष्ठ तथा मुनि विश्वामित्र में वैमनस्य था। कारण वसिष्ठ ऋषि विश्वामित्र को ब्रह्मर्षि न कहकर राजर्षि कहते थे। एक दिन कुद्ध विश्वामित्र ने सरस्वती को तपस्यालीन वशिष्ठ को उनके पास लाने का आदेश दिया। भयभीत सरस्वती ने आदेश का पालन तो किया, परंतु ब्रह्म-हत्या के दोष से आतंकित वह ऋषि वसिष्ठ को विपरीत दिशा में ले गई। क्रुद्ध विश्वामित्र ने सरस्वती को शापित किया कि अब तुम में जल के स्थान पर रक्त प्रवाहित होगा। सरस्वती की करुण प्रार्थना पर भगवान् शिव ने सरस्वती का उद्धार किया और इसका रूप पूर्ववत् हो गया।

पर्यटन विश्व की वर्तमान कालीन अवधारणा है और कुछ लोगों का चिंतन है कि इसका बीज भारतीय संस्कृति के अंतर्गत होने वाली धार्मिक यात्राओं में निहित था। पर्यटन तो आज विश्व का फलता-फूलता उद्योग है, जबकि भारतीय तथाकथित यात्राओं के मूल में धार्मिक प्रवृत्ति था, पर्यटन के कई रूप हैं, परंतु हरियाणा में तो धार्मिक-सांस्कृतिक तथा मेडिकल पर्यटन ही सफल हो सकता है। विदेश से लोग आयुर्वेद पद्धति से रोग-निदान हेतु भारत का रुख करते हैं। आज अधिकांश विदेशी इस लक्ष्य से केरल प्रदेश को जाते हैं। हरियाणा की शिवालिक तथा

अरावली पर्वत शृंखला में आयुर्वेदीय जड़ी-बूटियों एवं पादपों की खेती हो सकती है। यहाँ तथा वर्तमान पंजाब में किसी समय आयुर्वेद की महती भूमिका थी। सरस्वती का पुनरुद्धार पर्यटन को भी नई दिशा दे सकता है।

प्रवहमान सरस्वती के समय इसके तट पर अनेक तीर्थ स्थित थे। कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण के समय समूचे भारत के साथ-साथ विदेशी भी बहुत बड़ी संख्या में यहाँ पधारते हैं। किसी समय क्षेत्र ब्रह्मावर्त के नाम से प्रख्यात था। इसमें ब्रह्मसरोवर, ज्योतिसर, सन्नितम सरोवर, स्थाणुतीर्थ, भद्रकाली शक्तिपीठ, गौड़िया मठ आदि कई तीर्थ एवं धार्मिक स्थल हैं। कुरुक्षेत्र की तीर्थ में रूप में प्रख्याति है, तो पृथूदक (पिटोवा) की निजी महिमा है। यहाँ के प्राची तीर्थ, पापांतक तीर्थ, अनरक तीर्थ अत्यंत फलदायक माने जाते हैं। सरस्वती के पुनरुद्धार के साथ इन तीर्थों का युगीन सुविधाओं के साथ विकास पर्यटन को बढ़ावा दे सकता है।

बौद्ध धर्म का उदय वैदिक धर्म के यज्ञों में पशु-बलि आदि विकृतियों के कारण हुआ था। सरस्वती के तट पर ऐसे अनेक आयोजन होते थे। इसी कारण बौद्ध धर्म का श्रीगणेश इसी क्षेत्र से हुआ। ऐसा उल्लेख है कि महात्मा बुद्ध यहाँ पधारे थे। क्षेत्र में अनेक स्तंभ एवं स्तूप चर्चित हैं।

यमुनानगर मुख्यालय के पूर्व में अमादलपुर रोड पर प्राचीन गाँव सुघ है। किसी समय पेशावर से पाटलिपुत्र तक के व्यावसायिक मार्ग के मध्य स्थित सुघ एक सुंदरनगर था। यहाँ देश के अन्य विश्व प्रख्यात शिक्षा केंद्रों तक्षशिला तथा नालंदा जैसा एक प्रसिद्ध शिक्षा केंद्र था। पाणिनि ने अपने ग्रंथ 'कनिष्का' में इसकी चर्चा की है। यहाँ के विद्यार्थियों को 'सुघने' की संज्ञा प्राप्त थी। पुरातत्त्वविद् जनरल कनिंघम ने किसी समय यमुनानगर आकर इस ऐतिहासिक स्थल की पहचान करवाई थी। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी इस स्थल तथा आस-पास फैली बौद्ध विरासत की चर्चा की थी।

आदिबद्री सरस्वती का उद्गम स्थल है। यह ऋषि-मुनियों की तपस्या का केंद्र था। यहाँ पर बौद्ध धर्म से संबंधित अनेक अवशेष हैं। किसी समय एक वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में अनेक बौद्ध विहार एवं स्तूप थे। विहारों में एक हजार से तीन हजार तक बौद्ध भिक्षु रहते थे। काठगढ़ गाँव के समीप 'आदि बद्रीनारायण' का ऐतिहासिक मंदिर है। अमादलपुर का सूर्य मंदिर कोणार्क (उड़ीसा) जैसा प्रख्यात है। मंदिर की यह विशेषता है कि उदयकालीन सूर्यदेव की पहली किरण मंदिर के मध्य भाग में पहुँचती है। मत्स्य पुराण में पाप-मोचकर (कपाल मोचन) की चर्चा है। क्षेत्र का यथोचित विकास पर्यटन को नव आयाम दे सकता है। रावीगढ़ (हिसार) सिंधु घाटी सभ्यता से भी पुरातन सभ्यता का इतिहास प्रस्तुत करता है। पुरातत्त्व में दिलचस्पी रखने वालों के लिए यह आकर्षण का केंद्र होगा। धार्मिक-सांस्कृतिक तथा मेडिकल पर्यटन प्रदेश की आर्थिक स्थिति की वृद्धि में भी सहायक हो सकता है।

संपर्क : फ्लैट नं. 107, जी.एच. 06, सेक्टर–24,
पंचकूला (हरियाणा), मो. 9646807159

सम्मान

श्रीभगवान सिंह को मिला 'गांधी साहित्य सम्मान'

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के वार्षिक समारोह में वर्ष 2018 का 'भारत-भारती सम्मान' पटना की साहित्यकार-लेखिका डॉक्टर ऊषा किरण खान सहित अनेक साहित्यकारों-लेखको को सम्मानित किया गया।

पटियाला के डॉ. मनमोहन सहगल को 'लोहिया साहित्य सम्मान', वाराणसी के डॉ. बदरीनाथ कपूर को 'हिंदी गौरव सम्मान', भागलपुर के श्रीभगवान सिंह को 'महात्मा गांधी साहित्य सम्मान', दिल्ली की डॉ. कमल कुमार को अवंती बाई साहित्य सम्मान और लखनऊ के डॉ. ओमप्रकाश पांडेय को पं. दीनदयाल उपाध्याय साहित्य सम्मान, पत्रिका कला वसुधा को सरस्वती सम्मान तथा इंफाल के मणिपुर हिंदी परिषद् को राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन और लखनऊ के प्रो. रमेश चंद्र दीक्षित को पत्रकारिता भूषण सम्मान से सम्मानित किया। इस दौरान योगी ने कहा कि बहुत से ऐसे लोग हैं, जो साहित्य को क्षेत्रीयता, जातीयता एवं अलग-अलग खेमों में बाँटने का प्रयास करते हैं। इससे युवाओं के सामने भ्रम की स्थिति उत्पन्न होती है। ऐसे में हमारे साहित्यकारों की जिम्मेदारी बनती है कि वे ऐसी स्थिति समाज में बनने न दें। उन्होंने साहित्यकारों से अपील की कि अपने चिंतन-मनन और साहित्य साधना से आदर्श स्थापित करें और नई दिशा दें।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने 'पं. दीनदयाल उपाध्याय साहित्य सम्मान' से सम्मानित डॉ. ओम प्रकाश पांडेय द्वारा उचित पुस्तक 'सांस्कृतिक विचार की अविराम भारतीय यात्रा' का विमोचन भी किया। कार्यक्रम में हिंदी गौरव सम्मान से सम्मानित डॉ. बदरीनाथ कपूर अस्वस्थ होने के कारण पुरस्कार प्राप्त करने नहीं आ सके। समारोह को विधानसभा अध्यक्ष हृदयनारायण दीक्षित, जलशक्ति मंत्री डॉ. महेन्द्र सिंह, हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. सदानंद प्रसाद गुप्त तथा निदेशक श्रीकांत मिश्र आदि ने भी संबोधित किया।

विदा हो रही बिटिया के नाम पाती

मृदुला सिन्हा

शिलारोहण पर तुम्हारे भाई ने तुम्हें पत्थर पर पैर रखने में सहयोग किया है। शिला पर आरूढ़ होने का तात्पर्य है कि बहू के रूप में अपना कार्यभार सँभालते हुए तुम बड़े-से-बड़े संकटों में घबराओगी नहीं और इस कार्य में भाई की सहायता का तात्पर्य है कि वह तुम्हें ससुराल भेजकर भी कठिन समय में तुम्हारी सहायता करता रहेगा।

प्रिय बेटी,
अचल रहे अहिवात तुम्हारा।

विवाह-संस्कार समाप्त होते ही तुम्हारा रिश्ता दो परिवारों से जुड़ गया। अब दो कुलों के बीच सेतु बनकार तुम्हें दोनों का हित साधना है। इसलिए तुम्हें 'दुहिता' कहा जाएगा। हिंदू रीति से संपन्न तुम्हारे और वर के विवाह संस्कार के एक-एक विधान के बड़े गूढ़ अर्थ हैं। सारे अनुष्ठान वैवाहिक जीवन के गहरे अर्थ को प्रकट करते हैं। सोलह संस्कारों में विवाह-संस्कार सर्वश्रेष्ठ है, जो प्रकृति और पुरुष के आध्यात्मिक रूप से एकीकरण का आदर्श है। मात्र सांसारिक जीवन के लिए नहीं, इसलिए हमारे यहाँ विवाह जन्म-जन्मांतर का बंधन माना गया है।

तुम्हारे विवाह-संस्कार के तीन भाग थे- कन्यादान, लाजाहोम (लावा छिंटाई) और सप्तपदी। तीनों रस्मों के अपने महत्त्व हैं। तुम इन गूढ़ अर्थों को जीवन भर मनन करती रहना। कन्यादान का संबंध तुम्हारे माता-पिता 'हमसे था।' लाजाहोम का संबंध 'भाई से' और सप्तपदी का संबंध 'तुमसे' था। ऐसा लगा, जैसे हम लोग (तुम्हारे पापा और मैं) तुम्हारे विवाह के प्रस्तावक, भाई-बंधु अनुमोदक और स्वयं तुम सप्तपदी द्वारा इस संस्कार की समर्थक रही हो। तुम्हारे और वर के परिवार पक्ष के लोग साक्षी रहे हैं।

वेद, मंत्र का उच्चारण करती हुई, हमारे कुल से पृथक् होकर सदा के लिए पति-कुल में बैठ, पुत्रवधू के रूप में, उस कुल से कभी भी अलग न होने की तुमने प्रभु से प्रार्थना की है। विवाह का अर्थ होता है- ''विधिपूर्वक एक-दूसरे को प्राप्त कर परस्पर दायित्व का निभाना।'' परंतु इस संस्कार में भी प्रमुख भूमिका तुम्हारी ही रही है, इसलिए इसे निभाने का भी दायित्व तुम्हारे कंधों पर विशेष रूप से होगा।

तुम्हारे पिता ने देवताओं का आह्वान कर वर की पूजा की। उन्होंने अपनी आत्मा के रूप में दूसरे कुल में तुम्हें समर्पित किया। दूल्हे को नारायण के रूप में ही विवाह-मंडप में बैठाया। बड़ी विनम्रता से उन्होंने कहा, ''हे नारायण! आप स्वयं मेरे घर पधारे हैं। लक्ष्मी का रूप मेरी पुत्री आपकी अमानत है। इसे आपके पवित्र हाथों में समर्पित करता हूँ। इसे आप ग्रहण करें।''

दूल्हे ने पुष्प, अक्षत, फल और वस्त्र को सिर से लगाते हुए तुम्हारे पिता को विश्वास दिलाया है कि वह तुम्हारे रूप में सदा लक्ष्मी का आदर करेंगे। पाणिग्रहण के समय तुम हमारे साथ बैठी थी। दूल्हे ने खड़े होकर और झुककर तुम्हारे हाथ पकड़े। इस प्रकार तुम्हें विशेष सम्मान प्राप्त हुआ है। तुम दोनों ने 'अमोऽहमस्मि' वक्तव्य के द्वारा सार्वजनिक मंच पर घोषणा की है, ''हम यह विवाह ज्ञानपूर्वक अर्थात् सोच-समझकर कर रहे हैं।''

शिलारोहण पर तुम्हारे भाई ने तुम्हें पत्थर पर पैर रखने में सहयोग किया है। शिला पर आरूढ़ होने का तात्पर्य है कि बहू के रूप में अपना कार्यभार सँभालते हुए तुम बड़े-से-बड़े संकटों में घबराओगी नहीं और इस कार्य में भाई की सहायता का तात्पर्य है कि वह तुम्हें ससुराल भेजकर भी कठिन समय में तुम्हारी सहायता करता रहेगा।

भाई के सहयोग से शमी-पत्र तथा खीलों द्वारा लाजाहोम (लावा छिंटाई) की प्रक्रिया पूरी की। शमी-पत्र भयंकर ग्रीष्म में भी हरा ही रहता है। यह संदेश भी गाँठ बाँध लो कि बड़ी-से-बड़ी विपत्ति और धन-धान्य से भरपूर होकर भी इस शमी

वृक्ष की तरह अपने स्वभाव को सम रखना।

ये खीलें (धान का लावा) आकाश में खिले नक्षत्रों के प्रतिनिधि हैं। ये नक्षत्र अँधेरी रात में भी चमकते हैं, चाँदनी में नहीं। मेरी बेटी! ये तुम्हें सिखा गए कि अपने जीवन में संतुलन बनाए रखना। संपत्ति के साथ सहज और विपत्ति के समय धैर्यवान रहना।

सप्तपदी के साथ तुम दोनों ने मिलकर अन्नादि के लिए प्रथम पद, बल प्राप्ति के लिए दूसरा, धन व ज्ञान के लिए तीसरा, सुख प्प्ति के लिए चौथा, संतान के लिए पाँचवाँ, ऋतुओं के अनुकूल आचरण के लिए छठा और मित्रता के लिए सातवाँ पद रखा है।

अंत में तुमने वर से प्रतिज्ञाएँ करवाई हैं, ''तुम्हारी पहली प्रतिज्ञा थी कि बिना किसी विशेष कारण से वह बाहर रात न बिताए। बाहर भोजन भी न करे।'' उसने स्वीकार किया।

तुमने कहा, ''तेरे सुख-दुःख-भाई-बंधु अब मेरे होंगे। मेरा पालनकर्ता बनकर तुम मेरी सब जरूरतें पूरी करना।'' उसने स्वीकार किया है।

तुम्हारी तीसरी प्रतिज्ञा थी कि तुम उसकी शक्ति मिलाकर अपनी शक्ति बढ़ाओगी। उसने मान ली।

चौथी बात तुमने कही, ''मैं तुम्हारे खातिर जीऊँगी। तुम मेरी चिंता करना।'' उसने हामी भर दी।

पाँचवीं प्रतिज्ञा, ''मैं रूठूँ, झगड़ूँ, तब भी तुम शांत रहना। बुरा मत मानना।'' उसने हामी भर दी।

छठी प्रतिज्ञा थी, ''मेरे माता-पिता ने पाल-पोसकर कन्यादान किया है। उन्होंने कुछ दिया, न दिया, तुम कभी ताना मत देना।'' उसने मान ली है।

सातवीं प्रतिज्ञा कि हवन, यज्ञ और सभी धार्मिक कार्यों में तुम्हारी भी भागीदारी रहेगी। पर उसके पापकर्मों की तुम भागीदार नहीं बनोगी। तुमने यह भी प्रतिज्ञा करवाई कि तुम अपना धर्म उसके साथ नहीं बाँटोगी।

परायी स्त्री का संसर्ग कभी न करने की तुम्हारी शर्त भी उसने मान ली है।

तब तुम उसके वाम भाग में बैठी हो। विवाह-संस्कार में भी तुम्हारी भूमिका प्रमुख रही है। बिना तेरे वर की जोड़ी नहीं बन सकती थी। अब उसका भी परिवार बना है। मेरे आँगन का सौभाग्य है कि समाज में नया दाम्पत्य का पुष्प उसमें ही खिला है। तुमने सिंदूरदान के बाद ध्रुवतारे को देखा है। अपने दाम्पत्य जीवन को ध्रुव के समान अडिग रखने का संकल्प लिया है। इसे सदा याद रखना।

विवाह संबंधी सारे अनुष्ठान मुझे पुलकित करते रहे। मैं तुम्हारे संकल्प में संबल बनी रही। देखते-ही-देखते रात बीत गई, सवेरा हो गया। तुम्हारी विदाई की घड़ी आ गई।

आज तुम हमारे घर से विदा हो रही हो। विदाई का समय ज्यों-ज्यों नजदीक आता जा रहा है, मैं सुध-बुध खोती जा रही हूँ। यह मुझे क्या हो रहा है। ऐसी अनुभूति तो जीवन में कभी नहीं हुई थी। इसी भाव के कारण जगज्जननी सीता की विदाई के समय जनक जैसे विदेह भी विचलित हो गए थे।

पिछले दो वर्षों से तुम्हारे योग्य वर ढूँढ़ने की बहुत जल्दबाजी थी और दो महीने पूर्व ही जब विवाह निश्चित किया, बहुत प्रसन्नता हो रही थी, मानो हमने जीवन में एक बड़ा पड़ाव पार किया हो। तुम्हारे विवाह संस्कार के लिए सारी तैयारियाँ करते हुए भी मन में उत्साह था, उमंग थी। तुम्हें दुलहन बनाने में कोई साज-शृंगार छूट न जाए, ऐसा अरमान था। इसलिए अपनी हैसियत से अधिक खरीदारी करते, बारातियों के स्वागत के लिए साधन जुटाते मन हुलास से भरा था। पर जब बारात दरवाजे आई, बाजे-गाजे की आवाज सुनकर हिया में कुछ धक्का-सा हुआ। बहुत-सा काम सामने पड़ा था। हृदय की आवाज सुनने की फुरसत ही कहाँ थी। एक पल के लिए भी रुक नहीं सकती थी। विवाह के एक-एक विधि-विधान जयमाल, कन्यादान, लाजाहोम, सप्तपदी के साथ धड़कन बढ़ती ही गई। लाजाहोम और सिंदूरदान के समय तो मानो हृदय फट गया। तुम हमारे कुल से अब वर के कुल में जा बैठी। मेरी जिह्वा पर बचपन से सुनीं तिर आई पंक्तियाँ सत्य होकर जड़ हो गई थीं-

''सोनमा जे रहिते बेटी फेनु से गढ़इति सिंदूर फेरल नहीं जाय।''

सिंदूरदान के बाद तुम अपने पति की हो चुकी हो। मुझे मालूम है, तुम उस घर में जाकर थोड़े दिनों के लिए कुम्हला जाओगी। पर अंतर्मन में एक उल्लास होगा, प्रसन्नता होगी। पति का साथ और सम्मान पाकर खिल उठोगी। तुम्हें विदा करते समय दो-चार अनुभव की बातें- चावल, जीरा, हल्दी, सिक्का और दूब के साथ तुम्हारे खोंइछा में डालना चाहती हूँ।

पहली बात कि तुम्हारा विवाह वर से हुआ है। परंतु तुम्हारा संबंध केवल जीवनसाथी से नहीं होगा। वह किसी के बेटे, किसी के भाई और भी अनेक रिश्तों में बँधे हैं। दूल्हे को अपनाते समय उसे पूर्णरूपेण प्राप्त करने का एक आसान तरीका है- तुम्हारा पति अपने रिश्तों को आदर और स्नेह देता रहा है। यदि तुम उन रिश्तों को अपनाते हुए उनके प्रति उससे भी बढ़कर अपनत्व और आदर दिखाओगी, तुम्हें उनके साथ-साथ पति का भी सम्मान मिलेगा।

मेरी प्यारी बेटी! अब तक तुम्हारे लिए सबसे उत्तम पुरुष तुम्हारे पिता और भाई ही थे। पिता के प्रति तुम्हारा यह भाव

पिछले दो वर्षों से तुम्हारे योग्य वर ढूँढ़ने की बहुत जल्दबाजी थी और दो महीने पूर्व ही जब विवाह निश्चित किया, बहुत प्रसन्नता हो रही थी, मानो हमने जीवन में एक बड़ा पड़ाव पार किया हो। तुम्हारे विवाह संस्कार के लिए सारी तैयारियाँ करते हुए भी मन में उत्साह था, उमंग थी। तुम्हें दुलहन बनाने में कोई साज-शृंगार छूट न जाए, ऐसा अरमान था। इसलिए अपनी हैसियत से अधिक खरीदारी करते, बारातियों के स्वागत के लिए साधन जुटाते मन हुलास से भरा था। पर जब बारात दरवाजे आई, बाजे-गाजे की आवाज सुनकर हिया में कुछ धक्का-सा हुआ। बहुत-सा काम सामने पड़ा था। हृदय की आवाज सुनने की फुरसत ही कहाँ थी। एक पल के लिए भी रुक नहीं सकती थी।

उचित ही था। पर यह आवश्यक नहीं कि तुम्हारे ससुरालवालों की नजरों में भी तुम्हारे पिता उतने ही बड़े आसन पर बैठें। अपने पिता के लिए उनके हृदय में सम्मान अर्जित करने में तुम्हारी बहुत बड़ी भूमिका होगी। इसलिए हमारे प्रति अतीव आदर का भाव थोड़े दिनों के लिए छुपाए रखना। बालिकाओं को अपने मायके में सबकुछ अच्छा-अच्छा लगता है, पर ससुराल जाकर दिन-रात मायके का गुणगान व्यावहारिक नहीं होता। ससुराल परिवार के सदस्यों में भी गुण तलाशने की कोशिश करना। तुम्हारे ससुराल में तुम्हारी यह प्रारंभिक अवस्था होगी। तुम्हारी स्थिति अभी एक क्यारी से उखाड़कर दूसरी क्यारी में रोपी गई धान की पौध के समान होगी। मिट्टी, हवा, पानी सब भिन्न। मुझे विश्वास है कि थोड़े ही दिनों बाद वह घर ही तुम्हारा अपना घर हो जाएगा। कई बार मेरे बुलाए भी नहीं आओगी। अपने घर की समस्याएँ जो अपनी होंगी। परंतु यह समय आने में थोड़ा समय लगेगा। मनुष्य जीवन में शैशवावस्था का ही महत्त्व होता है। इसी अवस्था में संस्कार के बीज डाले जाते हैं। इसी अवस्था में गुणों को बढ़ने दिया जाता है। लड़की के जीवन में यह शैशव दुबारा आता है, जब वह ससुराल जाती है। मैं अपने मन को कठोर बना रही हूँ। बात-बात में तुम्हारे ससुराल के बारे में नहीं पूँछूँगी। दूध में जामन डालकर बार-बार दूध को हिलाती रही तो फिर दही कैसे जमेगा? एक क्यारी से उखाड़ दूसरी क्यारी की गीली मिट्टी में पौध लगाकर बार-बार नहीं हिलाऊँगी। पानी डालती रहूँगी। ससुराल में तुम्हारी जड़ जमने दूँगी।

तुम्हें अपने घर तो रखना ही नहीं था। तुम दूसरे घर को ही अपना बना लो। मेरा भी सहयोग होगा। मुझे इसी में आनंद आएगा।

सौभाग्यवती तुम्हारी सास ने बड़े अरमान से बेटे को पाला है। उस पर अपना सुख न्योछावर किया है। उनके द्वारा पाला बेटा अब तुम्हारा होगा। उसके मन को हल्की सी भी ठेस न पहुँचे। वे आसानी से अपने मन-मंदिर में तुम्हारा चेहरा भी अपने बेटे के साथ बैठा लें, ऐसी कोशिश तुम्हें ही करनी होगी। उसके लिए विशेष प्रयास की आवश्यकता नहीं होती। सहज रहना ही यथेष्ट होगा। मुझे तुम पर पूरा भरोसा है। तुमने अपनी पढ़ाई-लिखाई के साथ-साथ घर में दादी, नानी, चाची, मौसा-मौसी, मामा-मामी और मुझे सहयोग कर संबल दिया। अपने से छोटे को स्नेह दिया। मैं तुम्हारे गुणों को देखकर समझ रही थी कि तुम ससुराल में इन्हीं गुणों के कारण अपना उचित स्थान बना लोगी।

बेटी! तुम्हारे ससुराल से कोई शिकायत नहीं आनी चाहिए। पति की छोटी-मोटी भूलों की उपेक्षा करती जाना। छोटी अवस्था से ही स्त्री के अंदर इतना धैर्य और सहनशक्ति होती है कि वह सबके मनोभाव समझती हुई उसके साथ निभाने का प्रयास करती है। अब वही तुम्हारा घर, तुम उसकी धुरी होगी।

यह सीख तुम्हें किसी की अवहेलना, यातना और उपेक्षा बर्दाश्त करते रहने के लिए नहीं है। सुमधुर वाणी, सेवा और सद्भाव से किसी को भी जीता जा सकता है। गृहस्थाश्रम पर ही तीनों आश्रम निर्भर हैं और इस आश्रम की धुरी होती है स्त्री। कितना बड़ा दायित्व है हमारे ऊपर। जितना बड़ा दायित्व, उतना ही बृहत् सम्मान। इस सम्मान को अर्जित करने के लिए अपने कर्तव्य की लागत लगानी पड़ती है। कर्तव्य का आनंद ही अलग है। और इस आनंद का स्वाद तब और भी बढ़ जाता है, जब परिवार के एक-एक सदस्य के द्वारा अधिकार प्रदान किया जाता है।

तुम्हारे और पति के बीच में 'कौन बड़ा, कौन छोटा' का सवाल नहीं आना चाहिए। शिव-पार्वती के अर्धनारीश्वर रूप को स्मरण रखना।

मेरे हृदय का टुकड़ा! तुम्हारे घर की सेवक-सेविकाएँ तुम्हारी बाट जोह रही हैं। तुम्हें पाकर धन्य-धन्य होंगी। उन्हें भी तुमसे सम्मान की अपेक्षा रहेगी। उन्हें यथोचित भाव व व्यवहार देना।

तुम्हें विदा करते हुए तुम्हारे नाजुक कंधों पर कितनी बड़ी जिम्मेदारी डाल रही हूँ। कल तक हमारी आँखों में पलती जलधार जैसी छलकती बेटी, विस्तार लेकर कैसे सारे परिवार को अपने अंक में समा पाएगी। हमें विश्वास है बेटी, तुम अपने नए घर में रच-बस जाओगी, वहीं तुम्हारा व्यक्तित्व विस्तार लेगा।

अब तक तुम यहाँ बेटी थी, प्यार की हकदार। अब वहाँ सम्राज्ञी बनोगी। अधिकार मिलेगा।

सास-ससुर, देवर, जेठ, ननद, जेठानी और सेवक-सेविकाओं के मन पर राज करती हमारी बिटिया को हमारी सुध रहेगी तो कैसे?

समस्त देवी देवताओं और संपूर्ण समाज से आँचल फैलाकर तुम्हारे लिए सुहाग माँगा है। तुम्हारे आँचल में अपनी अंजलि भर-भर सुहाग भरती तुम्हें आशीष का खोंइछा देती हूँ। जीरे के थोड़े से दाने अपने पास रख लेती हूँ। स्त्री जीवन दूब के जीवन जैसा होता है। उखाड़कर फेंक दी गई सूखी दूब मिट्टी का संसर्ग पाकर कहीं भी लहलहा जाती है। लहलहाती रहना मेरी बेटी। पति की जीवन-संगिनी बनकर मानव जीवन को सार्थक करने का प्रयास करती रहना।

मेरी लाडली! आओ, तुम्हें डोली में बैठा दूँ। रिक्त हृदय और सजल नयनों से तुम्हें विदा करती हूँ। देखो, सबकी आँखें सजल हो आई हैं। हमारी आँखों से बहती ये जलधाराएँ तुम्हारे नए जीवन, नई भूमिका और नए दायित्व का सिंचन करती रहेंगी।

तुम्हारी माँ

मेरी प्यारी बेटी! अब तक तुम्हारे लिए सबसे उत्तम पुरुष तुम्हारे पिता और भाई ही थे। पिता के प्रति तुम्हारा यह भाव उचित ही था। पर यह आवश्यक नहीं कि तुम्हारे ससुरालवालों की नजरों में भी तुम्हारे पिता उतने ही बड़े आसन पर बैठें। अपने पिता के लिए उनके हृदय में सम्मान अर्जित करने में तुम्हारी बहुत बड़ी भूमिका होगी। इसलिए हमारे प्रति अतीव आदर का भाव थोड़े दिनों के लिए छुपाए रखना। बालिकाओं को अपने मायके में सबकुछ अच्छा-अच्छा लगता है, पर ससुराल जाकर दिन-रात मायके का गुणगान व्यावहारिक नहीं होता।

एक पत्र होने वाली बहू के नाम

मृदुला सिन्हा

एक ने कहा, ''सुना नहीं तुमने, आटे की सास भी बुरी होती है।'' उन्हें क्या जवाब देती? सुना, पढ़ा और देखा तो यही है। सास बला है, जो टाले न टले। तभी तो आजकल लड़कियाँ शादी के नाम से ही खौफ खाने लगी हैं। सोचने लगी हूँ, सास-बहू का रिश्ता दुनिया भर में बदनाम क्यों है? करोड़ों सास और बहुएँ आपसी रिश्ते को माँ-बेटी के रिश्ते में परिणत कर संसार छोड़ गईं और आने वाली सास बहुएँ भी उनकी लीक पर चलेंगी।

क्या संबोधन करूँ?

अभी बहू बनाया नहीं। बेटी तो कह सकती हूँ। चलो, पहले बेटी से ही अपने दिल का हाल बयाँ करती हूँ। जबसे बेटा ब्याहने लायक हुआ, मन में एक उमंग की लहर उठने लगी है। लेकिन यह क्या? उस उमंग की पहचान की पहल में हाथ लगा एक नन्हा सा भय, जो उस आनंद के साथ जन्म लेकर संग-संग चलने लगा है। सास बनने का भय। सोचा, सास के रूप में पहले अपनी पहचान तो कर लूँ। सच कहती हूँ, अपने को सास के रूप में स्वीकार करने की कोशिश में कई रातों की नींद गँवाकर हिम्मत बटोरी है। अपने सगे-संबंधियों और मित्रों की मानी होती, तो वह नन्हा सा भय मेरे अंदर विस्तार लेकर इतना भयानक हो जाता कि मैं सास बनने की कभी हिम्मत ही नहीं जुटा पाती। इन दिनों जो मिलता है, पूछता है, ''सास बनने जा रही हो?'' उनके प्रश्न ऐसे भाव में लिपटे होते कि शायद सास बनना एक गुनाह है या मैं कोई खतरा मोल लेने जा रही हूँ।

एक ने कहा, ''सुना नहीं तुमने, आटे की सास भी बुरी होती है।'' उन्हें क्या जवाब देती? सुना, पढ़ा और देखा तो यही है। सास बला है, जो टाले न टले। तभी तो आजकल लड़कियाँ शादी के नाम से ही खौफ खाने लगी हैं। सोचने लगी हूँ, सास-बहू का रिश्ता दुनिया भर में बदनाम क्यों है? करोड़ों सास और बहुएँ आपसी रिश्ते को माँ-बेटी के रिश्ते में परिणत कर संसार छोड़ गईं और आने वाली सास बहुएँ भी उनकी लीक पर चलेंगी। जाहिर है कि मैं और तुम कोई नया रिश्ता नहीं बनाने जा रहे हैं। फिर भी मेरा और तुम्हारा रिश्ता बिल्कुल नया होगा। मैं जब तक बेटी, बहू, पत्नी, माँ के साथ अनेक रिश्तों को जी चुकी हूँ, परंतु तुम्हारे शुभागमन से बननेवाला रिश्ता तो बिल्कुल नया होगा। मुझे सास का दर्जा प्रदान करनेवाला रिश्ता। और तुम, तुम्हारे साथ भी कुछ ऐसा ही होगा। तुम तो एक साथ पत्नी, बहू, भाभी और छोटी मालकिन भी बनोगी। मैं सास बनने जा रही हूँ। समाज मुझे अब उस पद से भी जानेगा, जिसके चारों ओर शंकाओं के बाणों की वर्षा होती है।

सास बनने की तैयारी में आज अपनी सास की आकृति, उनके स्नेहिल व्यवहार आँखों के आगे नाच जाते हैं। अपने प्रथम पुत्र को पच्चीस वर्षों तक पाल-पोसकर उन्होंने भी तो बड़ा किया था और मुझे सौंपकर निश्चिंत तो नहीं, पर आश्वस्त अवश्य हुई थीं। मैंने उनके साथ जीवन के पच्चीस वसंत और पतझड़ बिताए। कहीं किसी मोड़ पर उन्हें एहसास नहीं हुआ कि मैंने उनसे उनका बेटा छीन लिया हो,

और न मुझे कि बेटे पर माँ का आधिपत्य जारी रहा।

मेरे बेटे पर केवल और केवल मेरा अधिकार नहीं है। मैंने जन्म दिया, पर उसके पालन-पोषण में शायद मुझसे भी बढ़कर ममता उड़ेली उसकी दादी, और भी न जाने कितने सगे-संबंधी, नौकर-चाकरों ने। लोग कहते हैं कि ममता मोल नहीं माँगती। कौन कहता है, ममता मोल नहीं माँगती? संतान की सेवा निस्स्वार्थ सेवा होती है? बच्चों के पालन-पोषण के क्रम में हमारे अंदर एक अनदेखा स्वार्थ, अनचाही चाहत की बेल बढ़ती फलती-फूलती जाती है। बेटे को पाल-पोसकर बड़ा कर लेने पर बार-बार यह कहना, ''मैंने पाल-पोस दिया, मुझे अब क्या मतलब? अब बहू का हो जाएगा। मुझे पूछे-न-पूछे, क्या फर्क पड़ता है?'' ये उक्तियाँ अपने को बरगलाने भर के लिए ठीक हैं। सच तो यह है कि बेटे पर परोक्ष या अपरोक्ष अपना पूर्ण अधिकार जताए रहने के कारण ही सास और बहू के बीच खींचा-तानी चलती रहती है। स्वाभाविक है, जिसे पालने में अपनी सुख-सुविधा, खान-पान, नींद सब भूल जाती रही, उससे शादी के उपरांत कैसे विलग हो जाए। माँ बनने के बाद स्त्री का अपना तो कुछ बचता ही नहीं।

अब तक बेटे को दाँत में लगाकर ही रखा है, जिसे पूर्ण रूप से तुम्हें सौंपनेवाली हूँ। माँ अपने बेटे को बहू के हाथ सौंपकर निश्चिंत हो जाती तो कितना अच्छा होता। उससे भी बढ़कर बेटे की सुख-सुविधा का खयाल करती बहू के बीच प्रतिद्वंद्विता का सवाल और किसी से छीनकर किसी के पा लेने का सवाल। माँ माँ है। पत्नी पत्नी। अपनी माँ के आँगन में खेलती, खाती, स्वच्छंद नाचती, गाती बेटी को पत्नी, बहू, भाभी, और छोटी मालकिन बनाने में मेरा भी वर्षों का समय लगेगा। तुझे सजाने, सँभालने, तुझ पर न्योछावर होने के अरमानों के बीच तुझमें अपने घर के संस्कार पिरोने का कर्तव्य-बोध भी हो रहा है। हर परिवार का अपना इतिहास होता है और अपना भूगोल। उस परिवार की होने वाली सम्राज्ञी को परिवार के इतिहास से अवगत होना होता है और भौगोलिक जलवायु में अभियोजन के योग्य अपना तन-मन और हृदय बनाना होता है। इस प्रकार ससुराल में आकर भी सीखने और समझने की लंबी प्रक्रिया होती है। अकसर मायके में लड़कियों का व्यवहार कर्तव्य प्रधान हो सकता है। थोड़ा समय और श्रम लगाकर माता, पिता, भाई, बहन की सेवा में अधिक प्रशंसा और आनंद मिलता है। परंतु ससुराल में आते ही उसके स्वयं का व्यवहार अधिकारोन्मुख हो उठता है। साथ ही ससुराल वालों की अपेक्षा भी अधिक होती है।

तुम और मैं, दोनों स्त्री हैं। प्रकृति और संस्कृति ने समाज निर्माण के लिए हम पर पुरुष से कहीं ज्यादा दायित्व डाले हैं। कर्तव्य-ही-कर्तव्य करने पड़ते हैं स्त्री को। वे अपने कर्तव्य की लागत लगाकर ही अधिकार अर्जित करती हैं। अनुभव के आँगन में ऐसी स्त्री छवियाँ उभर रही हैं, जो अति कुरूपा थीं या हैं। पर उनके इशारे के बिना उनके घर-संसार का कोई व्यक्ति तो क्या एक पत्ता भी नहीं हिलता और उन्होंने ये अधिकार माँगकर नहीं, अपने समय, स्नेह और श्रम की लागत लगाकर ही तो अर्जित किए हैं।

हिंदू धर्म में विवाह को भी एक महत्त्वपूर्ण संस्कार माना गया है। विवाह के ठीक ढंग से संपन्न होने पर विवाह जनित कर्तव्यों को यथार्थ रूप से समझ लेने पर केवल पति-पत्नी का सुख-सौभाग्य निर्भर नहीं होता। कई पीढ़ियों तक उनकी सन्तान और अंततोगत्वा समूचे समाज का हिताहित उसके साथ जुड़ा होता है। विडंबना यह है कि विवाह को भी लोग मौज-मस्ती और आडंबर से भरा अवसर बनाने में लगते जा रहे हैं। उस संस्कार का वास्तविक महत्त्व उस आडंबर के नीचे दब-सा गया लगता है। लड़के-लड़कियाँ भी शादी के उपरांत मौज-मस्ती की कल्पना करने लगे हैं, जबकि यह एक कर्तव्य-बंधन है।

खैर, कैसा लगेगा मुझे, जब बेटे और मेरे बीच बात करने की माध्यम तुम बन जाओगी? वह मेरी कम, तुम्हारी ज्यादा मानेगा। मेरे दस बार कहने और आज्ञा देने पर भी कभी कोई कार्य करेगा, कभी नहीं करेगा; लेकिन तुम्हारे एक इशारे पर कार्य करने को उतावलापन दिखाएगा। मेरे हृदय पर एक चोट सी लगेगी, लेकिन मैं उस दर्द को छुपा लूँगी। अपना दिन याद कर उसके व्यवहार को सह लूँगी।

आओ हे सम्राज्ञी! मेरे आँगन की यह बगिया कब से तुम्हारे आने का इंतजार कर रही है। हजारों कलियाँ अपनी साँस रोके हुए हैं। तुम्हारे कदम पड़ते ही खिल-खिलकर तुम्हारा स्वागत करेंगी। मेरे और तुम्हारे ससुर के आनंद के कहने ही क्या! हम तो तुम्हारी प्रतीक्षा में खड़े ही हैं, तुम्हारा देवर, उसकी खुशियों का भी पार नहीं। और हमारे सभी रिश्तेदार, हमारा बहुत बड़ा कुनबा प्रतीक्षारत है।

बेटा ब्याहने जा रही एक माँ का पत्र

अब तक बेटे को दाँत में लगा कर ही रखा है, जिसे पूर्ण रूप से तुम्हें सौंपनेवाली हूँ। माँ अपने बेटे को बहू के हाथ सौंपकर निश्चिंत हो जाती तो कितना अच्छा होता। उससे भी बढ़कर बेटे की सुख-सुविधा का खयाल करती बहू के बीच प्रतिद्वंद्विता का सवाल और किसी से छीनकर किसी के पा लेने का सवाल। माँ माँ है। पत्नी पत्नी। अपनी माँ के आँगन में खेलती, खाती, स्वच्छंद नाचती, गाती बेटी को पत्नी, बहू, भाभी, और छोटी मालकिन बनाने में मेरा भी वर्षों का समय लगेगा। तुझे सजाने, सँभालने, तुझ पर न्योछावर होने के अरमानों के बीच तुझमें अपने घर के संस्कार पिरोने का कर्तव्य-बोध भी हो रहा है। हर परिवार का अपना इतिहास होता है और अपना भूगोल।

हिंदू विवाह : समाज को जोड़ने का पवित्र संस्कार

सीता श्रीवास्तव

अब मेरी समझ में आया कि वे गोवा आए थे अपनी शादी हिंदू पद्धति से करवाने के लिए। फिर तो मैंने प्रश्नों की झड़ी लगा दी। गोवा ही क्यों, हिंदू रिवाजों से क्यों, किश्चियन शादियों में क्या बुराई है आदि-आदि।

गोवा से दिल्ली आने के लिए हवाई यात्रा के दौरान एक अनोखे यूरोपियन जोड़े से मुलाकात हुई और बातों-बातों में ही घनिष्टता ऐसे बढ़ी, जैसे कि किसी परिवार के सदस्य से बातें कर रहे हों। मैंने उनसे पूछ ही लिया कि क्या वे गोवा घूमने के लिए आए हैं? तो उनका जवाब था-

''नो, फॉर मैरिज, इंडियन मैरिज''

मैंने फिर पूछा कि क्या किसी मित्र की शादी में आए हैं, तो उनका जवाब था, ''ओह नो, ऑवर मैरिज इन हिंदू सिस्टम।''

मैं फिर भी नहीं समझ पाई और पूछ ही लिया कि ''क्या गोवा का चर्च शादी के लिए विशेष है?'' तो उनका जवाब था, ''नो आंटी, वो अरेंज ऑवर मैरिज इन अर्कोडेन्स विद हिंदू रिचुअल्स।''

अब मेरी समझ में आया कि वे गोवा आए थे अपनी शादी हिंदू पद्धति से करवाने के लिए। फिर तो मैंने प्रश्नों की झड़ी लगा दी। गोवा ही क्यों, हिंदू रिवाजों से क्यों, किश्चियन शादियों में क्या बुराई है आदि-आदि। उन्होंने हिंदू धर्म की शादियों का जो खुलासा किया, तो हिंदू विवाह सुनहरे पन्नों में आ गया। गोवा तो केवल इस लिए चुना कि वहाँ उनके मित्रगण थे तथा हनीमून के लिए भी अच्छी जगह है। परंतु हिंदू धर्म के अनुसार विवाह एक अध्यात्म है तथा यह इतना ही पवित्र है, जितनी की 'गीता'। हिंदू विवाह में कोई अदालत नहीं, कोई विटनेस (गवाह) नहीं, बस छुपे हुए भगवान तथा अपने समाज के सम्मुख विवाह रचा लिया और हमेशा-हमेशा के लिए एक-दूसरे के हो गए।

वह यूरोपियन जोड़ा, जो अपने गतंव्य स्थान के लिए रवाना हो गया। परंतु मैं हिंदू धर्म की अद्वितीय विवाह अध्यात्म जाल में फँस गई और यही सोचती रही कि कैसे बिना एक-दूसरे को समझे अग्नि के सात फेरों में कसमें उठा लेते हैं और मन से सात जन्मों के लिए एक-दूसरे से बँध जाते हैं। अगले जन्म में कौन कहाँ है। इसकी व्याख्या तो किसी भी धर्म में नहीं है, तो हिंदू धर्म में कैसे मान लेते हैं कि हम जन्मों तक साथ रहेंगे? दरअसल कसमें तो मन से खाई जाती हैं और मन तो कहीं-से-कहीं उड़ जाता है, फिर सात जन्मों की क्या बात। उस जोड़े से बातचीत के दौरान मैंने सप्तपदी, असंख्य तारों की छाँव में खाई कसमों की चर्चा की तो मुझे लगा कि उन्हें सबकुछ पता है, शायद गूगल में सर्च कर लिया होगा; परंतु उन्होंने बताया कि शादी करवाने के लिए बनारस से पंडित बुलाया था और पंडित ने ही उन्हें इन सब बातों से अवगत करवाया था। हिंदू रिवाजों की चर्चा पर मैंने पूछा कि इंडिया में मुस्लिम, क्रिश्चियन सभी प्रकार की शादियाँ होती हैं, तो फिर हिंदू धर्म ही क्यों? उनका जवाब था कि

''All marriages except for Hindu are like a contract and contract can always be broken and witness can expire.''

अब मैं सोच में पड़ गई कि हिंदू रिवाजों के अनुसार शादी होने के बावजूद हमने कभी इतना विस्तृत रूप से नहीं सोचा कि हमारे पूर्वजों, ऋषि, मुनियों ने कितना सोच-विचार कर हिंदू विवाह की विधा तैयार की होगी, क्यों शुभ मुहूर्त में तारों की छाँव में तथा सिक्ख धर्म में 'अभिजीत' नक्षत्र में ही सप्तपदी जैसी रस्म का विधान रखा। यह सब मानवता तथा समाज के हित में किया। वैसे तो हर धर्म के अपने नियम होते हैं और उस धर्म को मानने वाले को उसी दायरे में रहना पड़ता है, परंतु क्यों हिंदू धर्म की शादियों में कोई नियम नहीं बल्कि रस्में बनाई गई, बस मन की बात है, मन से मान ली गई तथा समाज ने

मान्यता दे दी। बस एक बार परिणय बंधन में बँध गए तो न केवल दो लोगों का बल्कि दो परिवारों का भी साथ हो गया। इन सब रस्मों की रचना में हमारे ऋषि-मुनियों ने कितनी मेहनत की होगी, कितना समय दिया होगा? क्या उन्हें इस बात का आभास था कि आने वाले समय में परिणय सूत्र बँधते-बँधते ही टूट जाएँगे, परिवार पनपने ही नहीं पाएँगे। युवा वर्ग स्वयं की आजादी ढूँढ़ते-ढूँढ़ते जिम्मेदारियों से बचते-बचते स्वयं ही परिवार पर एक बोझ बन जाएँगे, समाज में दरार पैदा कर देंगे। अवश्य ही इन तथ्यों को सोचकर परिवार, समाज तथा देश को जोड़े रखने के लिए ही इस तरह की पद्धति की रचना की होगी, ताकि हम भारतीय संस्कारी कहलाएँ।

आज के युग में विदेशी तो हमारी सभ्यता से प्रभावित है; परंतु हमारी युवा पीढ़ी विदेशी सभ्यता की चमक-दमक से चकाचौंध है। हमारे युवा पीढ़ी उन संस्कारों को बंधन समझने लगी है, जिसके कारण भारतवर्ष की विश्व में साख है, हजारों वर्ष बीत गए, परंतु कोशिशों के बावजूद कोई दूसरा देश भारत का स्थान नहीं ले पाया। जो देश भारतवर्ष से अलग हो गए हैं, उन्हें अपने अतीत में भारत का अध्यात्म ही मिलता है। तो फिर विवाह जैसे मुख्य संस्कार को एक बंधन क्यों समझना है? हिंदू पद्धति के विवाह के 'सप्तपदी' में दूल्हा-दुलहन एक-दूसरे के प्रति अग्नि को साक्षी मान कर जो कसमें खाते हैं, उसी में पूरे जन्म साथ निभाने का एक-दूसरे से वायदा भी कर लेते हैं। तारों की छाँव में सप्त ऋषि तथा भगवान से आशीर्वाद माँगते हुए हम स्वयं अपने विवाह के लिए एक-दूसरे के साक्षी बन जाते हैं। हिंदू विवाह-संस्कार में विवाह-विच्छेद या तलाक जैसे शब्द है ही नहीं, क्योंकि कसमें तो सात जन्मों की खाई जाती है फिर कैसा तलाक?

पिछले कुछ वर्षों में हिंदू विवाहों में भी काफी बदलाव आ गया है, युवा वर्ग शादी तो बड़ी धूम-धाम से करना चाहते हैं। परंतु एक-दूसरे को परखने के लिए शादी से पहले ही एक-दूसरे के साथ रहना शुरू कर देते हैं और यह समझते हैं कि इस तरह साथ रहने से वे एक-दूसरे को अच्छे से समझ पाएँगे तथा उनका वैवाहिक जीवन सफल रहेगा। ऐसी शादियाँ अकसर असफल ही देखी गई हैं, क्योंकि बिना शादी के एक साथ रहने में यह भाव तो मन में रहता ही होगा कि यदि अच्छा नहीं लगा तो छोड़ देंगे, परंतु हिंदू विवाह में अलग होने की बात तो होती ही नहीं है। दरअसल नवविवाहित जोड़ा तथा दोनों के परिवार शुरू से ही एक-दूसरे के प्रति जिम्मेदारी महसूस करते हैं और कुछ त्याग के साथ एक नया परिवार आगे बढ़ चलता है और फिर उसी परिवार में इतना रच-बस जाते हैं कि अपने परिवार के आगे सबकुछ सार हीन लगता है। इसी भावना से प्रेरित होकर शायद हमारे ऋषि-मुनियों ने विवाह संस्कार में इतनी रस्में जोड़ दीं कि उन सभी के साथ एक-एक कदम बढ़ते हुए एक-दूसरे से जुड़ते जाते हैं।

शादी कैसी भी हो मुख्य बात है नवविवाहित में जिम्मेदारी की भावना और यह एहसास धीरे-धीरे ही पनपता है। परंतु आज का युवा वर्ग आमतौर पर अपनी जिम्मेदारी, मेहनत से दूर भाग रहा है, उनके मन में यह भावना घर कर गई है कि जीवन का मुख्य लक्ष्य अधिक-से-अधिक पैसे कमाना तथा अर्जित धन को केवल स्वयं पर खर्च करना है, ऐसी दूषित मानसिकता कहाँ से आई है? हमारे पूर्वजों ने तो ऐसी शिक्षा नहीं दी तो फिर यह नए संस्कार कहाँ से हमारे जीवन में घर कर रहे हैं, इस तरह के विचार हमें कहाँ ले जाएँगे तथा कैसा परिवार कैसा समाज बनेगा। एक स्वस्थ समाज बनाने के लिए बहुत ही आवश्यक है, स्वस्थ विचार तथा दूरदर्शिता। अब जब विचार ही संकीर्ण हैं, केवल अपने सुख साधन तक सीमित हैं और त्याग की भावना नहीं है तो नवनिर्मित परिवार से कैसा समाज तथा देश बनेगा। इसके लिए उदाहरण की कमी नहीं है। परंतु यह बात तो तय है कि भारतवर्ष, जो अपने विविध रंगों में रँगे अध्यात्म के लिए सर्वोपरि माना जाता है, वह अपनी श्रेष्ठता खो बैठेगा।

इस बदले हुए वातावरण के लिए केवल युवा पीढ़ी ही जिम्मेदार नहीं है। दरअसल वृद्ध होती हुई पीढ़ी ने जिस भावना के साथ अपने बच्चों को पाला-पोसा ही, वह भी काफी हद तक जिम्मेदार है। कड़े शब्दों में कहें तो हमने ही अपने बच्चों को एक ऐसे अहंभाव से भर दिया है कि उनके समान कोई नहीं है और यही भाव उनके जीवन में ताल-मेल बैठाने से दूर खींचता है। आजकल तो ऐसे भी बहुत से परिवार देखे गए हैं, जहाँ माता-पिता स्वयं अपने बच्चों को सिखाते हुए देखे गए हैं कि 'सबको दबाकर रखना' या फिर 'कुछ बात हो तो अपना सामान लेकर वापस आ जाना' आदि-आदि। अब यदि इस सीख के साथ नव-विवाहित अपना परिवार बसाने चलेंगे तो कितनी दूर जा पाएँगे? जन्म-जन्मांतर का साथ निभाना तो स्वप्न माना रह जाएगा। समाज तथा देश भी इन टूटे परिवारों से कैसा बनेगा। अपने पूर्वजों तथा ऋषि-मुनियों द्वारा रचित विवाह पद्धति पर यदि हम थोड़ा-सा समय निकालकर गौर करें तो एक-एक कर सभी रस्में समझ में आ जाएँगी और यह भी समझ जाएँगे कि कितनी दूरदर्शिता के साथ देश तथा समाज को जोड़े रखने के लिए इनकी रचना की गई थी।

संपर्क : मो.: 9818134584

आज के युग में विदेशी तो हमारी सभ्यता से प्रभावित है; परंतु हमारी युवा पीढ़ी विदेशी सभ्यता की चमक-दमक से चकाचौंध है। हमारे युवा पीढ़ी उन संस्कारों को बंधन समझने लगी है, जिसके कारण भारतवर्ष की विश्व में साख है, हजारों वर्ष बीत गए, परंतु कोशिशों के बावजूद कोई दूसरा देश भारत का स्थान नहीं ले पाया। जो देश भारतवर्ष से अलग हो गए हैं, उन्हें अपने अतीत में भारत का अध्यात्म ही मिलता है। तो फिर विवाह जैसे मुख्य संस्कार को एक बंधन क्यों समझना है? हिंदू पद्धति के विवाह के 'सप्तपदी' में दूल्हा-दुलहन एक-दूसरे के प्रति अग्नि को साक्षी मान कर जो कसमें खाते हैं, उसी में पूरे जन्म साथ निभाने का एक-दूसरे से वायदा भी कर लेते हैं।

विवाह संस्कार : विधि-विधानों का सुंदर इंद्रधनुष

डॉ. शान्ति जैन
वरिष्ठ साहित्यकार

पूरे विवाह संस्कार में एक-एक विधि एक सोपान की तरह है, जिसपर चढ़कर आदर्श दांपत्य जीवन में प्रवेश मिलता है। वर कन्या का विवाह तय होते ही देवताओं के गीत गाकर उनसे आशीर्वाद लिया जाता है।

लोक में मनुष्य का संपूर्ण जीवन विभिन्न संस्कारों से बँधा है। जन्म से मृत्युपर्यंत उसके समस्त कार्य-कलापों में किसी-न-किसी संस्कार की भूमिका है। मात्र जन्म संबंधी संस्कारों में कई विधि-विधान जुड़े हैं फिर विवाह तो मानव जीवन का वह मोड़ है, जो साहित्य की दृष्टि से अनेक रसों एवं भावों से भरा है। इस समय होने वाले रस्मो-रिवाज में विविधता तो है ही, स्थान विशेष में इन विधियों में यत्किंचित् परिवर्तन भी दिखाई पड़ता है। इस समय की जाने वाली विधियों में कहीं उल्लास है, कहीं ह्रास और कहीं करुणा भी। विवाह संस्कार अनेक विधि-विधानों का एक सुंदर इंद्रधनुष है। ये विधियाँ शास्त्र सम्मत तो है ही, इनका अपना एक औचित्य भी है। यह एक ऐसा आयोजन है, जिसे अपने जीवन में करने के लिए देवताओं ने भी अहम भूमिका निभाई है।

पूरे विवाह संस्कार में एक-एक विधि एक सोपान की तरह है, जिसपर चढ़कर आदर्श दांपत्य जीवन में प्रवेश मिलता है। वर कन्या का विवाह तय होते ही देवताओं के गीत गाकर उनसे आशीर्वाद लिया जाता है। इसे सगुन कहते हैं, जो विवाह का प्रारंभिक चरण है। इसमें वर और कन्या पक्ष वाले वस्त्राभूषण इत्यादि बाँस की रंग-बिरंगी टोकरियों में भेंट कर संबंध को दृढ़ बनाते हैं। इस समय का एक गीत इस प्रकार है-

पहिला सगुनमा तिल चाउर हे
तब कय डटोरबो पान हे
देहु गन दुल रइता बाबा के हाथ
सगुनमा भल हम पयलूँ हे।

विवाह के समय राजस्थान में विनायक का गीत गाया जाता है, जबकि बिहार में सगुन के बाद, तिलक के पहले माता के गीत गाए जाते हैं-

निमिया के डारी मैया लावेली हिंडोरवा, कि झूलि-झूलि
मइया गावेली गीत कि झूलि-झूलि।

कन्यापक्ष वाले शुभ मुहूर्त में वरपक्ष के यहाँ जाकर तिलक चढ़ाते हैं। वरपक्ष के यहाँ तिलक एक बड़ा समारोह माना जाता है, जिसमें सभी सगे-संबंधी व मित्रों को खिलाया-पिलाया जाता है। स्त्रियाँ इस अवसर पर तिलक के गीत गाती हैं-

आजु मोरा राम के तिलक आँगन सोभेला ए
रिमझिम बाजन बाजेला नट-नाटिन नाचेला ए
गाई के गोबर चउका लीपले गजमोती चउका पुराइए
तिलक देले जनक राजा मने मने हुलसत

तिलक चढ़ाने के बाद मंडप छवाने की प्रक्रिया आरंभ होती है। मंडप के किनारे बाँस गाड़े जाते हैं। इन्हें फूल-पत्तों से सजाया जाता है। इसमें वेदी बनाने के बाद स्वास्तिक की आकृति बनाकर कलश स्थापन किया जाता है, फिर अक्षत, सुपारी से गणेश का आह्वान होता है। इस समय लगन के गीत गाए जाते हैं। बुंदेलखण्ड में लगन के गीतों को लगुनगीत कहते हैं। इस समय लगन पढ़ी जाती है-

सों आजु मोरे राम जू खों लगुन चढ़त हैं
लगुन चढ़त हैं, आनन्द बढ़त है।

बारात के एक दिन पहले हल्दी, कलश होता है और चौक पूरा जाता है। इस दिन लड़की को चौके पर बिठाकर तेल, चावल, दूब और धान से चुमाया जाता है। यह विधि वर-कन्या दोनों पक्ष में होती है। स्त्रियाँ दही, अक्षत हाथ में लेकर वर या कन्या के पैर, घुटने, बाँह और सिर में छुलाती हैं। इसे चुमावन कहते हैं। यह एक प्रकार का आशीर्वाद है। चुमावन की विधि प्रायः स्त्रियाँ ही संपन्न करती हैं। एक गीत में साठी धान के चावल और हरी दूब से दूल्हे की माँ द्वारा चुमाने और आशीष देने का उल्लेख है-

सठिया के चउरा लहालही दूब सिवसंकर हे
चुमवहि चललिन अम्मां सोहागिन सिवसंकर हे
जेहि चुमावत से देत आशीष सिवशंकर हे
जियसु कवन दुलहा लाख बरीस सिवशंकर हे।

विवाह संस्कार में बारात के दिन बहुत सवेरे दरवाजे की मिट्टी कोड़कर देवता के पास रखी जाती है। फिर अरवा चावल धोकर देवता के पास सिल रखी जाती है। इस पर सभी देवताओं और जीव-जंतुओं के नाम का चावल रखकर उन्हें न्योता दिया जाता है। इस विधि को 'पितरनेवतन' कहते हैं। कहीं-कहीं पान-सुपारी देकर देवताओं और कुलदेवता को आमंत्रित किया जाता है।-

पाँचहिं पनवा के कोंपड़ सरगे जे सोह
बरहम बाबा उनहूँ के नेवतब हे

बुन्देलखण्ड में यह प्रथा मातृ का पूजन और 'बाबू पूजन' के नाम से प्रचलित है।

विवाह संस्कार से पूर्व शरीर की सफाई और सौंदर्य के लिए वर-कन्या को उबटन लगाया जाता है। नाइन उबटन तैयार करती है, इसके लिए उसे नेग मिलता है। माँ, चाची, बुआ या भाभी वर या कन्या को उबटन लगाती हैं-

ऊ जे जब रे गोहुम के रे उबटन
राई सरसों के तेल अउरो फुलेल
से बेटा बइठल ओबटन, दुलरइता बइठल ओबटन
लगवल मइयो सोहागिन
से बेटी बइठल ओबटन, दुलरइती बइठल ओबटन

बारात आने पर द्वारपूजा होती है। वर पक्ष की ओर से सुहाग का पानी आता है, जिससे कन्या स्नान करती है।

विवाह के पाँच दिन पहले मटकोड़ होता है। इसमें प्रायः पाँच स्त्रियाँ मिट्टी फोड़कर लाती है, फिर ओखली में धान रखकर हिलाती है। दो औरतें उसे कूटती हैं। शादी के दिन उसी ओखल से चावल निकालकर भात बनता है, जिसे पाँच कुमारियाँ दही, चीनी के साथ खाती हैं-

जनकपुर के पीयर माटी अयोध्या के कोदार ए सखी
जनकपुर के पाँचों सखी माटी कोड़े जास ए सखी।

बारात के दिन वर-कन्या दोनों पक्ष में घिउढारी की विधि होती है, जिसमें गौरी, गणेश तथा सप्त मातृकाओं की पूजा करके नए पीढ़े पर सिंदूर की पंक्तियाँ बनाकर वर-कन्या के माता, पिता द्वारा मंत्रपूर्वक घी की धारा गिराई जाती है। यह घृतधारा गृहदेवता, कुलदेवता के घर के बाहर और मंडप में भी गिराई जाती है। इस अवसर के लिए लड़के या लड़की का माता अपनी बहन के लिए वस्त्र लाता है, जिसे पहनकर वह घिउढारी की विधि करती है।

कन्या पक्ष में बारात के दिन इमली घोंटाई क विधि होती है। यह विधि कन्या के मामा द्वारा संपन्न होती है। आम महुआ विवाह की एक विधि कन्या पक्ष में होती है। बगीचे में आम, महुआ की पूजा कर उनका विवाह किया जाता है और आम के वृक्ष से हरिस की माँग की जाती है। यही हरिस विवाह-मंडप में गाड़ा जाता है-

राति तोरा अमवा रे हरिसी गढ़इवो
पल्लो तोरा अमवा रे हुमिया करइवो।

विवाह के अवसर पर शिव विवाह, राम विवाह और मिथिला में कहीं-कहीं सम्मरि अर्थात् स्वयंवर के गीत भी गाए जाते हैं। वर पक्ष में तिलक के गीतों के अलावा बरा बनाई की एक विधि होती है। इस अवसर पर प्रायः गाली गीत ही होते हैं-

माहे बरा पोवे बइठीं पगरैतिन छिनरो
औ आधा बरा धरिनि चोराय

वर पक्ष में चाकी पूजन, कौड़ी पूजन, पाग बाँधने के गीत भी होते हैं। बारात में जाने से पूर्व दूल्हे को मौर बाँधने की विधि बाबा या अन्य संबंधी करते हैं-

बुलाओ दूल्हे के फूफा को
चुनि बाँधे दुलरुआ के पाग हो।

बारात प्रस्थान से पहले माँ अपना आँचल बेटे के सिर पर रखकर उससे दूध का मोल माँगती है-

तू तौ चल्या पूता गौरी बियाहन
दुधवा के मोल कइ लेहु।

बेटे के विवाह में दूल्हे के वस्त्र, आभूषण आदि का वर्णन करते हुए बन्ना गाया जाता है-

आज बन्ना केरा अजबी बहार रे बना
बन्ना दुलहा हई दुलहिन के जोग रे बना

बन्ना गीतों को बुन्देलखण्ड में बनरा-बनरी और राजस्थान में 'बना-बनी' कहा जाता है। विवाह संस्कार के समय दूल्हा-दुलहन को टोना-टोटका से बचाए रखने के लिए दोनों पक्षों में जोग टोना गाया जाता है-

रंगीला टोना दूल्हे को लगेगा
यह रे टोना दादी जीजी करेगी।

इस गीत को राजस्थान में 'कामण' कहते हैं। मुस्लिमों के वर पक्ष में सहाना गाया जाता है। इन गीतों में कहीं दुलहन का सौंदर्य चित्रित है, कहीं दूल्हे के बागों में आने की चर्चा है-

बागों की अजब बहार
सयाना बन्ना बागों में उतरा।

विवाह में वर और कन्या दोनों के नाखून काटने की विधि होती है, जिसे 'नहछू' कहते हैं। इस विधि को करने के बाद नाइन को इनाम मिलता है-

गोर नउनिया त ठनगन बहुत करे ए
ए हम लेबो दुनू हाथे कंगन तब नहछू करबि ए।

विवाह के लिए प्रस्थान करने के पूर्व वर को स्नान कराने में धोबिन अहं भूमिका निभाती है और नेग लेती है-

मँड़वहिं झगड़े धोबिनिया निछावर थोड़ अहे हे
रघुवर के नेहलइया हमहीं गजहार लेबो हे।

विवाह के दिन वर-कन्या दोनों को मेहँदी लगाने की विधि संपन्न की जाती है और मेहँदी लगाने वाली को नेग मिलता है।

बारात में परिवार के सभी पुरुष चले जाते हैं तो रात में चारों के भय से स्त्रियाँ रतजगा करती हैं और 'डोमकछ' का आयोजन करती हैं। यह एक प्रकार का स्वाँग है, जिसमें बड़ा उन्मुक्त वातावरण होता है। डोम-डोमिनों द्वारा खेले जाने के कारण इसका नाम 'डोमकछ' पड़ा। एक गीत इस प्रकार है-

अनारकली डोमिनी के डोम कहाँ गइले
डोम गइले कलकतवा उहँवे रमइले।

दूल्हे की बारात जब द्वार पर लगती है, तो द्वार पूजा या द्वाराचार होता है। दूल्हे की आरती उतारी जाती है। इस समय स्त्रियाँ बारातियों

का परिहास गाली के माध्यम से करती हैं-

मुँह पर साल देइ आए रे सुन्नर वर
धूमधाम गरदा मचाए रे सुन्नर वर
बरियतिया मँगलो सेबर त अइले अबेर ए
दिअवा लेसि लेसि देखों त सम बगडेर ए।

इस समय दूल्हे को लोढ़े से परिछने की भी प्रथा है। इस विधि में एक सूप में पत्थर का लोढ़ा लाया जाता है और दूल्हे के मुख के आगे घुमाया जाता है। इसके बाद उसकी आरती उतारी जाती है। लोढ़े का सामना दूल्हे के द्वारा गृहस्थी के संघर्ष को झेलने का प्रतीक है-

सोने के लोढ़वा सरइया केरा सूप ए
परिछन चलनी राम के मइया ए

बुन्देलखण्ड में इस अवसर पर बारात के साथ अच्छे वस्त्र और जेवरों का चढ़ावा आता है। जिसे क्रमशः चीकट चढ़ाने और चढ़ाँव की विधि कहा जाता है। राजस्थान में लड़की का मामा अपनी बहन को चुनरी ओढ़ाता है और भात भरता है। इसे 'माहेरा' या 'भात भरना' कहते हैं।

भाँवर से पहले या कहीं-कहीं उसके बाद वर-कन्या के पाँव पखारे जाते हैं। इस अवसर पर कन्या पक्ष के व्यक्ति अपनी-अपनी ओर से उपहार देते हैं। इसके बाद भाँवर या सप्तपदी की विधि होती है, जिसे पाणिग्रहण संस्कार कहा जाता है। सप्तपदी के गीतों में प्रत्येक भाँवर का उल्लेख होता है-

पैलो फेरो फेरी लाड़ो कन्या कुँवारी
दूजो फेरो फेरी लाड़ो कन्या माँ की दुलारी,
सातो फेरो फेरी लाड़ी है चुके तुमारी।

दरवाजे से बारात लौटने के बाद लड़की को चौके पर बिठाया जाता है और दूल्हे का बड़ा भाई कन्या के माथे से छुलाकर वस्त्र, जेवर आदि देता है, जिसे 'गुरहत्थी' या 'मंझक्का' कहते हैं। इस समय कन्या पक्ष की स्त्रियाँ वर पक्ष वालों को गाली भी देती हैं-

टिकवा देख मत भुलिहऽ हो दादा
टिकवा हई मंगन के,
दुलहा हई सतपंचुआ के जनमल
दुलहिन हई जिमदार के।

कन्या के माता-पिता अपनी बेटी का हाथ वर के हाथ में देकर कन्यादान करते हैं। उस समय माता-पिता तथा अन्य परिजन विह्वल हो जाते हैं, क्योंकि अब उनकी बेटी पराई हो गई है-

वेद मनइते बराम्हन काँपल
काँपि गेल कुल परिवार हे,
हमार धियवा पराय घर जयतन
अस भेल पर केर-आस हे।

विवाह के बाद परदा करके लड़की की माँग में सिंदूर डाला जाता है। सिंदूरदान और कन्यादान के गीतों में कन्या से विछोह का भाव होता है, अतः इन गीतों में करुणा छलकती है-

छूटि गेल भाई से भतीजवा अउरो घर नैहर हे।
अब हम पड़लूँ परपूता हाथे सेनुरदान भेल हे।

इसी समय अग्निकुंड के पास 'लावा मेराई' की विधि की जाती है। भाई अपनी बहन के हाथ में लावा देता है। दूल्हा लड़की का अँगूठा पकड़कर लावा छींटता है-

लउआ मेरावऽना कवन भइया बहिनी तोहार ए
अँगूठा धरऽना कवन दुलहा सुहवा तोहार ए।

विवाह के दूसरे दिन दूल्हे या अन्य बारातियों के लिए जेवनार का आयोजन होता है। जेवनार पर बैठने के पहले दूल्हा किसी वस्तु की माँग करता है। उसे मनाकर मनचाही वस्तु दी जाती है। इस अवसर पर लड़की के ससुराल पक्ष को गाली देने की भी प्रथा है-

गारी गावत सम मिलि नारी
राम रहल मुसकाइ कि हों जी
राउर पितु दसरथ हथ गोरे
तू कइसे हो गइले कारी।

विवाह के अवसर पर जिस घर में कुलदेवता का पूजन तथा अन्य मांगलिक विधियाँ होती हैं, उसे 'कोहबर' कहते हैं। विवाह के बाद वर-कन्या का प्रथम मिलन यहीं होता है। यहीं उनका गठबंधन भी खोला जाता है। इस घर में दीवारों पर चिड़िया, पालकी, हाथी, मोर, सिंधोरा, चंद्रमा, सूर्य आदि के चित्र बनाए जाते हैं। यह एक प्रकार का देवतागृह कहलाता है, जहाँ वर-कन्या द्वारा अनेक विधियाँ संपन्न कराई जाती हैं। यहाँ दही, चीनी खिलाने का सगुन भी कराया जाता है।

विवाह में कन्या की विदाई इस संस्कार का सबसे बड़ा पक्ष है। माता-पिता के साथ समस्त परिजन विकल होकर रोने लगते हैं, यह सोचकर कि अब उनकी बेटी पराए देश जा रही है। बेटी की करुणा इस गीत में व्यंजित हो रही है-

काहे को ब्याही विदेस अरे लखिया बाबुल मोरे
हम तो बाबुल तोरे खूँटे की गैया
जित हाँको हँक जाएँ।

ससुराल में जाने पर वर-कन्या का परिछन होता है। आरती करके वधू का गृहप्रवेश होता है। एक थाली में लाल रंग का पानी रखा जाता है। वधू चावल के कलश को दाहिने पाँव से गिराती है। इसके बाद थाली में पाँव रखकर वह रँगे हुए पाँवों से घर में जाती है। कहीं-कहीं घर की दीवालों पर उसकी हथेली की छाप भी ली जाती है। ससुराल में वर-कन्या को जुआ खेलाया जाता है। एक परात में हल्दी का पानी रखकर उसमें अँगूठी डाली जाती है। दोनों उस पानी में हाथ डालते हैं। जिसके हाथ में अँगूठी आती है, उसकी जीत समझी जाती है। चौथे दिन चौथारी होती है, जिसमें लड़की के हाथ से कंगन का सूत खोला जाता है। ऐसी अनेक छोटी-मोटी विधियाँ की जाती हैं।

विवाह एक ऐसा संस्कार है, जिससे देवता भी अछूते नहीं रहे। लोक में राम-सीता और शिव-विवाह के प्रसंग भरे पड़े हैं। राम-विवाह संबंधी लोकगीतों में मंडप छवाने, भाँवर पड़ने, हल्दी चढ़ने, जेवनार होने जैसे प्रसंग हैं, तो शिव विवाह में एक विचित्र विवाह और कोहबर का उल्लेख है। प्रायः वर-कन्या की उपमा राम-सीता की जोड़ी से दी जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि आदर्श दंपती के रूप में राम-सीता को आदर्श माना जाता है।

संपर्क : 401, गिरी अपार्टमेंट, पूर्वी लोहानीपुर,
कदमकुआँ, पटना–800003, मो.: 9934271562

विवाह के रस्मों से घुलती है रिश्तों में मिठास

डॉ. श्रीभगवान सिंह
गांधीवादी चिंतक

उस समय मेरे आसपास कई बुजुर्ग, मेहमान, पंडित, नाई आदि भी बैठे हुए थे, सो मैंने यह जिज्ञासा सबके सामने रख दी। बहुतों ने यही कहा कि चूँकि धान हमारी सबसे महत्त्वपूर्ण फसल है, मुख्य आहार है, इसलिए उसे ही विवाह में सहभागिता के लायक समझा गया।

धान का लावा

एक विस्तृत परिवार-संबंधों के कारण हर साल किसी-न-किसी आत्मीय के विवाह में शामिल होने और उस अवसर पर हिंदू विवाह-पद्धति की अनेक रस्मों को बार-बार देखने का मौका उपलब्ध होता रहता है। पिछले दिनों जब भतीजे की शादी में गया तो 'धान का लावा' जैसी रस्म पर सहसा ध्यान चला गया। होता यह है कि बारात प्रस्थान के पूर्व वर पक्ष और कन्या-पक्ष दोनों के यहाँ धान का लावा भुनाने की रस्म पूरी की जाती है, वर-पक्ष के यहाँ से ले जाए गए धान के लावे को मंडवा में कन्या-पक्ष के लावे के साथ मिला कर एक कर दिया जाता है। फिर वर-कन्या के सात फेरे, पाणिग्रहण, सिंदूर-दान आदि की रस्में संपन्न होती हैं। सो जब इस बार घर-पड़ोस की औरतें सज-धजकर काफी उत्साह से गीत गाती हुई लावा भुनाने भड़भूजे के यहाँ चलीं, तो सहसा मेरे अंदर यह विचार कौंधा कि आखिर सब अनाजों को छोड़ क्यों केवल धान के लावे को इस रस्म के लिए चुना गया।

उस समय मेरे आसपास कई बुजुर्ग, मेहमान, पंडित, नाई आदि भी बैठे हुए थे, सो मैंने यह जिज्ञासा सबके सामने रख दी। बहुतों ने यही कहा कि चूँकि धान हमारी सबसे महत्त्वपूर्ण फसल है, मुख्य आहार है, इसलिए उसे ही विवाह में सहभागिता के लायक समझा गया। तब मैंने कहा कि ऐसा है, तो साबुत धान ही क्यों नहीं शामिल किया जाता या जब अक्षत के रूप में चावल का उपयोग होता है, तो फिर इस रस्म के लिए भी चावल क्यों नहीं उपयुक्त है? इस प्रश्न का किसी के पास कोई अनुकूल जबाव नहीं था। लेकिन शादी कराने में सिद्धहस्त, मंत्र-पारंगत बुजुर्ग पंडितजी मौन धारण किए रहे। तब मैंने अपनी जिज्ञासा उनकी तरफ सरका दी।

गंभीर होते हुए पंडित जी बोले, ''जजमान, इसके साथ बात यह है कि सारे अनाजों में धान ही ऐसा है, जो गरम बालू में भूने जाने से लावा तो बन जाता है, लेकिन अधिकतर लावों के साथ धान के छिलके चिपके रह जाते हैं, जो बाद में हाथ से अलग किए जाते हैं। सो दोनों पक्षों के धान के लावे को आपस में मिलाकर यह संदेश दिया जाता है कि जिस तरह भीषण ताप झेलने के बावजूद धान के छिलके लावे से चिपके रह जाते हैं, उसकी तरह यह जो संबंध वर-कन्या और दोनों परिवारों के बीच हो रहा है, वह प्रतिकूल परिस्थितियों, असीम कष्टों के बावजूद अटूट बना रहे। दोनों का एक-दूसरे से संबंध-विच्छेद न हो।'' पंडितजी की यह व्याख्या सुनकर लगा कि हमारे विवाह-संस्कार से जुड़े रिवाज ढकोसला मात्र नहीं हैं, बल्कि उनके पीछे सांकेतिक संदेश निहित हैं, जो पति-पत्नी के साथ-साथ परिवार, समाज के साथ भी हमारे रिश्तों को दृढ़ता प्रदान करते हैं। इस व्याख्या से सचमुच मेरी आँखों में चमक आ गई, लेकिन तुरंत ही नए जमाने के चलने को देखते हुए यह चमक गायब हो गई। नया जमाना कहाँ इस तरह की रस्मों में छिपे निहितार्थ को समझने और अंगीकार करने को तैयार है। जिस युग और समाज में हर कोने से विवाह पूर्व के यौन संबंध, विवाहेतर संबंध, बात-बात में तलाक देने आदि को ही आधुनिकता, प्रगतिशीलता का लक्षण घोषित किया जाने लगा हो, पति-पत्नी या अन्य पारिवारिक संबंधों में स्थायित्व की बात करने को पिछड़े होने की निशानी बताया जाने लगा हो, वहाँ धान के लावे का संदेश भला क्या कोई मायने रखता।

दरअसल, आज नितांत मनचाहे सुख की अंध लालसा न तो युवकों-युवतियों में माँ-बाप-परिवार के प्रति रागात्मक लगाव, कर्तव्यबोध पनपने दे रही है, न

अथाह धन की चाहत वालों के दिल में इंसानी रिश्तों, जज्बातों की कद्र करने दे रही है। 'यह मेरी जिंदगी है और मुझे इसे अपने ढंग से जीने का अधिकार है' जैसा मंत्र नई पीढ़ी का तकियाकलाम बनता जा रहा है।

मगर पिछड़ी मानसिकता (?) के मेरे जैसे आदमी को यही लगता है कि कष्ट सहने, त्याग करने की भावना में ही वह संरक्षणशीलता रही है, जिसके कारण अब तक हम सब बचते आए हैं। निजी सुख-सुविधा की असीम लालसा का गुलाम बनते हुए संवेदनहीनता, मूल्यविहीनता का जैसा वितान रचा जा रहा है, वह शुभ नहीं है। हमारे पूर्वजों ने निर्जीव धान के लावा द्वारा जो संदेश संप्रेषित किया है, उसे आज का सजीव मानव प्राणी आत्मसात् कर सके, तो बहुत सारे हो रहे और आने वाले अनर्थों से बचा जा सकता है।

दउरा में डग

विवाह के बाद जब दूल्हा-दुलहन घर आए तो कार से निकलकर घर के अंदर कोहबर तक की बीस कदमों की दूरी तय करने में उन्हें आधा घंटा से भी ज्यादा समय लग गया। हमारे यहाँ एक रिवाज है कि जब दूल्हा-दुलहन के साथ घर आता है, तो दोनों ही दउरा में पैर रखते हुए प्रवेश करते हैं। माँ, चाची, बहन, भाभी, फूफी और कितने ही संबंधों की स्त्रियाँ इस समारोह में शामिल होती हैं। गीत गाए जाते हैं, अक्षत छिड़के जाते हैं और दूल्हा-दुलहन क्रम से एक के बाद दूसरे दउरा में पैर रखते हुए कोहबर में प्रवेश करते हैं।

दउरा में डग रखते हुए जब दूल्हा-दुलहन चल रहे थे, तब बगल से एक तरह का शोर भी सुनाई दे रहा था, जो अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ने वाले उन लड़के-लड़कियों के कंठ से फूट रहा था, जो किसी-न-किसी संबंध से जुड़े होने के नाते आए हुए थे। उनके शोर का भावार्थ था, 'ओह, ये इतना धीरे-धीरे चलेंगे तो घंटों लग जाएँगे। यह भी कोई कस्टम है, कितना 'स्लो', कितना बोरिंग, कितना डिसगस्टिंग है यह सब।' चूँकि गरमी का समय था, इसलिए पंखा-कूलर के अभ्यस्त इन बच्चों को कस्बाई जगह पर आकर परेशानी महसूस हो रही थी। वे सब कुछ फटाफट संपन्न होता देखना चहते थे, लेकिन यहाँ की औरतों को गरमी की कहाँ परवाह? बच्चों के शोर ने उनके इस आनंद को थोड़ा कम अवश्य कर दिया।

मैं बरामदे में बैठकर इस अनुष्ठान को संपन्न होते हुए देख रहा था। तैंतीस साल पहले जब मैं शादी करके आया था, तो इसी तरह दउरा में पैर रखते हुए घर में प्रवेश किया था। लेकिन तब तात्कालिक उमंग की लहरों ने इस पर सोचने का अवकाश ही कहाँ दिया था। बहरहाल, मैं सोचता रहा कि कहीं हमारे पिछड़ेपन का कारण ऐसे रस्मो-रिवाज तो नहीं रहे हैं? लेकिन उम्र के इस मुकाम पर सोचते हुए मुझे तस्वीर का दूसरा ही पहलू नजर आया।

आधुनिक कही जाने वाली शिक्षा और जीवन-शैली ने हमें यही सिखाया है कि यहाँ का हर रीति-रिवाज ढकोसला है, पैर बँधे पत्थर की तरह है, जो हमें आगे बढ़ने से रोकता रहा है। इस दृष्टि से इन रिवाजों को मानने वाले हमारे पूर्वज प्रगति विरोधी ही नजर आते हैं। लेकिन थोड़ी गहराई में जाकर सोचने पर इन रिवाजों में छिपा सांकेतिक अर्थ नजर आने लगा और दउरा में डग रखते हुए घर में दूल्हा-दुलहन का प्रवेश कराने में छिपा गूढ़ सांकेतिक अर्थ नजर स्पष्ट होने लगा।

दरअसल, भारतीय जीवन-दर्शन में विवाह के बाद गृहस्थाश्रम का आरंभ माना जाता है। दउरा में डग रखने की रस्म से यह संदेश दिया जाता है कि अब तुम्हारे हर कदम काफी सोच-समझकर, सँभल-सँभलकर उठने और बढ़ने चाहिए। हर निर्णय फटाफट के अंदाज में नहीं, बल्कि आहिस्ते-आहिस्ते अच्छे-बुरे परिणामों को सोचकर लेना चाहिए। स्वच्छंद मनोवृत्ति को नियंत्रित करना चाहिए।

लेकिन सँभलकर चलने, सोच-समझकर लिखने जैसी सीख को आज हमने ताक पर रख दिया है। नतीजा है, बिना सोचे-समझे बढ़ते चलो, आविष्कार करते चलो, जैसे जीवन सूत्र हावी हो उठे हैं। इस अंधी दौड़ में हमें यह देखने की जरा भी फुर्सत नहीं कि हमारे विकास के महायान के पहिए तले कितने मानवीय रिश्तों, कितने प्राणियों का निरंतर संहार हो रहा है। बिना सोचे-समझे लिखने का आलम यह है कि चरित्रहीनता, विश्वासघात, नग्नता, मुक्त यौनाचार आदि का महिमामंडन हो रहा है और संयम, त्याग, सेवा का जीवन जीने वालों को प्रगति, स्वतंत्रता का दुश्मन सिद्ध किया जा रहा है।

यह सब देखकर मानना पड़ता है कि इतने दीर्घकाल से हमारा जीवन सुरक्षित रहता आया है तो वह इसी सँभल-सँभलकर कदम बढ़ाने, सोच-समझकर कहने और लिखने के कारण। आज भी दउरा में डग जैसे रिवाजों में छिपे संदेशों को आत्मसात् कर उन पर अमल करना हमारे वर्तमान और भविष्य, दोनों के बचे रहने के लिए आवश्यक है।

संपर्क : 9801055395

दउरा में डग रखते हुए जब दूल्हा-दुलहन चल रहे थे, तब बगल से एक तरह का शोर भी सुनाई दे रहा था, जो अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ने वाले उन लड़के-लड़कियों के कंठ से फूट रहा था, जो किसी-न-किसी संबंध से जुड़े होने के नाते आए हुए थे। उनके शोर का भावार्थ था, 'ओह, ये इतना धीरे-धीरे चलेंगे तो घंटों लग जाएँगे। यह भी कोई कस्टम है, कितना 'स्लो', कितना बोरिंग, कितना डिसगस्टिंग है यह सब।' चूँकि गरमी का समय था, इसलिए पंखा-कूलर के अभ्यस्त इन बच्चों को कस्बाई जगह पर आकर परेशानी महसूस हो रही थी। वे सब कुछ फटाफट संपन्न होता देखना चहते थे, लेकिन यहाँ की औरतों को गरमी की कहाँ परवाह? बच्चों के शोर ने उनके इस आनंद को थोड़ा कम अवश्य कर दिया।

उत्तर भारत में मुसलमानों की शादी की रस्में

शाहीना खान

उत्तर भारत में, विशेषकर मैदानी क्षेत्र में रस्में कुछ इस तरह हैं। रिश्ता जोड़ने के लिए लड़के के परिवार की ओर से संदेश नाई लेकर जाता है। इसे 'रिश्ता देना' कहते हैं। जाहिर-सी बात है, लड़के वाले रिश्ता देने से पूर्व ही हर तरह की छानबीन कर लेते हैं। यह आवश्यक भी इसलिए है कि एक बार रिश्ता देने का मतलब है कि लड़के वाले पीछे नहीं हट सकते।

शादी हर सभ्य समाज में अनिवार्य मानी गई है। पवित्र कुरान के अनुसार, मुसलमानों के लिए शादी करना प्राथमिक अनिवार्य कर्तव्यों में से एक है। शादी इस्लामी संस्कृति का एक अभिन्न हिस्सा है। एक मुसलमान निकाह द्वारा ही अपना परिवार व पीढ़ियों आगे बढ़ा सकता है। शादी करना इस्लाम में एक इबादत है, जो अल्लाह का एक हुक्म भी है। इसीलिए हर सक्षम मुसलमान को शादी करना अनिवार्य करार दिया गया है। भारतवर्ष के विभिन्न क्षेत्रों में मुसलमान वास करते हैं। इस्लामी कानून के अनुसार, विवाह के लिए दूल्हा-दुलहन के अलावा काजी और गवाह (दो पुरुष या चार स्त्री गवाह) होना आवश्यक है। यह तो हर क्षेत्र में एक जैसा ही है। परंतु निकाह से पहले की और बाद की रस्में अलग-अलग क्षेत्रों में थोड़ी-थोड़ी भिन्न हो जाती हैं।

उत्तर भारत में, विशेषकर मैदानी क्षेत्र में रस्में कुछ इस तरह हैं। रिश्ता जोड़ने के लिए लड़के के परिवार की ओर से संदेश नाई लेकर जाता है। इसे 'रिश्ता देना' कहते हैं। जाहिर-सी बात है, लड़के वाले रिश्ता देने से पूर्व ही हर तरह की छानबीन कर लेते हैं। यह आवश्यक भी इसलिए है कि एक बार रिश्ता देने का मतलब है कि लड़के वाले पीछे नहीं हट सकते। तो फल और मिठाइयों के साथ रिश्ता भेजा जाता है। यदि लड़की वाले सहमत हों, तो वापस फल और मिठाइयों के साथ जवाब जाता है। एक बार दोनों पक्ष सहमत हो गए, तो शादी की तैयारी मेहर की रकम को तय करने से शुरू होती है। लड़की के पिता या कोई बुजुर्ग एक वली चुनते हैं, जो मेहर की रकम लड़के वाले से बात कर तय करता है। अब इसके बाद रिश्ता पक्का माना जाता है। निकाह की तिथि आपस में मिल-बैठकर तय कर ली जाती है। इसके बाद लड़का-लड़की मिल नहीं सकते।

भात न्योतने की रस्म होती है, जब लड़की की माँ अपने ससुरालियों के साथ अपने बाप-भाइयों के घर जाती है। वह रिश्ता तय होने की खबर के साथ शादी का न्योता देने जाती है। खूब खातिर अदावत होती है। इसमें फल, मिठाई, मेवे बहुत महत्त्वपूर्ण होते हैं। यों समझिए कि मौज-मस्ती, नोंक-झोंक का दौर आरंभ हो जाता है। कुछ दिन बाद दुलहन के नाना, मामा, सपरिवार, अपनी बेटी को भात उढ़ाने जाते हैं। वह अपनी बेटी को दुपट्टा ओढ़ाते हैं और साथ-ही-साथ उसकी सास, ननदों और परिवार की सब स्त्रियों को दुपट्टे या कपड़े देते हैं। दूल्हा-दुलहन के लिए कपड़े गहने और अपनी बेटी और दामाद और उनके बच्चों के लिए वस्त्र भेंट देते हैं। यह रस्म बहुत सुंदर भाव अभिव्यक्त करती है। इसका मूल भाव यह होता है कि शादी में होने वाले खर्च का एक बड़ा हिस्सा लड़की के ननिहाल वाले उठा लेते हैं।

निकाह से 4 या 6 दिन पहले ये सब रिश्तेदारों को इकट्ठा करके लड़की को 'माइयों' बिठाया जाता है। ये बटना मलने की रस्म है। अधिकतर परिवारों में बटना खेला जाता है। बड़े-बड़े कूंडे भर-भरकर तैयार बटना, उस पर माइयों बिठाने के गीत। सात

सुहागनें लड़की के हाथों पर पान के पत्ते रखकर उन पर कुछ सिक्के या पैसे रखती हैं। उसकी गोद भराई फल और मिठाई से करती हैं और उसके चेहरे और हाथ-पैरों पर बटना मलती हैं। रस्म तो गाने गा-गाकर शांतिपूर्वक हो जाती है। उसके बाद शुरू होता है बटना खेलना। कोई भी किसी को भी बटना लसेढ सकता है। शोर-शराबा-हंगामा हर तरफ बरपा हो जाता है। इस दिन के साथ ही लड़की न तो घर से निकल सकती है और न ही घर का कोई काम-काज ही उससे करवाया जाता है। बल्कि एक मालिश वाली सुबह-शाम उसके पूरे बदन पर बटना मलती है। लड़की को पूरा-पूरा आराम दिया जाता है। कुछ इस ही तरह की रस्म दूल्हा के घर में भी होती है परंतु शादी से दो दिन पहले।

शादी में दूल्हा और दुलहन निकाह के समय, जो भी कपड़े-जेवर धारण करते हैं, वह उनके ससुराल से आता है, शादी से एक दिन पहले। लड़की के लिए 'जोड़ा' जाता है और लड़के को 'बागा' भेजा जाता है। यानी यह एक सुंदर संकेत है कि दोनों पक्ष पूरे जज्बे के साथ दूल्हा और दुलहन को अपने-अपने परिवारों में खुली बाँहों से सम्मलित कर रहे हैं।

एक और सुंदर रस्म है की जब दूल्हा अपनी नई नवेली दुलहन को विदा करवाकर अपने घर की दहलीज पर होता है, तो उसकी बहन दहलीज रोककर भाई से कुछ भेंट माँगती है। भाई उसे कुछ पैसे या कोई जेवर देता है और फिर वह अपनी भाभी को प्रेम से घर के अंदर लाती है। यह रस्म भी एक महत्त्वपूर्ण संकेत है, परिवार को जोड़े रखने की। यह तो सब मानते हैं कि सुंदर चीज को नजर लग सकती है। इसी कारण ये माना जाता है कि दूल्हा-दुलहन एक-दूसरे को शादी के बाद पहली बार सीधे न देखकर, शीशे में देखें। इस रस्म को 'अरसिमुसफ' कहते हैं, तो एक बड़ा-सा शीशा दूल्हा-दुलहन के बीच में रखा जाता है और दोनों एक-दूसरे को नजरें झुकाकर शीशे में देखते हैं।

यही छोटी-छोटी पर महत्त्वपूर्ण सुंदर रस्में ही उत्तर भारतीय मुसलमानों की शादियों को आकर्षक बनाती हैं।

(प्रोफेसर संचार एवं मीडिया), संपर्क : 9810713122

शादी में दूल्हा और दुलहन निकाह के समय, जो भी कपड़े-जेवर धारण करते हैं, वह उनके ससुराल से आता है, शादी से एक दिन पहले। लड़की के लिए 'जोड़ा' जाता है और लड़के को 'बागा' भेजा जाता है। यानी यह एक सुंदर संकेत है कि दोनों पक्ष पूरे जज्बे के साथ दूल्हा और दुलहन को अपने-अपने परिवारों में खुली बाँहों से सम्मलित कर रहे हैं।

मैना ने पार्वती जी को समझाया पत्नी धर्म

अंततः वह विदाई की बेला आई। पार्वती जी बारी-बारी से पिता और परिजनों से गले मिली। सबकी आँखें नम थीं। हिमाचल का तो रो-रोकर बुरा हाल था। माँ मैना भी अपने को सँभाल नहीं पा रही थीं। वह पार्वती जी को पकड़कर अलग ले गईं। मैना ने पार्वती जी को पति धर्म और ससुराल धर्म की शिक्षा दी। मैना ने कहा कि आज से तुम्हारा ससुराल ही घर है। कभी अपने पति की अवहेलना न करना। सदा मिलकर चलना। घर में सभी बंधु-बांधव का सम्मान करना। अब तुम्हारा यही संसार है। मैना ने कहा कि स्त्री के लिए पति के समान कोई नहीं है। यद्यपि माता-पिता अपनी संतान के बड़े शुभचिंतक होते हैं, लेकिन वह मुक्ति नहीं दे सकते। इस संसार में चार वस्तु सुख प्रदान करती हैं- पहला पति, दूसरा धर्म, तीसरी स्त्री और चौथा संतोष। इन चारों का ही पालन करना। स्त्री से दो कुलों की रक्षा होती है। पिता के कुल की तो वह रक्षा करती ही है, पति के कुल की भी रक्षा करती है। इसलिए तुम दोनों कुलों की रक्षा करना। हमारा मान-सम्मान तुम्हारे हाथ में है। इस तरह, हिमाचल और मैना ने पार्वती जी को विदा किया। इस विदाई की बेला में घर-संसार के लिए शिक्षाप्रद सीख।

शंकर जी की सीख

- विवाह आनंदोत्सव है। इसलिए, वह सारी रस्में शंकर जी के विवाह में हुईं जो आज होती हैं।
- विवाह के वक्त बुरा नहीं मानना चाहिए। हँसी-ठिठोली को उसी रूप में लेना चाहिए। शंकर जी के विवाह में भी यही हुआ।
- संसार का दूल्हा खूब शृगांर करता है, लेकिन जगत का दूल्हा (शंकर) भस्म लगाए जाता है। यही शाश्वत है। सत्य है।
- घर और परिवार की जिम्मेदारी स्त्री की होती है। इसलिए मैना उनको समझाती है कि घर कैसे चलाना है।
- यदि माँ अपनी कन्या को शिक्षा दे तो इससे दोनों कुलों के मान-सम्मान की रक्षा होती है। पार्वती जी को मैना ने यही सीख दी।
- विवाह के पीछे कल्याण का भाव हो। आनंद का भाव हो। कुलों की रक्षा का भाव होना चाहिए।
- पति-पत्नी दोनों को ही अपने-अपने धर्म का पालन करना चाहिए, तभी फेरों के वक्त वचन कराए जाते हैं।
- शंकर जी और पार्वती जी ने भी इन वचनों का पालन किया क्यों कि यह वैदिक परंपरा है।

सगाई सूं बिदाई

■ सुमन मारू

गलियाँ में बाजे जंगी ढोल, मारवाड़ी समाज में लड़का या लड़की के ब्याह की बात पक्की होते ही घर-आँगन गीतों से गुंजायमान होने लगता है। विवाह की रस्में बन्ना या बन्नी को उबटन लगाकर शुरू होती हैं।

गेहूँ, जौ, हल्दी और दही, तेल मिलाकर उबटन तैयार करते हैं और नाई या नाइन दूल्हा-दुलहन को उबटन लगाती हैं। इसके साथ ही ब्याह हाथ, मेहँदी, बिरद-बड़ी चाक, भात इत्यादि नेगचार शुरू हो जाते हैं।

म्हारी हल्दी रो रंग सुरंग
म्हारी मेहँदी लाल सुरंग
भुलावे लाडलरीरा दादा जी दादी जी...

नेगचार के गीतों में परिवार के सभी सदस्यों का नाम लिया जाता है। सभी वैवाहिक रस्में पूरी होती हैं। दूल्हा घोड़ी पर बैठकर दुलहन को लाने जाता है। घोड़ी को भी बहुत सुंदर ढंग से सजाते हैं।

करें किल्लोल म्हारी घोड़ी अनमोल...

घोड़ी दुलहन के दरवाजे आती है और द्वार पर पहुँचते ही दूल्हा तोरण मारता है। उसके बाद फेरों के लिए जाता है।

दुल्हन (लड़की) की शादी में सुहाग और कामण गाया जाता है। दुल्हन माँ गौरा से अपने अखंड सुहाग की कामना करती है-

करूँ गौरी पूजा तन-मन से
मेरे भाए सुहाग की लाली रहे...

भाई-बहन के प्यार का प्रतीक भात की रस्म बहुत ही भावुक और मनमोहक होती है। भाई अपनी बहन के लिए चुनरी लाता है और मामा लड़का-लड़की के लिए जो सामान लाते हैं, उसे भात कहते हैं।

भात भरण आया म्हारा ओ जामन जाए...

दिल को छूने वाली इस भात की रस्म में भाई-बहन के प्यार का झरना बहता है।

जयमाला की रस्म भी बहुत सुंदर होती है। दूल्हा-दुलहन एक-दूसरे को जयमाल पहनाते हैं। बारात घर पर आते ही शगुन के गीत गाने शुरू हो जाते हैं और जब तक विदाई नहीं हो जाती, गीत चलते ही रहते हैं।

म्हारी सरबा सुहागन बनड़ी, फेरा पे जा बैठी...

फेरे पूरे होते ही विदाई की रस्में शुरू हो जाती हैं। इसे पहरावनी कहते हैं। पहरावनी में बेटी का पिता बेटे के पिता या ताऊ का पूरा शृंगार करता है। उन्हें शॉल ओढ़ाता है और उपहार देता है। इसके बाद विदाई होती है। बेटी की विदाई बहुत ही भावुक होती है। कठोर हृदय के व्यक्ति की भी आँखों से आँसू छलक जाते हैं-

मैं तो बाबुल के बागां की चिड़कली
परदेसी खुवटियारी लैर बाबुल गठजोड़ो कियो...

बहू के द्वार पर आते ही गीतों से स्वागत होता है-

कुल बहू आई घर माय

बेटो तो फूल गुलाब रौ,
बहु म्हारी काजलियो री कोर
आशीषा रो मेह बरसांवा जी...

रस्मों-रिवाजों की सीढ़ी चढ़ते-चढ़ते बहू ससुराल आती है। ससुराल में कंगन, डोरा और सुहाग थाल होता है। बहू अपने कुल-देवता का पूजन अखंड आशीषों को पाने की कामना से करती है।

सात स्वरों का सरगम है विवाह

शुभाषिणी

सात स्वरों के सरगम हैं, तो सभी अपने में सुरीले पर उनको भी हम बाँधते हैं। तभी जन्म लेती हैं, विभिन्न राग और रागनियाँ। सात रंग भी जब बँध जाते हैं, तो आकाश-स्थल पर इंद्रधनुष दिखता है। उसी तरह नर और नारी जिनके जुड़ने से बनता है परिवार, समाज और परिवेश। इसी पारंपरिक विधि का नाम है विवाह। जहाँ सात फेरों में ही पूरे जीवनकाल को मानसिक एवं सामाजिक रूप से बाँध लिया जाता है।

विवाह कई प्रकार के होते हैं। पौराणिक काल में गंधर्व-विवाह, सात्त्विक विवाह, राजसिक विवाह एवं तामसिक विवाह के विषय में बोध होता है। हर विवाह की एक विशेषता थी। कभी सूर्यदेव को ही अग्नि का प्रतिरूप मानकर परिक्रमा कर लिया तो कभी हवन-यज्ञ में अग्नि प्रज्वलित कर के सात वचन, सात फेरे और सात पदों के साथ आजीवन साथ रहने के बंधन में बँध गए। विचारों की शुद्धता एवं प्रबलता थी। विधि-विधान तो उन विचारों को दृढ़ करने का शायद एक तरीका था और यह भी था कि और लोग भी जुड़ें। अतः यह सामूहिक एवं सामाजिक यज्ञ था। एक आंतरिक प्रसन्नता हुआ करती थी। तभी जीवन के हर उतार-चढ़ाव के आने के बावजूद मतभेद हो भी जाए, पर मनभेद नहीं होता था। पत्नी का उचित सम्मान पति के हृदय में जरूर होता था। पर आज के परिवेश में स्थितियाँ कुछ और ही दर्शाती हैं।

आज विवाह समारोहों में शक्ति और धन के प्रदर्शन को प्रदर्शित करने का मंच बन रहा है। यह अर्थ संतुष्टि के लिए उपकरण बन गया है। अनुष्ठान और परंपराओं ने अपना आकर्षण और मूल्य खो दिए हैं और हम रिश्तों की उथल-पुथल में देखते हैं तथा ऐसा देख मेरे मन में कुछ विचार आते हैं-

मन की उड़ान
ख्वाबों का खजाना
उम्मीदों का अंबार
और न जाने क्या-क्या
इनका काम ही है घूमना
अतीत से भविष्य की ओर
इनकी सवारी है समय
प्रत्येक पल के पंख पर
बैठ, ये बनाती हैं अपना पथ
पलकें निहारती हैं उनको
पर समय-रथ कभी हाथ नहीं आता।
इसी कशमकश में उलझती जाती हैं
रिश्तों की डोर
कल हम थे
आज ये नई दौर।
काश! हम आज के पल को अभी देख लें
और जी लें जी भर उसे
पक्षियों की चहचहाहट,
पत्तियों की सरसराहट
श्वास का आना और जाना
और जान लें मैं अभी हूँ।

परिवार द्वारा निर्धारित विवाह

■ **जनार्दन मिश्र**, साहित्यकार

पठन-पाठन एवं निजी अनुभव के आधार पर मन में धारणा बन चुकी थी कि दुनिया में यश-सम्मान पाने के लिए शादी जरूरी नहीं है। पर माता-पिता के दबाव पर कि बिना विवाह परिवार की वंश-वृद्धि रुक जाएगी, मुझे झुकना पड़ा। उम्र 30 की हो चुकी थी। उन दिनों मैं विश्वविख्यात रेंगलर जिंस कंपनी में मैं सीनियर प्रोडक्शन मैनेजर था। यह 1982 की बात है।

पहले मैं परिवार द्वारा निर्धारित विवाह के पक्ष में नहीं था। इसलिए शादी के लिए निजी तौर पर भी पत्र-व्यवहार करने लगा था। पर माता-पिता और रिश्तेदारों का दबाव पड़ा कि तुम प्रेम-विवाह करोगे तो तुम्हारी दोनों छोटी बहनों की शादी में रुकावट आएगी। मैं राजी हो गया। मेरी धारणा थी कि पढ़ी-लिखी पत्नी बहुत समझदार और घर-परिवार चलाने वाली होती है। मेरे पिताजी ने मेरा रिश्ता पक्का कर दिया। लड़की के पिता पोस्ट ऑफिस विभाग में वरिष्ठ अधिकारी थे। पूछने पर पिताजी ने बताया कि लड़की तो मैंने नहीं देखी है, पर उसकी छोटी बहन को देखा है। इंटर पास है। स्वभाव की अच्छी है। घर, परिवार, रिश्तेदारी की उसमें समझ है। जिस लड़की से तुम्हारी

बात पक्की की है, वह बी.ए. पास है, तो वह तो बहुत समझदार होगी। मैंने पिताजी की आज्ञा को सहर्ष स्वीकार किया।

निजी अनुभव एवं मित्र-बंधुओं की पत्नियों के जीवन-व्यवहार को देख-समझकर मैं इस निर्णय पर पहुँचा हूँ कि पढ़ा-लिखा आदमी पुस्तकों से ज्ञान प्राप्त कर सकता है, पर पढ़-लिखकर आदमी बहुत समझदार हो जाए, जरूरी नहीं। जहाँ तक पत्नी की बात है, यही वह पढ़ी-लिखी है, परिवार से ताल-मेल बिठाकर चलती है, तो जीवन की गाड़ी सही चलेगी। उनकी संतानें लायक बनेंगी।

प्रेम विवाह का रिश्ता सिर्फ लड़का-लड़की तक ही सीमित रह जाता है। यदि प्रेम-विवाह में लड़की का स्वभाव घर-परिवार चलाने वाला हो, तो बहुत अच्छी बात है। एक-दूसरे से सिर्फ शारीरिक आकर्षण से प्रभावित होकर नहीं, एक-दूसरे को अच्छी तरह समझकर अपने माता-पिता की सलाह से लड़का-लड़की शादी करें या उनके माँ-बाप शादी करें, तो बहुत अच्छी बात है।

परिवार द्वारा निर्धारित विवाह की विशेषता यह है कि यदि पति-पत्नी से किसी बात को लेकर टकराव हो जाता है, तो घर-परिवार के बड़े-बुजुर्ग उनको समझा सकते हैं। शारीरिक आकर्षण तो बराबर नहीं बना रहता है। अकसर प्रेम विवाह में पारिवारिक संबंध टूट जाते हैं। ऐसे में थोड़ी-बहुत खटपट होने पर पति-पत्नी एक-दूसरे से अलग रहने की सोचने लगते हैं। परिवार के लोग उनसे अपना रिश्ता तोड़ लेते हैं। यदि कोई छोटा-सा बच्चा हो तो एक-दूसरे से अलग होने में बच्चा को वे बाधक मानने लगते हैं। बच्चा यदि अपने माँ-बाप के तनाव को समझता है, तो उसके अंदर मानसिक विकार पैदा होने लगता है।

विवाह सिर्फ वंशवृद्धि के लिए ही नहीं होता। पति-पत्नी के आपसी मेल-मिलाप से जीवन परिपूर्ण होता है। एक-दूसरे की मनःस्थिति को समझना भी बहुत जरूरी होता है।

औरतें स्वभावतः पैसे को बहुत महत्त्व देती हैं। वे चाहती हैं कि उसका पति जो भी काम करे, उससे अर्थोपार्जन जरूर हो, जो लोग इस तथ्य को समझते हैं, वे लोग अपनी पत्नी से बहुत हद तक सामंजस्य बैठा लेते हैं।

मैं समग्रता में इस तथ्य पर पहुँचा हूँ कि परिवार द्वारा निर्धारित विवाह जीवन में ठोस आधार प्रदान करता है। इसमें भी त्रुटियाँ हैं; पर प्रेम-विवाह की अपेक्षा कम।

मो.: 9953950778

विवाह यानी विशेष उत्तरदायित्व

■ कुमकुम झा

पाणिग्रहण संस्कार को सामान्य रूप से हिंदू विवाह के नाम से जाना जाता है। विवाह को सोलह संस्कारों में से एक संस्कार माना गया है

हिंदू मान्यताओं के अनुसार चार आश्रमों में से गृहस्थ आश्रम के लिए पाणिग्रहण संस्कार, यानी विवाह को नितांत आवश्यक माना गया है। वि+वाह=विवाह, जिसका शाब्दिक अर्थ है, विशेष रूप से उत्तरदायित्व वहन करना। दो प्राणी अपने अलग-अलग अस्तित्वों को गौण कर एक सम्मिलित इकाई का निर्माण करते हैं।

मानव समाज में विवाह के प्रादुर्भाव के बारे में कहा गया है कि मानव समाज की आदिम अवस्था में विवाह का कोई बंधन नहीं था। स्त्री-पुरुषों को एक साथ रहने की तथा यौन संबंध कायम करने की पूरी स्वतंत्रता थी। महाभारत के एक पुरातन आख्यान से पता चलता है कि पति-पत्नी के रूप में स्त्री-पुरुष के स्थाई संबंधों की नींव ऋषि उद्दालक के पुत्र श्वेतकेतु ने डाली थी। इस आख्यान के अनुसार पुरातन काल अर्थात् वैदिक पूर्व काल में मानव समाज में भी स्त्री-पुरुष के यौन संबंध अनियमित थे तथा स्त्रियों में यौन संबंध कायम करने की पूरी स्वतंत्रता थी और इस पशुकल्प स्थिति का अंत किया था श्वेतकेतु ने। एक आख्यान के अनुसार जब श्वेतकेतु ने अपनी माँ को अपने पिता के सामने ही बलपूर्वक एक अन्य व्यक्ति के द्वारा उसकी इच्छा के विरुद्ध अपने साथ चलने के लिए विवश करते देखा, तो उनसे रहा न गया और वह क्रुद्ध होकर इसका प्रतिरोध करने लगा। इस पर उनके पिता उद्दालक ने उन्हे ऐसा करने से रोकते हुए कहा कि यह पुरातन काल से चली आ रही सामाजिक परंपरा है, इसमें कोई दोष नहीं। किंतु श्वेतकेतु ने इस व्यवस्था को पाशविक व्यवस्था कहकर इसका विरोध किया। कहा जाता है कि भारत में श्वेतकेतु ने ही सर्वप्रथम विवाह की मर्यादा स्थापित की।

भारतीय संस्कृति के अनुसार विवाह कोई शारीरिक या सामाजिक अनुबंध मात्र नहीं है। यहाँ दांपत्य को एक श्रेष्ठ आध्यात्मिक साधना का भी रूप दिया गया है। परिवार निर्माण की जिम्मेदारी उठाने योग्य युवक-युवतियों का, जिसमें शारीरिक और मानसिक परिपक्वता आ गई हो, उनका विवाह संस्कार कराया जाता है। कहा गया है, धन्य गृहस्थाश्रम, सद्गृहस्थ ही समाज को सहज-सरल व्यवस्था एवं विकास में सहायक होने के साथ श्रेष्ठ नई पीढ़ी बनाने का भी कार्य करते हैं।

निश्चित रूप से शादी जिंदगी का महत्त्वपूर्ण रिश्ता है। हर रिश्ते में कुछ उसूल, सिद्धांत और नियम होते हैं, मगर यह जरूरी नहीं कि जो नियम एक रिश्ते पर सही साबित होंगे, वह दूसरे पर भी लागू हो जाएँ। समय के साथ हर चीज बदलती है, तो फिर पति-पत्नी के रिश्ते में भी बदलाव लाजिमी है। कुछ वर्षों से दांपत्य के रिश्ते में भी बदलाव आए हैं, कुछ मान्यताएँ पुरानी मानी जाने लगी हैं और उनकी जगह नई मान्यताएँ लेने लगी हैं। आज 35 और 35 से ऊपर आयु वर्ग के लड़कों में भी कई कारणों से विवाह के प्रति भय पैदा हुआ है और सच कहूँ तो अपना जीवन जीने की ललक ने विवाह को बोझ बनाया है। परंतु इन रिश्तों से डरने वाले लोगों की संख्या बहुत कम है। आज के समय में कुछ युवक-युवतियों का यह कहना है कि आजकल लड़के तथा लड़की बहुत ही जिद्दी या लड़ने वाली या लड़ने वाला किसी भी बात पर समझौता नहीं करने वाली या समझौता नहीं करने वाला होने लगे हैं। सो कौन उस पचड़े में पड़े, हम अकेले-अकेले ही सुखी हैं। दरअसल ये कामकाजी लड़के-लड़कियाँ अपने काम से ही परेशान हैं। पढ़-लिखकर पैसा कमाने में लगे हैं। सारी कामनाएँ पूरी करना चाहते हैं, परंतु विवाह के बाद जो जिम्मेदारियाँ उठानी पड़ती हैं, उनसे मुँह मोड़ रहे हैं।

मानती हूँ कि वर्तमान में बहुत सारी मान्यताएँ बदल रही हैं। आज के युवक-युवती का कहना है कि शादी के लिए इतना भी समर्पित होना अच्छा नहीं है कि अपना वजूद ही खत्म हो जाए। अपनी इच्छाओं और जरूरतों को समझना जरूरी है। तभी रिश्ते भी मजबूत रह सकेंगे। शादी को निभाने के लिए त्याग-समर्पण परस्पर भरोसा, समझौता, तालमेल इत्यादि जरूरी हैं। अनेक आधुनिक समाजों में विवाह को वर-वधू की सहमति से होने वाला विशुद्ध कानूनी अनुबंध समझा जाता है। किंतु यह स्मरण रखना चाहिए कि यह अन्य सभी प्रकार के अनुबंधों या संविदा से भिन्न है, हमारे यहाँ विवाह समाज के अलिखित संविधान से ही चलता है, जिसमें विवाह के बाद पति-पत्नी के जीवन का उद्देश्य एक हो जाता है। उनका हित एक होता है। एक-दूसरे के सहारे वह जिंदगी को जीते हैं, जिसमें प्यार, संयम, समझदारी के साथ जिंदगी भर साथ निभाने का वादा होता है। जिंदगी के सब अच्छे-बुरे लम्हों को साथ मिलकर जीते हैं, इसलिए यह कहा जा सकता है कि जीवन में विवाह अनिवार्य भले ही न हो किंतु आवश्यक जरूर है। ©पाँ.स्तं.

श्रीमुख से

''सावधान! कहीं आप भारतीय नारी के अंतःकरण में स्थित विवाह की पवित्रता और त्यागमय जीवन की श्रेष्ठता की जड़ें न खोद दें। उन्होंने युग-युग से अपने आदर्शों को उन्नत रखा है, पति-प्रेम को एक आध्यात्मिक-शक्ति के रूप में सँजोया है, न कि केवल काम-वासना की पूर्ति अथवा सांसारिक सुख के रूप में। सावधान! आप कहीं उनके समक्ष विषय-सुखों को आध्यात्मिक सुख से अधिक मोहक और सुख-सुविधा एवं भोग-विलास के जीवन को स्वकर्तव्य और स्वार्थ-त्याग के जीवन से अधिक आकर्षक रूप में प्रस्तुत न कर दें। नारियाँ ही भारत को पतन से बचाएँगी, किंतु वे नारियाँ नहीं, जिनके आदर्श डिगते जा रहे हैं। अभिजात और आत्मत्याग नारी के अंतःकरण में अधिष्ठित है, भारत की पुत्रियाँ ही हिंदू धर्म और हिंदू परिवार को सुरक्षित रखे हुए हैं और आगे भी रखेंगी।'' —डॉ. एनी बेसेंट

ईसाई विवाह

परंपरानुसार दूल्हा पहले चर्च में पहुँचकर, दुल्हन का इंतजार करता है। दूल्हन, अपने पिता द्वारा चर्च में लाई जाती है और दुल्हन के आने पर फूलों का गुलदस्ता देकर उसका स्वागत किया जाता है और उसे चर्च में लाया जाता है।

ईसाई विवाह सादगी पूर्ण तरीके से चर्च में किया जाता है, जिसमें पादरी की उपस्थिति में दोनों कुछ महत्त्वपूर्ण वचन लेते हैं। दुलहन सफेद पोशाक पहनकर हाथों में फूलों का गुलदस्ता लिए रहती है और दूल्हा पारंपरिक सूट पहनता है।

मॉसिमेज : मंगनी की यह रस्म दुलहन के घर पर होती है, जिसमें करीबी रिश्तेदार ही शरीक होते हैं। पादरी की उपस्थिति में दोनों, अँगूठियाँ, एक-दूसरे को पहनाते हैं। पादरी बाइबल से कुछ पंक्तियाँ पढ़ते हैं और उस दिन शादी की तारीख भी तय की जाती है तथा मेहमानों की दावत रखी जाती है।

शादी की पुकार : विवाह के पूर्व चर्च में शादी की घोषणा होती है। शादी की 3 पुकार के बाद ही विवाह सम्पन्न किया जा सकता है।

चर्च में दुलहन का स्वागत : परंपरानुसार दूल्हा पहले चर्च में पहुँचकर, दुलहन का इंतजार करता है। दुलहन, अपने पिता द्वारा चर्च में लाई जाती है और दुलहन के आने पर फूलों का गुलदस्ता देकर उसका स्वागत किया जाता है और उसे चर्च में लाया जाता है।

होमिली : पादरी पवित्र बाइबल के कुछ सरमन पढ़ते हैं, जिन्हें होमिली कहते हैं।

न्यूप्चिलस : होमिली के बाद पादरी दूल्हा-दुलहन से विवाह से संबंधित महत्त्वपूर्ण सवाल पूछते हैं, जिसका उत्तर दोनों को देना जरूरी होता है और उन दोनों से, शादी के लिए मरजी पूछी जाती है। पादरी दूल्हे और दुलहन के इरादों और विवाह संस्था की पवित्रता के बारे में कसमें दिलवाता है। वह दूल्हे से पत्नी में विश्वास रखने और उसे सम्मान देने की बात कहता हैं, जिसके बदले में दूल्हा 'आई विल' कहकर अपनी सहमति देता है। इसके बाद पादरी दुलहन से पति को सम्मान और प्रेम देने के साथ उसमें विश्वास रखकर विवाह की पवित्रता को बनाए रखने की सहमति माँगता हैं। 'आई विल' कहकर दुलहन अपनी सहमति जताती हैं। इसके बाद पादरी परिजनों से विवाह के लिए सहमति माँगता है, 'वी डू' कहकर अभिभावक इस महा मिलन के लिए सहमति देते हैं। शादी में आए मित्र गण भी 'यस वी डू' कहकर पति पत्नी के इस नवनिर्मित रिश्ते को बनाए रखने में अपना सदैव सहयोग देने का वचन देते हैं।

वचन : दुलहन का दायां हाथ अपने दाएँ हाथ में लेकर दूल्हा विवाह का वचन लेता हैं। 'मैं तुम्हे अपनी पत्नी मानता हूँ और आजीवन सुख दुःख में तुम्हे प्रेम करने और तुम्हारे प्रति वफादार रहने का वचन देता हूँ। दुलहन भी विधाता और मित्रों को साक्षी मानकर प्रेम, ईमानदारी और विश्वास के साथ सुख दुःख में अपने हमसफर का साथ निभाने का वादा करती हैं।

रिंग्स बदलना : दूल्हा-दुल्हन, फिर अंगूठियों को एक-दूसरे को पहनाते हैं और पादरी से आशीर्वाद लेते है।

रजिस्ट्रेशन : यह अंतिम रस्म होती है, जिसमें शादी के दस्तावेज पर, गवाहों की मौजूदगी में दूल्हा-दुलहन के हस्ताक्षर होते हैं। इसे रजिस्ट्रार के पास जाकर दिया जाता है।

डिपार्चर : विवाह के बाद दूल्हा-दुलहन सबके साथ चर्च के बाहर निकलते हैं और दुलहन अपना बुके पीछे की ओर उछालती है। ऐसा माना जाता है कि जो युवती इस बुके को झेल ले उनका विवाह भी जल्दी हो जाता है।

रिसेप्शन : यह रात्रि भोजन होता है, जिसमें दोनों ओर के रिश्तेदार व मित्रगण शरीक होते हैं। इसमें दूल्हा-दुलहन के माता-पिता और मेहमान खुशियाँ मनाते हैं। ©पाँ.स्तं.

सप्तपदी

■ ऋता शुक्ल

शुभ विवाह की मंगल वेला
सप्तपदी के मंत्रों वाली
दंपती के सुखमय जीवन
के सात जन्म की शर्तों वाली
सातों वचनों की शुभता संग
ध्रुवतारा, अरुंधती साक्षी

तीर्थयात्रा, पूजन प्रभु का
सबमें हम होंगे सहभागी
वामांगना तुम्हारी हूँ मैं
वचन माँगती तुमसे अनुपम
माता-पिता मेरे पुण्यात्मा
उन्हें समादर देना प्रतिक्षण

प्रतिश्रुति की अभिलाषा लेकर
करे निवेदन कन्या वर से
आजीवन सम्मान करोगे,
यही अपेक्षा मेरी तुमसे

सारे दाय निभाने होंगे
कुल का मर्म समझना होगा
गृहपति बनना सहज नहीं है
प्रतिपालक बन रहना होगा

अर्थनीति, गृहनीति व्यवस्था
सबमें मेरी भागीदारी
आय और व्यय, लेखा-जोखा
हम दोनों की जिम्मेदारी

कभी नहीं अपमान करोगे
दुर्व्यसनों से दूर रहोगे
वचन बड़ा ही आवश्यक है
शुद्ध भाव से मुझे वरोगे

परवनिता का मान करे जो
जननी सम सम्मान करे जो
मैं वामांगी बनूँ उसी की
शीलवान, सद्भाव धरे जो

सप्तवचन का सप्तपदी से
बड़ा अलौकिक गहरा नाता
वैदिक संस्कृति के वैज्ञानिक
ऋषिगण, मंत्रों के उद्गाता

अन्न, सलिल, पावक, समीर
की समरसता से हो खुशहाली
यह विवाह पद्धति सर्वोत्तम
सतो वचन न जाए खाली

संपर्क : 9431174319

रथ चढ़ा सूर्य

■ इन्दिरा मोहन

क्या हुआ!
कब मिला, छूटा
कौन, कब, कितना बढ़ा,
लक्ष्य का संधान करने-
सूर्य निज रथ पर चढ़ा।

नित्य प्रातः मुदित झाँके,
गिरि शिखर से ढरक नीचे,
लाल मुख लाली लसे है,
चाँद उतरे सहज पीछे।

कौन कब,
कितना थका,
कितना रुका, कितना झुका,
सत्य का सम्मान करो
सूर्य नित आगे बढ़ा।

कर्म का उत्साह जीवन,
पंथ के प्रति सजग चिंतन,
नाश की चिंता करें क्या,
फूल-सा है क्षणिक यौवन।

कौन दुश्मन,
कौन प्यारा,
जीत किसकी, कौन हारा,
तमस का अभिमान हरने
सूर्य कोहरे से भिड़ा।

एक है आकाश जिसमें
अनगिनत तारे चमकते,
गीत सुख-दुख के मधुरतम,
एक मन में ज्यों उभरते।

कौन व्यापक,
कौन सीमित,
मृत्यु के प्रति कौन अर्पित,
ज्योति का अनुदान देने,
सूर्य तो कबसे खड़ा।

संपर्क : 609 बी, मैगनोलिया, डी.एल.एफ. फेज–5, गुरुग्राम–122009,
मो.: 9811504364

वसंत आ गया

■ अज्ञेय

मलयज का झोंका बुला गया
खेलते से स्पर्श से
रोम रोम को कंपा गया
जागो जागो
जागो सखि वसन्त आ गया जागो

पीपल की सूखी खाल स्निग्ध हो चली
सिरिस ने रेशम से वेणी बाँध ली
नीम के भी बौर में मिठास देख
हँस उठी है कचनार की कली
टेसुओं की आरती सजा के
बन गयी वधू वनस्थली

स्नेह भरे बादलों से
व्योम छा गया
जागो जागो
जागो सखि वसन्त आ गया जागो

चेत उठी ढीली देह में लहू की धार
बेंध गयी मानस को दूर की पुकार
गूंज उठा दिग दिगन्त
चीन्ह के दुरन्त वह स्वर बार
'सुनो सखि! सुनो बन्धु!
प्यार ही में यौवन है यौवन में प्यार!'

आज मधुदूत निज
गीत गा गया
जागो जागो
जागो सखि वसन्त आ गया, जागो!

आज प्रथम गाई पिक पंचम

■ सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

आज प्रथम गाई पिक पंचम।
गूँजा है मरु विपिन मनोरम।

मस्त प्रवाह, कुसुम तरु फूले,
बौर-बौर पर भौंरे झूले,
पात-गात के प्रमुदित झूले,
छाई सुरभि चतुर्दिक् उत्तम।

आँखों से बरसे ज्योतिः कण,
परसे उन्मन-उन्मन उपवन,
खुला धरा का पराकृष्ट तन,
फूटा ज्ञान गीतमय सत्तम।

प्रथम वर्ष की पाँख खुली है,
शाख-शाख किसलयों तुली है,
एक और माधुरी घुली है,
गीत-गंध-रस वर्णों अनुपम।

विज्ञानसम्मत हैं लोक के विश्वास

डॉ. ओम प्रकाश शर्मा
संपादक, युगसेतु

लोकशास्त्र कहता है कि भूकंप के समय कुएँ के समीप जाना चाहिए, क्योंकि वह नहीं डोलता –‘चक डोले, चक बेलना डोले, खड़ा पीपल कभी न डोले।’ कौए, टिटिहरी, बिल्ली, कुत्ता, सियार का असमय विशेषकर रात में बोलना–रोना अनहोनी की आशंका को जन्म देता है।

प्रायोगिक अनुसंधानों द्वारा सूक्ष्म, तथ्यपरक, साक्ष्यपूर्ण भौतिक निष्कर्षों का ज्ञान विज्ञान है। यह विशिष्ट विषय-क्षेत्र सुव्यवस्थित तथा क्रमागत होता है, इसलिए जब किसी विशुद्ध विज्ञानेतर विषय का क्रमबद्ध तथा सुव्यवस्थित अध्ययन करना होता है, तब उसे भी विज्ञान की श्रेणी रखा जाता है। इस निकष पर रसायन, भौतिकी, प्राणी, प्रकृति ही नहीं, राजनीति विज्ञान, मनोविज्ञान, भाषा विज्ञान, समाज विज्ञान भी विज्ञान के दायरे में आ जाते हैं। लोकवार्त्ता एवं लोकसाहित्य, जो अपने समय का संपूर्ण ज्ञान है, उसमें राजनीति, वनस्पति, मन-मस्तिष्क, प्रकृति, प्राणी, चिकित्सा, समाज, संस्कृति सबके निचोड़ का संयोजन है। निस्संदेह, परंपराओं, आस्थाओं, विश्वासों से आवृत्त इसके बहुत सारे अंश अब रूढ़ि, अंधविश्वास की तरह लगते हैं, तथापि ये लोक जीवन के लंबे प्रामाणिक प्रयोगों से उद्भूत हुए हैं, जिनका पूर्व में पुष्ट आधार रहा है। याद कीजिए कि भड्डरी ने जब कहा कि चींटी का अंडा लेकर चलना वर्षा होने की संभावना है, तब कितनी बार देखा-परखा होगा, उस पर अनुसंधान किया होगा, तब यह सिद्धांत गढ़ा होगा कि ‘चींटी लै अंडा चलै, चिड़ी उड़ावै धूर, व्यास कहै सुन भड्डरी तौ बरसा नहिं दूर।’ इसी प्रकार जब गिरगिट उलटा होकर ऊपर की ओर चढ़ता है, तब वर्षा से पृथ्वी पर जल बढ़ता है- ‘उलटे गिरगिट ऊँचे चढ़े, बरखा होइ भूई जल बढ़े।’ जीव-जंतु प्रकृति के प्रति अत्यंत संजीदगी-संवेदनशीलता रखते हैं, इसलिए भवितव्य की आहट देने में सक्षम होते हैं। भूकंप आने का पूर्वाभास पशु-पक्षियों के असामान्य व्यवहार से मिलता है; कुत्ते, बिल्ली भौंकने-भागने लगते हैं, पक्षियों की चहचहाहट बढ़ जाती है। यह सब आधुनिक विज्ञान ने माना और जाना है।

लोकशास्त्र कहता है कि भूकंप के समय कुएँ के समीप जाना चाहिए, क्योंकि वह नहीं डोलता –‘चक डोले चक बेलना डोले, खड़ा पीपल कभी न डोले।’ कौए, टिटिहरी, बिल्ली, कुत्ता, सियार का असमय विशेषकर रात में बोलना-रोना अनहोनी की आशंका को जन्म देता है। दिन में सियार का बोलना अकाल पड़ने का संकेत है –‘दिन में स्याल जो सबद करै, निस्वै है काल हलाहल पड़ै।’ बिल्लियों का आपस में लड़ना निकट भविष्य में झगड़ा होने की निशानी है। यात्रा के शुरू में गधा का बोलना शुभ होता है। लोग कहेंगे कि यह सब तो लोकविश्वास, अंधविश्वास है, जो वैज्ञानिक तथ्यों के बिल्कुल विपरीत है; पर विश्वास यों ही नहीं जमता, यह अनवरत दृष्टांतों, साक्ष्यों से परिपुष्ट होने पर ही टिक पाता है। जीव-जंतुओं का आपस में संवाद होता है, वे एक-दूसरे की बोली को समझते हैं; लेकिन आदमी उन्हें नहीं समझता या समझने लायक नहीं मानता। जीवों-जंतुओं के स्वर-भाव बेतुके-निरर्थक होते तो उनसे प्राकृतिक जीवन का रहस्य कैसे उद्घाटित होता? वर्तमान विज्ञान पदार्थपरक होने के कारण मनुष्येतर प्राणियों के हावभावों पर कम ध्यान देता है। जो वैज्ञानिक तकनीक से प्रमाणित नहीं हो पाया है, उसे अवैज्ञानिक मान लेना उचित नहीं। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में संभावनाएँ असीम हैं, इसलिए अब तक जो नहीं खोजा जा सका, वह आगे शोध द्वारा प्रमाणित हो सकता है।

ऋतुओं की मार से बचने और कृषि-कार्य हेतु मौसम की जानकारी आवश्यक है। पहले लोक और ऋतुओं के बीच कोई मौसम विभाग तो था नहीं, अवलोकन-आकलन सीधे लोक द्वारा होता था। सर्वत्र रहने वाली चींटियाँ, छिपकलियाँ बरसात के मौसम का पूर्वानुमान देती थीं। सूक्ष्म निरीक्षण द्वारा प्राकृतिक घटनाओं से तारतम्य मिलाकर लोक सैद्धांतिकी गढ़ी जाती थी। लोकज्ञान के मुताबिक पश्चिम से उठकर

बादल पूरब दिशा में छा जाए तो शाम तक वर्षा होती है –'पच्छमे उट्ठी बदली, पूर्वे गई छाई, हण समझ सँझा जो बरखा आई।' लंबे समय के विहंगावलोकन से सामने आया कि 'करिया बादर जी डरपावै, भूरौ बादर पानी लावै।' क्या यह एक-दो दिन के बादल को देखकर कहा गया होगा? जाहिर है कि नहीं। इसी प्रकार 'जब जेठ चले पुरवाई, तब सावन धूलि उड़ाई', यानी जेठ में पुरवैया हवा चलने लगे, तब समझना चाहिए कि सावन वर्षाहीन रहेगा। जेठ की तेज धूप ठीक मानी जाती है, उसकी तपन से बाद में वर्षा की संभावना बनती है- 'जेठ मास जो तपे निरासा, तब जानो बरखा के आसा।' साल में दो सावन लगने पर अकाल पड़ता है- 'दो साम्मण, दो भदवे, दो कात्तक दो माह; टांडे ढोर बेच कै नाज बिसावण जा।' रोहिणी और मूल नक्षत्र की तेज धूप के साथ जेठ की प्रतिपदा तपे, तो सातों प्रकार के अन्न उत्पन्न होते हैं- 'सर्व तपे जो रोहिणी, सर्व तपे जो मूर; परिवा तपे जो जेठी की, उपजे सातों तूरा।' मीन राशि में मंगल ग्रह के जाने पर बहुत अधिक बारिश होती है- 'मंगल डेऊआ मीन, सात पाताड़ हुए सीन।' मार्गशीर्ष की बारिश सोने की अंकुर की तरह होती है- 'मँगसरे री मँगसीर, सोने की टीर।' इस संदर्भ में भड्डरी की उक्तियाँ भी पुख्ता प्रमाण मानी जाती हैं- 'आद्रा तो बरसै नहीं, मृगशिर पौन न जोय; तौ जानौ यों भड्डरी, बरसा बूँद न होय।' खेतीबाड़ी से संबंधित कहावलियों में किसानी जीवन का सटीक ज्ञान समाविष्ट है, जिसकी अनदेखी आधुनिक किसान भी नहीं करते। लोक-व्यवहार है कि किसान को आलस्य, चोर को खाँसी, मूलधन को ब्याज की ऊँची दर तथा हँसी विधवा के लिए काल होती है-

आलस नींद किसान नै खावै, चोर नै खावै खाँसी।
अका ब्याज मूल नै खावै, राँड़ नै खावै हाँसी।

पहले बैल खेत की जुताई के एकमात्र साधन हुआ करते थे। प्राणी विज्ञान कहता है कि मुड़े सींग वाला, ऊँचा माथा वाला, गोल मुँह वाला और नरम रोवें वाला चंचल बैल उत्तम होता है- 'सींग मुड़े, माथा उठा, मुँह का होवै गोल; रोम नरम चंचल करन, तेज बैल अनमोल।' कृषि-कार्य के लिए लोक नियमावली निर्धारित है, यथा फसल बुधवार को बोना चाहिए और शुक्रवार को काटना चाहिए- 'बुद्ध बाहणी, सुक्कर बहडणी।' आखिर क्यों? किसी ने इस क्यों का उत्तर जानने का यत्न किया है? खैर, चना, गेहूँ, बाजरे आदि के बोने और काटने का समय ऋतुज्ञान से स्पष्ट है : 'चणा पाक्कै चैत म्हे, अर गेहूँ बैसाख विचार; कात्तक पाक्कै बाजरा, अर मँगसर पाक्कै जुआर।' ठेठ देशी विद्या नई ऊर्जा-ऊष्मा से भरपूर करती है। जिज्ञासापरक पहेलियों के माध्यम से तीव्र उत्कंठा, तर्क एवं कल्पनाशक्ति को जगाकर बुद्धि-कौशल का विकास करने के साथ कार्य का नुस्खा बताया जाता था। जीव-जंतुओं से साम्य दिखलाकर फसल-अन्न के रूपाकार का निदर्शन वैज्ञानिक नजरिए की देन है। एक पहेली है कि 'ए चिरइया ऊँट, ओकर पोर बाजे पुट; ओकर खालरा ओदारू, ओकर मांस मजेदार' अर्थात् ऊँट की तरह ऊँचा पेड़, जिसका छिलका हटाकर चीभने पर मीठा लगता है, वह ईख है। सैकड़ों दानों वाले मक्के की बाल के लिए ब्रह्मोदय बहुत प्रसिद्ध है :

हरी थी मन भरी थी, लाख मोती जड़ी थी।
राजा जी के बाग में, दुशाला ओढ़े खड़ी थी।।

यात्रा से संबंधित नियमों का आज भी लोग पालन करते हैं। रवि-शुक्रवार को पूरब, सोम-शनिवार को पश्चिम, मंगल-बुधवार को दक्षिण और बृहस्पतिवार को उत्तर दिशा में जाने पर सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह साथ देता है, जबकि इससे विपरीत दिशा में जाने पर दिशाशूल की नकारात्मकता का सामना करना पड़ता है। यदि यात्रा पर निकलने की मजबूरी हो ही तो रविवार को पान, सोमवार को दर्पण, मंगलवार को गुड़, बुधवार को मिठाई, गुरुवार को राई, शुक्रवार को दही और शनिवार को अदरख या उड़द का सेवन करके निकलने से दिशाशूल निष्प्रभावी हो जाता है- 'रवि को पान, सोम को दरपन, मंगर को गुर धनिया चरबन; बुध मिठाई, बिहफै राई, सुक्र कहे हमें दही सुहाई।' इसी तरह कपड़ा पहनने के तीन दिन बताए गए हैं- 'कपड़ा पहिरिहऽ वार बार, बुध बियफे अवरु शुक्कर बार, भूले भटके इतबार।' चलते समय टोकना अशुभ, शराब का गिरना शुभ और चाय का गिरना अशुभ होता है- 'अरक बोगना तेमरेल, चा बोगना कुनमस तोग।' जो व्यक्ति ताजा खाता है और खुले में नहीं सोता, वह नीरोग रहता है- 'तातौ खाई पटे में सोवै, ताकौ वैद्य पिछारे रोवै।' अच्छी सेहत के लिए कम अथवा संतुलित खाना चाहिए, न कि अधिक- 'थोड़ा खाया अंग बधाया, घंणा खाया कूड़ बधाया।' आजकल भी गाँव-शहर में बहुसंख्यक लोग सुबह उठते ही पानी पीते हैं-

प्रातः काल खटिया ते उठिके, पीवे तुरतै पानी।
कबहूँ घर में वैद न अइहैं, बात घाघ कै जानी।

प्रत्येक प्रहर का अपना महत्त्व है। प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त है। मुर्गे की बाँग के साथ सुबह-सुबह प्रभाती गाने की परंपरा में परमसत्ता, प्रकृति और पुरुष को जगाया जाता था- 'बह्मा का बेद जाग, गौरी गणेश जाग; हरो भरो संसार जाग, जंतु जीवन जाग!' पहले गाँवों में घड़ियाँ तो थीं नहीं, अधिकतर लोग इन्हीं संकेतों से सुबह होने का आभास पाते थे। प्रातः एवं संध्या समय खाना, सोना अस्वास्थ्यकर है- यह लोक आयुर्विज्ञान की स्थापना है। पहर और दिन ही क्यों, हर माह के लिए

ऋतुओं की मार से बचने और कृषि-कार्य हेतु मौसम की जानकारी आवश्यक है। पहले लोक और ऋतुओं के बीच कोई मौसम विभाग तो था नहीं, अवलोकन-आकलन सीधे लोक द्वारा होता था। सर्वत्र रहने वाली चींटियाँ, छिपकलियाँ बरसात के मौसम का पूर्वानुमान देती थीं। सूक्ष्म निरीक्षण द्वारा प्राकृतिक घटनाओं से तारतम्य मिलाकर लोक सैद्धांतिकी गढ़ी जाती थी। लोकज्ञान के मुताबिक पश्चिम से उठकर बादल पूरब दिशा में छा जाए तो शाम तक वर्षा होती है –'पच्छमे उट्ठी बदली, पूर्वे लई छाई, हण समझ सँझा जो बरखा आई।' लंबे समय के विहंगावलोकन से सामने आया कि 'करिया बादर जी डरपावै, भूरौ बादर पानी लावै।' क्या यह एक-दो दिन के बादल को देखकर कहा गया होगा?

बनाए गए नियम-निषेध प्राकृतिक तात्त्विकता के आधार पर प्रमाणित हैं; यथा- सावन में जमीन पर नहीं सोना चाहिए, बिस्तर झाड़कर लगाना चाहिए, क्योंकि साँप-बिच्छू विचरते हैं। कार्तिक में मूली, अगहन में तेल, पूस में दूध लाभप्रद है- 'कातिक मूली, अगहन तेल, पूस में करो दूध से मेल।' चैत्र में गुड़, सावन में साग, भादों में दही नहीं खाना चाहिए- 'कुँवार करेला, चैत गुड़, साम्मण साग ना खा; साम्मण करेला भादों दही मौत नहीं तै जहमत सही।' यदि लंबा जीवन जीना है तो छाछ के साथ केला को तथा दूध के साथ दही को मिलाकर खाने से परहेज करना चाहिए-

तक्र माँहि ना खौ मति केला, एक विरुद्ध करौ मति मेला।
दूध-दही मेला नहिं पीवै, जो माने सुख पावै जीवै।

जब चिकित्सा विज्ञान परंपरागत पद्धति का था, तब प्राकृतिक उपादानों, लोक औषधियों, तंत्र-मंत्रों द्वारा इलाज होता था। साँप के विष को झारने के लिए नरसिंह की नृत्यमयी पूजा होती थी- 'आण करु तेरो काज, झार मिया एक बार घर आ।' गाँवों में ऐसे लोग जीवित हैं, जिनका पहले कभी काँसे की थाली और बालू से साँप के काटने का विष उतारा गया था। हिंदी क्षेत्र के आज भी चेचक को माता जी, माता देवी, शीतला माता कहा जाता है। रोगी पर देवी-कृपा बनी रहे, इसलिए बालों को काटने, सब्जी-दाल में हल्दी डालने, छौंकने, रोगी द्वारा प्रणाम करने आदि पर निषेध रहता है, 'तेल बेराया' जाता है और भक्ति गीत गाया जाता है- 'निमिया के डाली मइया लावेली हिलोरवा कि झूली झूली।' भारतीय लोक में नीम का पेड़ गुणकारी है। कुछ समय पहले नीम के पेटेंट को लेकर विश्व स्तर पर कितना बखेड़ा छिड़ा था। तुलसी भी परम औषधि है, अनेक रोगों की अचूक दवा है। इसलिए पूजा-अर्चना, प्रसाद तथा भोग-भोज तुलसी के बिना पूर्ण नहीं होते और न ही पवित्र हुए माने जाते हैं- 'छप्पन भोग बत्तीसों व्यंजन, बिन तुलसा हरि एक न मानी।' प्रकृति के अणु-अणु में धड़कते प्राणों का स्पंदन लोक ने अनुभूत किया है; इसके विभिन्न घटक पेड़-पौधे, फूल, मनुष्येतर प्राणी के रूप में पुनर्जन्म आत्मा की निरंतरता और मानवीय कर्मफल का वैज्ञानिक प्रमाण है।

जो रूढ़िग्रस्त, जड़, अपुष्ट लगता है, उसे अंधविश्वास कहा जाता है, परंतु यह हमेशा उचित नहीं होता, क्योंकि अपनी ज्ञान-सीमा के कारण जो समझ में नहीं आता, वह गलत ही हो यह जरूरी नहीं। एक लोकगीत में स्त्री मृत पति से कहती है कि यदि मैं आपकी पतिव्रता पत्नी हूँ तो मेरे आँचल से आग उत्पन्न हो जाए। तत्काल अग्नि उत्पन्न होती है, वह पति की चिता के साथ जलकर भस्म हो जाती है। क्या ऐसा संभव है? द्रव्य वैज्ञानिक रूप से यह बेशक असंभव लगे, किंतु योग-साधना के उच्च धरातल धारणा, ध्यान और समाधि, जिन्हें एक शब्द में 'संयम' कहा जाता है, उसके अंतर्गत समाधि की चरमावस्था में अंतर्धान की गई वस्तुस्थिति की प्राप्ति होती है और इस प्रकार अभीप्सित मृत्यु तथा उसका कारक भी उपलब्ध होता है। इसलिए ऐसा संभव है।

लोक का शरीर विज्ञान कहता है कि जिस पुरुष की छाती में बाल न हों, उसका विश्वास नहीं करना चाहिए : 'जिसदियाँ छातियाँ नी बाल, तिसदा नी करना एतवार।' स्वभाव मृत्यु तक बना रहता है, जैसे गुड़-घी से सींचने पर भी नीम कभी मीठा नहीं हो सकता- 'ज्याँ रा पड़िया सुभाव, जासी जीव सूँ, नींब न मीठौ होय, सींचो घी गुल सूँ।' दूसरों की बुद्धि से गृहस्थी नहीं चलती- 'बेगानी बुद्धि, ता घर कुद्दर्दी।' हमेशा अपनी बुद्धि और दूसरों का बल अधिक लगता है- 'अपणी अकल होर दुज्जे रा धन बौहू जाणदा।' व्यावहारिक विज्ञान मानता है कि वैद्य, मिस्त्री, महाराज पेट भरे हुए चाहिए; कौआ, कुत्ता, बाज भूखे ठीक हैं; पत्नी, समधी और नौकर मीठे होने चाहिए और तेल, तंबाकू और अफीम कड़वे होने चाहिए-

तिन्नो रज्जे चाहिए - वैद, राज, महाराज।
तिन्नों भुक्खे चाहिए - काउवा, कुत्ता, बाज।
तिन्नो मीठे चाहिए - जोरू, कुड़म, कमीण।
तिन्नौ कौड़े चाहिए - तेल, तमाखू, फीम।

लोक के विज्ञान में प्राकृतिक हलचलों, प्राणिमात्र के भौतिक हावभावों एवं मनःस्थितियों का संतुलित समन्वय व सामंजस्य है, अलोक अथवा अलौकिक दुनिया तक पहुँच है। इस प्रकार प्रकृति और अलोक अथवा लोकोत्तर से संवाद का सशक्त अनुसंधान क्षेत्र है, लोक और उसका विज्ञान। भारत का परंपरागत ज्ञान चाहे वेद वाङ्मय का हो या लोकक्षेत्र का, वह विज्ञानपरक होने की वजह से अनंत संभावनाओं का द्वार है; अनेक वैज्ञानिक अनुसंधानों-आविष्कारों का सायास या अनायास मूल है, फिर भी इस पर यथेष्ट शोध-कार्य करने की महती आवश्यकता है। ©पाँ.स्तं.

लोक का शरीर विज्ञान कहता है कि जिस पुरुष की छाती में बाल न हों, उसका विश्वास नहीं करना चाहिए : 'जिसदियाँ छातियाँ नी बाल, तिसदा नी करना एतवार।' स्वभाव मृत्यु तक बना रहता है, जैसे गुड़-घी से सींचने पर भी नीम कभी मीठा नहीं हो सकता- 'ज्याँ रा पड़िया सुभाव, जासी जीव सूँ, नींब न मीठौ होय, सींचौ घी गुल सूँ।' दूसरों की बुद्धि से गृहस्थी नहीं चलती- 'बेगानी बुद्धि, ता घर कुद्दर्दी।' हमेशा अपनी बुद्धि और दूसरों का बल अधिक लगता है- 'अपणी अकल होर दुज्जे रा धन बौहू जाणदा।'

ईश्वर की आत्मकथा

राजेश जैन
विज्ञान लेखक

एक और बात तय हुई कि ब्रह्माण्ड जब अस्तित्व में आया तो सबसे पहले बना होगा- आकाश यानी 'स्पेस', फिर बने होंगे उसमे समाए 'विचार' और 'वस्तुएँ... जी हाँ, तत्पश्चात् आता है मेरा क्रम।

मैं ईश्वर हूँ!

मेरा जन्म कब हुआ और कहाँ हुआ, इसका लेखा-जोखा किसी दस्तावेज (बर्थ सर्टिफिकेट) में खोजने की आवश्यकता नहीं है। फिर यह भी कि मेरे जन्मदाता कौन हैं? होश सँभालते ही हर व्यक्ति को यही कहा जाता है- हम सभी मनुष्यों को ईश्वर (भगवान) यानी मैंने ही बनाया है, किन्तु मैं मानता हूँ और आप भी मानेंगे कि मैंने मनुष्य को नहीं पर मनुष्य ने मुझे जन्म दिया है। यह भी हो सकता है कि मैं मनुष्य से पहले ही अस्तित्व में था। जब मनुष्य अस्तित्व में आया और अपनी सत्ता फैलाने लगा तो एकाएक उसे लगा- एक 'ईश्वर' जैसा पात्र भी होना चाहिए, जिससे सृष्टि एवं उस पर अपनी सत्ता का कारोबार आगे बढ़ाया जा सके, सो मेरी 'अवधारणा' को एक नए 'प्रोडक्ट' की तरह शायद अनंत वर्षों पूर्व लांच कर दिया गया था। विचारणीय है कि मैं मनुष्य की 'इन्वेंशन' हूँ या 'डिस्कवरी', जो भी हो, अपने जन्मदाता, अर्थात् 'मनुष्य' को मेरा नमन।

निश्चय ही जब मनुष्य अस्तित्व में आया तो वह कहीं न कहीं तो आया होगा? अर्थात वह 'कहीं' पहले से मौजूद था, जिसमे मनुष्य अवतरित हुआ? वह 'कहीं' कहाँ से आया? किसने उसे बनाया? आज के विज्ञानसम्मत समय में, हर भौतिक पदार्थ (हार्ड वेयर) पहले 'विचार' (सॉफ्ट वेयर) होता ही है, सो स्वाभाविक जिज्ञासा है कि ब्रह्माण्ड (हार्डवेयर) के अस्तित्व में आने से पूर्व किसने उसकी डिजाइन (सॉफ्टवेयर) पर विचार किया? बस यही प्रश्न मुझे जस्टिफाई कर देता है। इसका कोई सटीक उत्तर नहीं है, बस उत्तर के लिए अनिश्चितता सहित सतत जूझते रहने का उपक्रम ही 'मैं' हूँ, यानी तथाकथित 'ईश्वर'।

गणित के समीकरण और अज्ञात 'एक्स' की महत्ता

एक और बात तय हुई कि ब्रह्मांड जब अस्तित्व में आया तो सबसे पहले बना होगा- आकाश यानी 'स्पेस', फिर बने होंगे उसमे समाए 'विचार' और 'वस्तुएँ... जी हाँ, तत्पश्चात् आता है मेरा क्रम। अर्थात् मेरा जन्म मनुष्य के बाद हुआ। हो सकता है, मैंने ही मनुष्य को बनाया हो, ऐसा वह मानता भी है कि मैं उसके पहले भी था। मुर्गी पहले या अंडा...? यही जद्दोजहद का नाम, हम अगर 'अज्ञात' उर्फ गणित की शब्दावली में 'एक्स' रख दें तो आसानी होगी। यों भी विज्ञान परक गणित के अंतर्गत किसी भी उत्तर को हल करने से पहले हम उसे 'ग्र' मान लेते हैं और फिर मान्य सूत्रों अथवा समीकरणों में अन्य ज्ञात मूल्यों की सहायता से 'ग' का मान प्राप्त करते हैं। तो बंधु, विश्व में मौजूद तमाम 'धर्म', इसी समीकरण को हल करने का दावा करते हैं- अपने-अपने सूत्रों/तरीके यानी 'धारणाओं' और 'कर्मकांडों' से।

अनेक धर्म तो अपने 'ईश्वरों' की संख्या में लगातार वृद्धि हेतु तत्पर रहते हैं यानी X1, X2, X3...X∞। अर्थात् अनंत तक। भारत में ही करोड़ों देवी देवता हैं- अपने, इतने भाई बहनों या कहूँ 'स्वरूप' या 'अवयव' को मैं स्वयं नहीं जानता। तात्पर्य मेरे अस्तित्व का प्रारब्ध भी अंततः मनुष्य के नियंत्रण में ही है। अर्थात् मैं 'ईश्वर' एक तरह से 'एक्स' हूँ, मेरा 'मान' (वेल्यू) फिलहाल अज्ञात है।

यह भी सत्य है कि अपनी स्वार्थ परक लालसाओं और वासनाओं की आपूर्ति के लिए मनुष्य, विरासत में प्राप्त प्राकृतिक सम्पदा का धुआँधार दोहन करता रहा है। नई से नई तकनीक खोजकर अपने तात्कालिक भोग विलास के संसाधन बढ़ाता रहा, फलस्वरूप असंतुलन होना स्वाभाविक था, जो अब प्रकट होने भी लगा है। असंतुलन इतना भी न बढ़े कि प्रलय की नौबत आ जाए सो मनुष्य ने स्वयं मेरे नाम यानी 'ईश्वर' की संज्ञा को एक 'टेक्नोलॉजी' की तरह स्थापित कर दिया-'पाप' और 'पुण्य' इस टेक्नोलाजी' के ही दो अध्याय हैं। अपने अपने ढंग से सब उसकी व्याख्या करने लगे। तात्पर्य, मैं अगर प्राकृतिक 'विज्ञान' हूँ (जो वास्तव में हूँ भी) तो धर्म या संप्रदाय विशेष उससे उपजी मानव निर्मित 'प्रौद्योगिकी' (टेक्नोलॉजी) हैं।

'विज्ञान' और 'प्रौद्योगिकी'

'विज्ञान' और 'प्रौद्योगिकी' को एक न मानें, दोनों में अंतर है। जो कुछ हमारे आस-पास ब्रह्मांड में नैसर्गिक तौर पर हो रहा है, वह क्यों हो रहा है, इसका पूर्ण ज्ञान

'विज्ञान' है, जबकि जब जो हम चाहते हैं, वैसा करने या पाने के लिए, विज्ञान का सहारा लेकर, जो 'उक्तियाँ' (जुगाड़) हम खोजते हैं या 'उपक्रम' करते हैं- वह 'प्रौद्योगिकी'(टेक्नोलॉजी) की श्रेणी में आता है।

अधिकांश मनुष्य मानते हैं कि मैं दुनिया को चला रहा हूँ। यह चलाना क्या होता है? चलने का सीधा सम्बन्ध 'बल' तथा 'गति' से है- गति से परिवर्तन होता है और ब्रह्मांड में हर पल यह हो रहा है। कहते हैं न, संसार में सिर्फ एक ही सत्य निश्चित है कि सबकुछ 'अनिश्चित' है। इस 'अनसर्टेनिटी' को संज्ञा स्वरूप निर्धारित करने हेतु बीज गणित में एक्स..वाई..जेड या क ख ग...आदि आयाम बने। फिर उन अनिश्चित आयामों के समन्वय से सूत्रों का गठन हुआ, व्याख्याएँ हुईं...जो अब भी लगातार जारी हैं।

ऊर्जा कणों की भूमिका

आइए, वैज्ञानिक धरातल पर, संसार के चाल-चलन (परिणमन) पर गौर करें। लौकिक संसार बना है- जल, अग्नि, वायु, मिट्टी और आकाश से पर ये तत्त्व स्वयं किस चीज से बने हैं? जैन दर्शन में ब्रह्मांड की संरचना को लेकर आध्यात्मिक तौर पर कहा गया है कि यह बना है- पुदगल, लोक, अलोक, धर्म और अधर्म से। पुदगल यानी ऊर्जा कण, एटम और मॉलिक्यूल (परमाणु और अणु), मनुष्यों के लिए संसार का लौकिक अंश मात्र चार प्रतिशत है, शेष भाग अलौकिक है- वह यों भी कि जो चीज हमें सामने दिखाई दे रही है तो निःसंदेह उसका नहीं दिखने वाला पृष्ठ भाग भी होगा ही...धर्म और अधर्म परिवर्तन के गतिसूचक आयाम हैं। असंख्य ऊर्जा-कणों का अथाह समूह यह ब्रह्मांड, किस दिशा में परिणमन शील (होनी) है, अगर अन्य किसी द्रव्य के ऊर्जा-कण उसी दिशा में प्रवाह करते हैं तो यह 'धर्म' है, उसके विपरीत या तनिक कोणीय प्रवाह करते हैं तो उस अनुपात में 'अधर्म'। धर्म के अनुकूल प्रयाण से सुख शांति सुकून (पुण्य) और समृद्धि मिलती है तो उसके प्रतिकूल होने पर कष्ट, अत्याचार, अन्याय और पीड़ा (पाप) की उत्पत्ति।

आइंसटीन जैसे महान वैज्ञानिकों ने ब्रह्मांड को ऊर्जा का भंडार माना है, यह भी कि हर पदार्थ में ऊर्जा होती है। उनके परस्पर परिवर्तन का सूत्र भी प्रतिपादित किया-

$$E= MC^2$$

E= एनर्जी, M= मास (भार) और C= प्रकाश की गति।

यह एनर्जी क्या बला है? वर्क यानी कार्य करने की क्षमता को विज्ञान में एनर्जी (ऊर्जा) कहा जाता है। और वर्क तभी होता है, जब गति हो, कोई स्थिर कण या वस्तु, बल (फोर्स) के कारण, जब अपने स्थान से हिलती (डिसप्लेस) होती है तो विज्ञान मानता है कि कार्य हुआ। अगर मूवमेंट शून्य है तो किया कार्य भी शून्य होगा। प्राकृतिक तौर पर ब्रह्मांड में सतत परिवर्तन (परिणमन) होते रहते हैं यानी कि 'कार्य' होता है रहता है, फलस्वरूप बदलाव भी आते हैं। ये बदलाव (घटनाएँ) इतने असंख्य आयामों द्वारा नियंत्रित है कि सभी पर मनुष्य का नियंत्रण संभव नहीं, कुछ के लिए ये परिवर्तन अनुकूल हैं तो कुछ के लिए प्रतिकूल। अनुकूल परिणामों की मानवीय लालसा शाश्वत है। कशमकश की इसी सीमा से परे प्रायोजित परिवर्तन को मेरी, यानी 'ईश्वर' की लीला माना जाता है तो अन्यथा नहीं।

इस बिंदु पर आकर, चलिए, वैज्ञानिक स्तर पर नास्तिक स्टीफन हॉकिंग्स की 'स्ट्रिंग थ्योरी' पर गौर करते हैं- गुरुत्वाकर्षण (ग्रेविटेशनल बल) के अतिरिक्त दो और बल ब्रह्मांड में मौजूद हैं- विद्युत् चुम्बकीय (इलेक्ट्रो मैग्नेटिक) और नाभिकीय (न्यूक्लिअर)। इलेक्ट्रॉन, प्रोटोन और न्यूट्रॉन आदि मूलभूत ऊर्जा कणों को पहले बिंदु सदृश पदार्थ समझा जाता था, लेकिन अब माना जा रहा है, ये कण वास्तव में तंतु (डोरी या रस्सी) की तरह हैं और ब्रह्माण्ड, इन तंतुओं/तंत्रियों (स्ट्रिंग) से ठसाठस भरा पड़ा है। तरंगों (वेव्स) के 'नोड' और 'एंटी-नोड' ही ये ऊर्जा कण हैं, जो हर क्षण स्पंदनशील रहकर सक्रिय रहते हैं। इन सबके एकीकरण से 'थ्योरी ऑफ एवरी थिंग' की अवधारणा बनी, जिसके अनुसार संसार में सभी क्रियाएँ या तो इन तंत्रियों के टूटने से होती हैं अथवा उनके जुड़ने से। फलस्वरूप उपजा घटनाक्रम दो तरह का होता है- 'वेक्टर' या 'स्केलर'। 'वेक्टर' के बल की दिशा (सदृश) होती है जबकि 'स्केलर' स्थिर दिशाहीन। 'वेक्टोरियल' गुण/हुनर को 'इन्द्रिय' भी कहा जा सकता है। मनुष्यों में सर्वाधिक 'पंच इन्द्रिय' क्षमता होती है, अतः वह जीवों में सर्वश्रेष्ठ है, जबकि वनस्पतियाँ 'एकेन्द्रिय' जीव हैं। अजीव पदार्थों में ऊर्जा कण तो हैं, किंतु उनका प्रभाव दिशात्मक नहीं है, अतः उनमें आए परिवर्तन अत्यंत सूक्ष्म होते हैं, नगण्य तुल्य।

मेरा गणितीय 'मॉडल'

तात्पर्य, अगर मै 'ईश्वर' अर्थात 'ब्रह्माण्ड' हूँ तो मुझमें समाई समस्त ऊर्जा का मान ही मेरा 'सुपर पॉवर' है। इस तरह मुझे चिह्नित करने के लिए एक गणितीय 'मॉडल' की संकल्पना इस तरह हो सकती है-

$$E= \sum SC^2$$

यहाँ, E= ब्रह्माण्ड की समस्त ऊर्जा, ∑= सिग्मा (कुलयोग), S= स्पेस (क्षेत्र) और C=प्रकाश गति।

अगर कहूँ कि यह 'E' ही मैं यानी 'ईश्वर' हूँ तो अन्यथा नहीं होगा?

वैज्ञानिक मान्यता है कि संसार में 'ऊर्जा का कुल

इस बिंदु पर आकर, चलिए, वैज्ञानिक स्तर पर नास्तिक स्टीफन हॉकिंग्स की 'स्ट्रिंग थ्योरी' पर गौर करते हैं- गुरुत्वाकर्षण (ग्रेविटेशनल बल) के अतिरिक्त दो और बल ब्रह्माण्ड में मौजूद हैं- विद्युत चुम्बकीय (इलेक्ट्रो मैग्नेटिक) और नाभिकीय (न्यूक्लिअर)। इलेक्ट्रॉन, प्रोटोन और न्यूट्रॉन आदि मूलभूत ऊर्जा कणों को पहले बिंदु सदृश पदार्थ समझा जाता था, लेकिन अब माना जा रहा है, ये कण वास्तव में तंतु (डोरी या रस्सी) की तरह हैं और ब्रह्माण्ड, इन तंतुओं/तंत्रियों (स्ट्रिंग) से ठसाठस भरा पड़ा है। तरंगों (वेव्स) के 'नोड' और 'एंटी-नोड' ही ये ऊर्जा कण हैं, जो हर क्षण स्पंदनशील रहकर सक्रिय रहते हैं।

मान' (यानी अनंत अनादि आयामों वाला मैं) सदैव एक सा रहता है। इसे न तो क्रिएट ('उत्पन्न') किया जाता सकता है और न ही नष्ट, जो भी घटित होता है, वह ऊर्जा के स्वरूप (फार्म) बदलने की प्रक्रिया मात्र है। मशीनें, ऊर्जा के फार्म में परिवर्तन का कार्य करती हैं। इस क्रिया में उनकी दक्षता (एफिशिएंसी) का अनुमान इस आधार पर किया जाता है कि स्वरूप बदलते हुए सिस्टम (तंत्र) की सीमाओं में कितनी ऊर्जा का ह्रास (हानि) हुआ?

चूँकि हर पल, ऊर्जा के स्वरूप में क्रमबद्ध सतत परिवर्तन करते रहना मेरी नियति है, सो मैं भी एक तरह से वह महा मशीन हूँ, जिसकी दक्षता, शत प्रतिशत (100%) है। इतने व्यापक कार्यकलाप (परिवर्तनों) के बावजूद मेरी ऊर्जा मुझसे बाहर नहीं जाती, सभी कुछ, विस्थापित संसाधन (डिस प्लेस्ड रिसोर्स) सा, कहीं न कहीं, मुझमें ही मौजूद रहता है।

'महा-ग्रिड' और स्थिरता

और तो और, तमाम परिवर्तनों और जटिल परिणमन के बावजूद मेरा संतुलन हमेशा बना रहता है- सदियों से बना है और आगे भी बना रहेगा, क्योंकि मैं सही मायने में, वीतरागी हूँ। स्वनियंत्रित...स्थिर... ध्यानस्थ...। अगर मेरा कोई जीव या अंश उन्मादी होकर असंतुलन का प्रयास करता है तो वह एक बिंदु तक आने पर स्वतः अलग कर दिया जाता है, उसी तरह जैसे विद्युत् ऊर्जा की 'ग्रिड' में, मापक फ्रीक्वेंसी पचास बनी रहती है। यदि कोई फीडर या उपकरण, अतिरिक्त भार खींचकर फ्रीक्वेंसी को कम करने का प्रयास करता है तो स्वतः 'ट्रिप' हो जाता है।

यह भी स्थापित हुआ कि मैं, यानी 'ईश्वर' वास्तव में ब्रह्माण्ड का पर्याय हूँ। स्टीफन हॉकिंग अपनी पुस्तक 'अ ब्रीफ हिस्टरी ऑफ टाइम' में मेरे और मेरी 'ऊर्जा संरचना' के बारे में वैज्ञानिक शोधों के आधार पर बहुत कुछ चौंकाने वाला बताते हैं और यह भी कि 'ईश्वर' नाम की कोई चीज है ही नहीं, जो है, इसी जन्म में है। जो भी जीव या वस्तु ब्रह्माण्ड में ऊर्जा गत विपर्यय के कारण जन्म लेती है, चक्रात्मक अवधारणा के अंतर्गत, कालांतर में उसकी मृत्यु भी सुनिश्चित है। और तो और यह ब्रह्माण्ड, जो वर्तमान में लगातार फैल या सिकुड़ रहा है, स्वयं भी समाप्ति की ओर अग्रसर है। जब सबके साथ मनुष्य भी समाप्त हो जाएगा तो निःसंदेह मेरी भी मृत्यु अनायास हो ही जाएगी।

पंचेन्द्रिय मनुष्य में मेरी ऊर्जा को दिशा प्रदान (कर्म) की जो सीमित क्षमता है, उससे उसने अपने हित में मेरी अनेक भूमिकाएँ निर्धारित कर दीं, उनमें प्रमुख हैं- अपनी तमाम अक्षमताओं और विफलताओं का ठीकरा, सुविधानुसार मेरे नाम पर फोड़ने की कला या कहना चाहिए- चातुर्य। गोया मैं कोई डस्टबिन हूँ, सारा अवांछित या अनिश्चितता का अवशिष्ट मुझमें उड़ेल दिया, यह कहकर- 'सब मेरी यानी ईश्वर की मर्जी है' ...और तो और, मनोकामना पूर्ति की दुर्बलता का लाभ उठाकर ऐसे 'कर्म-कांडों' का भ्रमजाल बुना, जिससे मेरी स्वचालित स्वतंत्र 'ऊर्जा' की दिशा में मन माफिक बदलाव लाने का दावा या दंभ कूट-कूटकर समाहित हो।

मैं फिर कहता हूँ कि मैं सदैव अविकल निश्चल और संतुलित रहता हूँ- ब्रह्माण्ड हूँ, मेरी ऊर्जा का कुल मान हमेशा, स्थिर यानी शून्य रहता है। मेरे छोटे-छोटे हिस्सों में असंतुलन पैदा होते रहते हैं या सोच समझ

कर किए जाते हैं, किन्तु निगेटिव और पॉजिटिव का कुल योग हमेशा 'शून्य' ही रहता है।

जब मैं अनंत ऊर्जा का महाजाल या तरंगों का जंजाल हूँ तो मेरी कुल परिणमन की दिशा भी होगी- है भी, जिससे मनुष्य, 'ध्यान' (मेडिटेशन) द्वारा जुड़ने की कोशिश करता है, क्योंकि वह स्वयं 'ऊर्जा कणों' का समूह है, जिसकी समग्रता की भी एक दिशा होती है। जब दोनों दिशाएँ एकाकार या आसपास हों तो प्राणी की चेतना मुझमे लीन मानी जाती है। तब वह मेरी तरह सम्यक और स्थिर होकर सुकून और आनंद पाता है। इस उपलब्धि के लिए मैं उसका उपालंभ हूँ और अपनी इस उपयोगिता पर मुझे भी गर्व है, तब क्या हर्ज है कि मैं अगर 'अज्ञात' या 'काल्पनिक' एक्स बना रहूँ और परस्पर सद्भाव के विकास हेतु मनुष्य मेरा उचित/(अनुचित भी) 'इस्तेमाल' करता रहे। अब आज के कंप्यूटर-युग में 'गेजेट्स' के बढ़ते प्रचलन का उदहारण लीजिए। लगभग सभी गेजेट्स (मोबाइल लेपटॉप आदि) का इस्तेमाल करते हैं, पर उनके अन्दर की 'टेक्नोलॉजी' का ज्ञान कितनों को है? अधिकांश उपयोग करने वाले उस ज्ञान की झंझटों में नहीं पड़ना चाहते, उन्हें सिर्फ उससे काम निकालना है सो, मैं स्वयं अपने आपको एक 'गेजेट' के रूप में पा रहा हूँ। मेरे अंदर की टेक्नोलॉजी से उन्हें क्या लेना-देना?

शोध और विमर्श करने वाले अपना काम करते रहें, करते रहेंगे। महान वैज्ञानिक आइन्सटीन ने माना भी है कि मैं अपने फैसले पासे फेंककर नहीं वरन् जटिल नियमों के तहत करता हूँ, जिन्हें पूरी तरह समझने में विज्ञान को अभी बहुत लम्बा सफर तय करना शेष है। वाह रे मनुष्य! मेरे जन्मदाता और विधाता भी...बस, फिलहाल चतुर उपभोक्ता की तरह मुझे 'यूज' (इस्तेमाल) करते रहो...ओइम्।

संपर्क : 40 करिश्मा अपार्टमेंट्स 27, इंद्रप्रस्थ एक्सटेंशन, दिल्ली—110092, मो.: 9717772068

सामूहिक विवाहों के माध्यम से समरस समाज बना रही है सेवा भारती

डॉ. नीलिमा भारती
समाज–सेविका

पर धीरे-धीरे भारतीय समाज में भी बहुत सारी बुराइयाँ आती गईं। परिवर्तित परिस्थितियाँ, विभिन्न संस्कृतियों का प्रभाव, भौतिकता की प्रधानता, नैतिक मूल्यों का पतन इत्यादि ने अन्य बुराइयों के साथ-साथ शादी जैसी पवित्र पद्धति को भी कलंकित करना शुरू किया।

भारतीय संस्कृति में यह मान्यता है कि मानव जन्म से लेकर मृत्यु तक सोलह (16) संस्कारों से गुजरता है, जिसमें शादी भी एक महत्त्वपूर्ण संस्कार है। इसमें दो अनजान व्यक्ति अपनी पूरी जिंदगी एक-दूसरे के साथ विश्वास एवं अपनत्व के साथ बिताते हैं। वे दोनों अपना-अपना 'मैं' त्यागकर 'हम' बन जाते हैं। दोनों मिलकर घर एवं समाज की परंपरा को तथा पीढ़ियों को आगे बढ़ाते हैं। हमारे यहाँ विश्वास है कि ये रिश्ते ईश्वर द्वारा निर्धारित हैं। यह सकारात्मक भावना इस रिश्ते को बहुत मजबूत बनाती रही है। पश्चिम के देशों में भी यह धारणा है कि भारतीय शादी ज्यादा सफल होती है। इसका आधार इन्हीं सकारात्मक तत्त्वों को जाता है। स्वार्थ से ऊपर उठकर, समर्पित होकर दोनों पक्ष नई गृहस्थी सुचारू रूप से चलाते हैं।

पर धीरे-धीरे भारतीय समाज में भी बहुत सारी बुराइयाँ आती गईं। परिवर्तित परिस्थितियाँ, विभिन्न संस्कृतियों का प्रभाव, भौतिकता की प्रधानता, नैतिक मूल्यों का पतन इत्यादि ने अन्य बुराइयों के साथ-साथ शादी जैसी पवित्र पद्धति को भी कलंकित करना शुरू किया। पितृप्रधान समाज में लड़कों एवं लड़कियों में भेदभाव शुरू हुआ। इसी सोच ने दहेज प्रथा को जन्म दिया और धीरे-धीरे यह एक विकराल रूप में उभरता गया। वैसे तो हर माता-पिता अपनी खुशी से सामर्थ्य अनुसार 'कन्या अंश' जरूर जोड़ते हैं या निकाल देते हैं। पर यह समस्या दिनोदिन प्रतिष्ठा, शौक एवं शोषण का रूप लेती चली गई और हर तबके (वर्ग) के लिए यह पवित्र व्यवस्था परेशानी और चिंता का कारण बनती गई। निम्न आय वर्ग तथा गरीबों के लिए यह एक अभिशाप बनती गई। जैसे लड़की का पिता होना कोई बड़ा गुनाह हो।

संघ की प्रेरणा से सामाजिक कार्यों के लिए गठित स्वैच्छिक संस्था 'सेवा भारती' समाज में सामाजिक समरसता का कार्य करती है। समाज के दलित, शोषित एवं वंचित वर्गों के बीच जाकर यह संस्था उनमें आत्म सम्मान, निर्भरता एवं अपनत्व का भाव जगाती है। उन वर्गों के उत्थान के लिए कार्य करती है। इसके लिए सेवा भारती शिक्षा, स्वास्थ्य, आत्म-निर्भरता तथा संस्कार के कार्यों को माध्यम बनाती है। इस तरह 'सेवा भारती' आज चार दशकों से निरंतर समाज की सेवा विभिन्न रूपों में करते हुए एक समरस समाज के निर्माण में लगी है।

इन कार्यों को करते हुए 'सेवा भारती' के कार्य-कर्ताओं को यह महसूस हुआ कि इन वर्गों में लड़कियों की शादी भी एक गंभीर समस्या है। उनके जीवन में अगर बदलाव लाना है, तो उनके बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कार तथा उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के प्रयास के साथ-साथ उन्हें इस समस्या में भी हम कुछ सहयोग कर सकें, तो उनके जीवन को कुछ आसान बना सकते हैं। उनके जीवन के बहुत बड़ा बोझ जैसा वह समझते हैं का भार हल्का कर सकते हैं। समाज के जागरूक एवं संवेदनशील दान-दाताओं ने भी इस कार्य के लिए आगे आकर सहयोग करने की प्रेरणा दी।

फिर सेवा भारती दिल्ली ने सामूहिक विवाह जैसा पुनीत कार्य शुरू किया। चूँकि भारतीय समाज इसे पुण्य का कार्य समझता है, अतः इसमें सभी ने (कार्यकर्ता, दान-दाताओं ने) स्वेच्छा से आगे आकर उत्साह से इस कार्य को करना शुरू किया। इस तरह यह प्रकल्प काफी सफल होता रहा।

इसके लिए प्रत्येक विभाग में एक समिति में पुरुष बंधु एवं बहनें, दोनों तरह के कार्यकर्ता शामिल हैं। पूर्वी दिल्ली की समिति में वीण महतो, मनोरमा मिश्रा, भारती बंसल एवं किरण आहूजा इत्यादि का उत्साह देखते बनता है। समिति ने चिंतन एवं मंथन कर यह निष्कर्ष निकाला कि इसमें सेवा के साथ-साथ सकारात्मक एवं सामूहिकता की भावना हो। सेवा बस्तियों में जहाँ इनका पहले से ही सेवा कार्य चल रहा है, वहाँ से आवेदन आते हैं। फिर कुछ कार्यकर्ता उनके घरों में जाकर छानबीन करते हैं। लड़की की उम्र, परिवार की स्थिति, उनका स्थाई पता इत्यादि। जहाँ उन्होंने शादी तय की है। उनकी भी जानकारी लेते हैं। लड़के की उम्र, आधार कार्ड, व्यवसाय, पता इत्यादि। संतुष्ट होने पर दोनों परिवार को एक निश्चित तिथि को बैठाकर कार्यकर्ताओं द्वारा उनकी कॉन्सिलिंग (Counciling) की जाती है। शादी की व्यवस्था में लड़की वाले लोगों को भी शामिल किया जाता है। उन्हें आर्थिक भार से मुक्त रखा जाता है। बारात एवं सारात की ओर से 25-25 लोगों को ही शामिल करने का अनुरोध रहता है। यानी एक जोड़ी शादी में 50 लोग। इस तरह अगर 20-25 जोड़ियों की शादी एक साथ हुई तो कुल 1000-1200 लोग, साथ में 'सेवा भारती' परिवार के 1000-1500 लोग इस तरह कुल मिलाकर 2 हजार से 3 हजार लोगों की व्यवस्था करनी होती है। समिति यह तय करती है कि बारात कैसे आएगी, घोड़ी की व्यवस्था, स्वागत की व्यवस्था, बारात आगमन पर नाश्ता, खाना, ये सारी बातें सुनिश्चित की जाती हैं। नाश्ते एवं खाने की मेनू में क्या-क्या भोजन हो, यह समिति में पहले से तय कर लिया जाता है। समाज के सम्माननीय दान-दाताओं द्वारा ही सभी खर्च वहन किए जाते हैं।

जयमाला, फोटोग्राफी, समधी मिलन, इत्यादि विधि स्टेज पर भी संपन्न होने के बाद मंडप में वर-वधु को लाया जाता है। एक मंडप में दो जोड़ियों की शादी एक पंडित जी के द्वारा करवाई जाती है। विदाई में एक साधारण गृहस्थी के लिए कम-से-कम जितनी चीजों की आवश्यकता होती है, सेवा भारती उपलब्ध करवाती है। दो फोल्डिंग खाट, गद्दे, तकिया, चादर, रजाइया, कंबल, रसोई में आवश्यक सभी बरतन, सिलाई मशीन, लड़के के लिए घड़ी, 5 जोड़ी कपड़े, गंजी, जूते-मोजे, लड़की के बक्से में 4-5 साड़ियाँ, दो तीन सूट, सिंगार पिटारी, सास की साड़ी इत्यादि। लड़की को एक अच्छी साड़ी में विदाई, बिछुआ, पायल एवं चाँदी का मंगलसूत्र आदि की व्यवस्था की जाती है।

कुछ दानदाता सोने का सामान या कीमती उपहार भी देना चाहते हैं, पर नियमतः उनको मना कर दिया जाता है। इसका यह भाव है कि यह कार्य सेवा भाव से निरंतर समरूप से चलता रहे। दिखावे या वाहवाही का रूप न ले। इस सामूहिक विवाह में सभी समुदाय की लड़कियों की शादी सेवा भारती द्वारा संपन्न करवाई जाती है। सिख, बंगाली, मुस्लिम लड़कियों की शादी भी एक ही रीति-रिवाज द्वारा संपन्न करवाई जाती है।

विदाई के बाद लड़कियों को पगफेरे के लिए बुलाया जाता है। बाद में सेवा भारती के किसी कार्यक्रम में भी आती हैं। कभी परिवार के साथ कभी सिर्फ पति के साथ। कुछ लड़कियाँ तो सेवा भारती के कार्यों से भी जुड़ गईं। प्रतिवर्ष लगभग 100-150 लड़कियों की शादी सेवा भारती द्वारा संपन्न कराई जाती है।

एक लड़की की शादी में 51 हजार तक का बजट रखे जाने की कोशिश होती है और खुशी की बात यह है कि सभी खर्च इसी समाज के उदार, संवेदनशील और जागरूक दान-दाताओं द्वारा आसानी से पूर्ण हो जाता है। शादी में आए हुए समाज के मेहमानों या सेवा भारती के कार्यकर्ताओं द्वारा जो भी उपहार लाया जाता है, उन सभी की यह समिति एक लिस्ट बनाकर रख लेती है और पूरे वर्ष जब भी कोई गरीब कन्या की शादी इन बस्तियों में लोग करते हैं या शिक्षिका, निरीक्षिका या कोई गरीब कार्यकर्ता के घरों की शादी में आवेदन आने पर कुछ सहयोग होता रहता है। इस तरह यह कार्य अनवरत चलता रहता है।

आज से 25 वर्ष पहले 'रामजानकी विवाह समिति' से मिलकर 'सेवा भारती दिल्ली' ने माननीय गोपालजी अगेड़ा (मुगली घुट्टी) के सहयोग से एक लड़की का विवाह संपन्न करवाया गया, तब से लेकर आज तक यह प्रकल्प वट-वृक्ष की तरह विशाल बन चुका है। इसकी शाखाएँ चारों तरफ फैल चुकी हैं। अन्य प्रांतों में भी यह कार्य उत्साह के साथ संपन्न हो रहे हैं। 25 वर्ष पूर्व सेवा भारती द्वारा ब्याही गई लड़की आज भी सेवा भारती से जुड़ी है। उसका पुत्र मेडिकल का छात्र है।

यह कार्यक्रम अपने साथ इतनी सकारात्मक ऊर्जा लेकर आता है कि इसका अंदाजा इसकी समीक्षा करने पर पता लगता है, जिस माता-पिता की बेटी की शादी होती है, वह परिवार गंगा-स्नान का सुख पाते हैं, जो दान दाता इसमें सहयोग करते हैं, वह परम धाम जाने की सीढ़ी बनाकर परमानंद में आ जाते हैं। जो कार्यकर्ता कार्य करते हैं, वे पावन यज्ञ में आहुति डालने का सुख पाते हैं और जो नव वर-वधु अपनी गृहस्थी शुरू करते हैं, वे नवीन जीवन पाकर नए उत्साह के साथ समाज के नव-निर्माण का, सृजन का सुख पाते हैं।

उपाध्यक्ष, सेवा भारती, वैशाली, महानगर
संपर्क : : 9810712336

जयमाला, फोटोग्राफी, समधी मिलन, इत्यादि विधि स्टेज पर भी संपन्न होने के बाद मण्डप में वर-वधु को लाया जाता है। एक मण्डप में दो जोड़ियों की शादी एक पंडित जी के द्वारा करवाई जाती है। विदाई में एक साधारण गृहस्थी के लिए कम-से-कम जितनी चीजों की आवश्यकता होती है, सेवा भारती उपलब्ध करवाती है। दो फोल्डिंग खाट, गद्दे, तकिया, चादर, रजाइया, कंबल, रसोई में आवश्यक सभी बरतन, सिलाई मशीन, लड़के के लिए घड़ी, 5 जोड़ी कपड़े, गंजी, जूते-मोजे, लड़की के बक्से में 4-5 साड़ियाँ, दो तीन सूट, सिंगार पिटारी, सास की साड़ी इत्यादि। लड़की को एक अच्छी साड़ी में विदाई, बिछुआ, पायल एवं चाँदी का मंगलसूत्र आदि की व्यवस्था की जाती है।

केरल की मस्जिद में विवाह रचाकर हिंदू जोड़े ने कायम की मिसाल

एक ओर देश में जहाँ नागरिकता कानून को लेकर हिंदू-मुस्लिम के बीच खाई पैदा करने की कोशिश की जा रही है तो वहीं दूसरी ओर उन्माद के इस माहौल में एक हिंदू जोड़े ने विवाह रचाकर मिसाल कायम की है। इस जोड़े ने धार्मिक, सामाजिक बंधनों की बेड़ियों को तोड़कर आपसी नफरत पैदा करने वालों को भाईचारे का संदेश दिया है।

बताया गया कि मस्जिद में हुई इस विवाह में मंत्र पढ़े गए और जोड़े ने आग के समक्ष सात फेरे लिये। दुलहन अंजू और दूल्हे शरत ने एक-दूसरे को माला पहनाई। मस्जिद परिसर में मौजूद पंडित ने विधि-विधान से दोनों की शादी करवाई।

दरअसल यह केरल के अलप्पुझा कयाकमुलम का मामला है। जहाँ अंजू की माँ शादी के लिए पैसे जुटाने में असमर्थ थी, जिसके बाद मस्जिद समिति ने उसकी मदद करने का फैसला किया और मस्जिद में हिंदू रीति-रिवाजों के अनुसार शादी कराई गई।

चेरुवल्ली जमात समिति के सचिव नुजुमुद्दीन अलुम्मूट्टील ने कहा कि शादी के लिए मस्जिद समिति ने यादगार के तौर पर दस सोने की उपहार और दो लाख रुपये देने भी दिया गया। शादी हिंदू परंपरा से हुई और इस शादी में करीब एक हजार लोगों के खाने का इंतजाम किया था।

नुजुमुद्दीन ने बताया कि साल 2018 में पिता अशोकन की मौत के बाद और परिवार के हालात और खराब हो गए। उन्होंने कहा कि परिवार के सबसे छोटे बच्चे की पढ़ाई के लिए मैंने निजी तौर पर मदद की है। इस बार मस्जिद समिति से मदद की अपील की गई थी और शादी का खर्च भी बहुत ज्यादा है, इसलिए समिति ने मदद करने का फैसला किया था। ©पाँ.स्तं.

लोकतंत्र का
पाँचवाँ स्तंभ
सकारात्मक चिंतन एवं विकास का संवाहक

पी.टी. 62/20 कालकाजी, नई दिल्ली-19
फोन नं. +91-11-26231999
इ.मेल: editorpanchwastambh@gmail.com
panchvan.stambh@gmail.com

(मासिक पत्रिका) का सदस्यता फार्म

पूरा नाम ....
पता ....
....
फोन .... मोबाइल .... ई–मेल ....

सदस्यता वार्षिक ₹220, पांच वर्षीय ₹1000, आजीवन ₹2500

सदस्यता राशिः ₹.......... नकद/मनीऑर्डर/ड्राफ्ट क्रमांक .... दिनांक ....

कृपया सदस्यता राशि मनीऑर्डर/ड्राफ्ट "Panchwa Stambh" (पाँचवाँ स्तंभ) के नाम पी.टी 62/20 कालकाजी, नई दिल्ली–110019 के पते पर भेंजे।

RTGS/NEFT के लिए "Panchwa Stambh", Central Bank Of India A/c No. 3504660941, IFSC Code: CBIN0280308, Branch Name: Kalkaji, New Delhi-19 के खाते में जमा कर सूचित करें।

स्थान .... दिनांक .... हस्ताक्षर ....

प्रिय पाठको, यह आपके प्रेम का ही परिणाम है कि आज पाँचवाँ स्तंभ पत्रिका देश के 28 राज्यों में पहुंच रही है और निरंतर आपकी सराहना मिल रही है। आपसे अनुरोध है आप इसका स्वयं सदस्य बनें एवं अपने इष्ट मित्रों को भी सदस्य बनायें।

मोदी सर ने छात्रों को दिए तनाव से बचने के मंत्र

शिक्षकों से छात्रों का ऐसा नाता होना चाहिए वे अपनी छोटी-छोटी बातों को भी साझा करें। छात्रों को रात में या दिन में पढ़ना चाहिए, के सवाल पर उन्होंने कि रात में पढ़ाई के वक्त आपके दिमाग में दिन भर की पूरी घटनाएं चलती रहती हैं। ऐसे में सूर्योदय से पहले सुबह यदि पढ़ाई की जाए तो बेहतर होगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने छात्रों और शिक्षकों के साथ परीक्षा पर चर्चा की। पीएम मोदी ने अपनी चर्चा में बच्चों को परीक्षा के तनाव से बचने के मंत्र दिए। पीएम का तालकटोरा स्टेडियम पहुंचे पर उनकी बच्चों ने अगवानी की। इस दौरान पीएम को बच्चों ने कई तरह की पेंटिंग भी दिखाई।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी विधार्थी और उनके माता-पिता की तनाव दूर करने के लिए 'परीक्षा पे चर्चा' की। प्रधानमंत्री ने अपने चर्चा के दौरान छात्रों को परीक्षा के तनाव से बचने और नुस्खे बताए। खुद को बच्चों का दोस्त बताते हुए उन्होंने कहा कि आपसे आगे भी जुड़े रहने का प्रयास करूँगा। उन्होंने छात्रों से कहा कि आने वाला कल आपका है। उन्होंने कहा कि कभी कुछ बनने के नहीं बल्कि कुछ करने के सपने पाले, इसमें उन्हें सफलता मिलेगी।

2000 छात्र और शिक्षकों ने लिया भाग

प्रधानमंत्री पिछले साल भी छात्रों संग यह चर्चा की थी। दिल्ली के तालकटोरा इनडोर स्टेडियम में हुई इस चर्चा में छात्रों और शिक्षकों से परीक्षा के तनाव को दूर करने पर संवाद किया। इस कार्यक्रम में कुल 2,000 विधार्थी और शिक्षकों ने हिस्सा लिया, जिनमें से 1,050 छात्रों का चयन निबंध प्रतियोगिता के जरिए किया गया था।

बनने के नहीं, करने के सपने पालें

प्रधानमंत्री मोदी से जब यह सवाल पूछा गया कि किसी परीक्षा की तैयारी के लिए क्या करना चाहिए, इसपर उन्होंने कहा कि हम कभी भी कुछ बनने के सपने न पालें। क्योंकि इसमें निराशा हो सकती है। हम कुछ करने के सपने देखें। जीवन को बनने के सपने से जोड़ने के बजाए, कुछ करने के सपने से जोड़ना चाहिए। कुछ करने के सपने से जोड़ोगे तो आपको कभी भी परीक्षा का प्रेशर नहीं रहेगा।

रात को पढ़ें या सुबह?

शिक्षकों से छात्रों का ऐसा नाता होना चाहिए वे अपनी छोटी-छोटी बातों को भी साझा करें। छात्रों को रात में या दिन में पढ़ना चाहिए, के सवाल पर उन्होंने कि रात में पढ़ाई के वक्त आपके दिमाग में दिन भर की पूरी घटनाएं चलती रहती हैं। ऐसे में सूर्योदय से पहले सुबह यदि पढ़ाई की जाए तो बेहतर होगा। सोने के बाद जब आप उठते हैं तो एक नए दिन की शुरुआत होती है। स्वस्थ मन से आप पढ़ेंगे और यह आपके लिए ज्यादा लाभदायी होगा।

बड़े होने पर भी बढ़ाएँ बच्चों का हौसला

हमें अपने बच्चों की क्षमता का अंदाजा होना चाहिए और उसी के अनुसार उनको प्रोत्साहित करना चाहिए। माता-पिता को लेकर उन्होंने कहा कि आपको यह सोचना चाहिए कि जब बच्चे छोटे थे तो आप कैसा व्यवहार करते थे। छोटा बच्चा जब गिर जाता है तो मां ताली बजाती है और कहती है कि कोई बात नहीं। आपको उसके बड़े होने पर भी ऐसा ही व्यवहार करना चाहिए। माता-पिता को बच्चों को मदद करने की अपनी मानसिकता हमेशा जिंदा रखनी चाहिए।

लाइन में रहना, बिजली बचाना भी श्रेष्ठ नागरिक का कर्तव्य

अधिकार और कर्तव्यों को लेकर पूछे गए एक सवाल को लेकर प्रधानमंत्री ने कहा कि दोनों अलग नहीं हैं। उन्होंने कहा कि हमारे कर्तव्यों में ही अधिकार भी समाहित हैं। उन्होंने कहा कि हम सभी को नागरिक के नाते कर्तव्यों का पालन करना चाहिए। लाइन में रहना, बिजली की कम खपत करना और टिकट लेकर ही चलने जैसी चीजों के जरिए हम अपने कर्तव्य का निर्वहन कर सकते हैं।

तकनीक पर करें नियंत्रण, समय न करें बरबाद

नई तकनीक को सीखने के लिए छात्रों को प्रेरित करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि हम सिर्फ इसका ज्ञान ही नहीं होना चाहिए बल्कि उसकी उपयोग अपने हित के लिए करना सीखना चाहिए। ऐसा देखा जा रहा है कि बहुत से लोगों का समय तकनीक चुरा लेती है। यह सोचिए कि आखिर स्मार्टफोन कितना समय चोरी कर लेता है। तकनीक को जीवन में साथी के तौर पर जोड़ें, लेकिन उसे जिंदगी का हिस्सा न बनने दें।

अतिरिक्त गतिविधियों (एक्स्ट्रा ऐक्टिविटी) के लिए भी दबाव ठीक नहीं

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि यह वह दौर है, जब माता-पिता बच्चों पर एक्स्ट्रा ऐक्टिविटी के लिए भी दबाव डालने लगे हैं। माँ-बाप का भी काम है कि यह देखें कि वह बच्चों की रुचि देखें और उसके मुताबिक उन्हें अवसर दें। बच्चों की अतिरिक्त गतिविधियों को भी कहीं न कहीं बांधना चाहिए, तभी बच्चे अपनी क्षमता का सही आकलन कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि यदि आप स्कूली जीवन में विविधताओं के साथ आगे बढ़ते हैं तो फिर आपके जीवन में निराशा नहीं रहती।

प्रधानमंत्री ने खुद को बताया बच्चों का दोस्त

परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम में प्रधानमंत्री मोदी एक दोस्त की तरह छात्रों से मुखातिब हुए। उन्होंने संबोधन की शुरुआत करते हुए कहा, ''उनका यह दोस्त एक बार फिर उनके सामने है।'' प्रधानमंत्री ने छात्रों को 2020 के दशक की अहमियत समझाई। उन्होंने कहा कि यह दशक हिंदुस्तान के लिए बहुत अहम है। इस दशक में देश जो भी करेगा, उसमें 10वीं और 12वीं के विद्यार्थियों का सबसे ज्यादा योगदान होगा। मोदी ने कहा कि यह दशक नई ऊँचाइयों को पाने वाला बने, यह सबसे ज्यादा इस पीढ़ी पर निर्भर करता है।

परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम दिल को छूने वाला

प्रधानमंत्री ने कहा कि उन्होंने कहा कि वह कई साल तक मुख्यमंत्री रहे, फिर लोगों ने उन्हे प्रधानमंत्री बना दिया। इस कारण कई जगह जाना होता है। कुछ जानने को मिलता है, कुछ सीखने को मिलता है। हर का अपने महत्त्व होता है। लेकिन अगर कोई मुझे कहे कि इतने कार्यक्रमों के बीच परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम मेरे दिल के करीब है और दिल को छूने वाला है।

प्रधानमंत्री बोले, #Withoutfilter से करते हैं चर्चा

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि आपके माता-पिता का बोझ भी मुझे हल्का करना चाहिए, जो काम आपके माता-पिता करते हैं, मैं भी सामूहिक रूप से कर लूँ। मैं भी तो आपके परिवार का सदस्य हूँ। इस दौरान प्रधानमंत्री ने बच्चों से पूछा क्या वह उनके लिए बोझ तो नहीं है। उन्होंने कहा कि मैं आपके साथ #Withoutfilter के साथ चर्चा करता हूँ।

चंद्रयान के उदाहरण से दी प्रेरित होने की सीख

प्रधानमंत्री ने इस दौरान विफलता से निपटने के लिए छात्रों को गुर दिए। उन्होंने कहा, ''चंद्रयान के लॉन्चिंग के दिन आप सब रात को जाग रहे थे, आपका चंद्रयान को भेजने में कोई योगदान नहीं था, वैज्ञानिकों ने मन लगाकर काम किया, जब चंद्रयान सफल नहीं हुआ तो आप सबके साथ पूरा देश गमगीन हो गया था। कभी-कभी विफलता हमको ऐसा कर देती है। उन्होंने कहा, ''उस दिन मैं भी वहाँ मौजूद था। कई लोग कह रहे थे कि मोदी को इस कार्यक्रम में नहीं जाना चाहिए था, कुछ लोग कह रहे थे कि आप जाएंगे और फेल हो गया तो क्या करोगे, मैंने कहा था इसीलिए मुझे जाना चाहिए। और जब आखिर कुछ मिनट थे मैं देख रहा था वैज्ञानिकों के चहरों पर बदलाव दिख रहा है, तनाव दिख रहा है, मुझे लग रहा था कि कुछ अनहोनी हो रही है, फिर थोड़ी देर में आकर मुझे बताया, मैंने कहा कि ठीक है कि आप ट्राई करिए फिर 10 मिनट बाद बताया नहीं हो रहा है, फिर मैंने चक्कर लगाया, रात को करीब 3 बजे मैं अपने होटल पर गया। मैं चैन से बैठ नहीं पाया।

चंद्रयान पर बोले पीएम मोदी, उस रात सोने का मन नहीं था

प्रधानमंत्री बोले, ''सोने का मन नहीं कर रहा था। हमारी पीएमओ की टीम अपने कमरे में चली गई थी। आधा-पौन घंटा ऐसे ही बिताया चक्कर काट रहा था, मैंने फिर सबको बुलाया। मैंने कहा कि देखिए सुबह हमको जाना है, सुबह हम जल्दी नहीं जाएंगे, देर से जाएंगे। ये वैज्ञानिक सुबह 7 से 7.30 एकत्र हो सकते हैं क्या? उनसे पूछिए।'' उन्होंने कहा कि अगर मैं चला भी जाता तो देश में कोई नोटिस भी नहीं करता लेकिन मैं खुद को समझा नहीं पा रहा था।

विफलता से भी मिल सकता है सफलता का गुर

उन्होंने कहा, ''मैंने वैज्ञानिकों को इकट्ठा किया, मैंने अपनी बात कही, उनके परिश्रम को सराहा। एक पूरा माहौल बदल गया, पूरे देश का माहौल बदल गया। बाद में क्या हुआ आपने टीवी पर देखा है। हम विफलताओं में भी सफलता की शिक्षा पा सकते हैं। हर प्रयास में हम उत्साह भर सकते हैं और किसी चीज में आप विफल हो गए, इसका मतलब ये है कि आप सफलता की ओर चल पड़े हैं। अगर वहीं रुक गए फिर तो कितनी भी ट्रैक्टर लगा दो, आप नहीं निकल सकते हो।''

सिर्फ परीक्षा के अंक ही जिंदगी नहीं

प्रधानमंत्री ने एक छात्र के सवाल पर किया क्या परीक्षा का अंक ही सबकुछ है, इसपर पीएम ने कहा, ''कोई परीक्षा पूरी जिंदगी नहीं है बल्कि एक पड़ाव है। हमें इसे पूरे जीवन का महत्त्वपूर्ण पड़ाव मानना चाहिए। माँ-बाप से मैं प्रार्थन करना चाहता हूँ कि ये नहीं तो कुछ नहीं का मूड नहीं बनाना चाहिए। कुछ न हुआ तो जैसे दुनिया लुट गई, ये सोच आज के युग में उपयुक्त नहीं है। जीवन के किसी भी क्षेत्र में जा सकते हैं।''

जब छात्र ने दिखाई पीएम मोदी को उनकी पेंटिंग

प्रधानमंत्री जब स्टेडियम पहुँचे तो छात्रों ने कई तरह की पेंटिंग दिखाई। छात्रों ने पर्यावरण, शिक्षा और परीक्षा के तनाव के बारे में पेंटिंग दिखाई। छात्रों ने देश के महापुरुषों के मूर्ति भी दिखाया। इस बीच, एक छात्र ने पीएम मोदी के समुद्र तट पर उनके द्वारा की गई सफाई की पेंटिंग भी दिखाई।

केंद्रीय मानव संसाधन मंत्री रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने पीएम मोदी का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि अंतिम क्षण तक हर व्यक्ति परीक्षा के लिए काम करता है। ©पाँ.स्तं.

बड़ा कमरा

राजेश अहूजा

मेहमानों के लौट जाने के बाद सौम्या अपने मम्मी-पापा के साथ बैठकर उन उपहारों को खोलने लगी, जो उसे जन्मदिवस पर मिले थे। हर उपहार को खोलने से पहले उसके आकार और वजन से वह इस बात का अनुमान लगाती कि रंग-बिरंगे कागज के पीछे से क्या निकलेगा। कभी वह चहक उठती, तो कभी मुँह बनाकर कहती, 'ओह! ये तो मेरे पास पहले से ही है।' एक-एक करके सब चीजें देख लेने के बाद उसने नाटकीय नाराजगी दिखाते हुए मम्मी-पापा से कहा, ''आपने अब तक कोई गिफ्ट नहीं दिया। सुबह से कितनी बार पूछ चुकी हूँ। हर बार बात को टाल देते हैं। कुछ लाए भी हैं, मेरे लिए या नहीं?''

''लाए क्यों नहीं हैं, अभी देते हैं,'' मम्मी ने मुसकराते हुए उसके पापा की ओर देखा। वे हँसते हुए दूसरे कमरे में गए और जब लौटे तो उनके हाथ में तोते का पिंजरा देखकर सौम्या का चेहरा खिल उठा, ''वाओ, थैंक्यू पापा, थैंक्यू मम्मी,'' कहते हुए वह उनसे लिपट गई। उसी समय तोते का नामकरण हो गया। उसे वही जाना-पहचाना नाम मिला, जो पिंजरे में बंद तोते को अकसर मिलता है- 'मिट्ठू'।

अब सौम्या का पूरा दिन मिट्ठू के साथ बीतने लगा। सुबह तैयार होते-होते वह उससे ढेर सारी बातें करती और स्कूल से लौटने पर सबसे पहले उसके पास ही जाती। हालाँकि वह केवल दस वर्ष की थी, लेकिन मिट्ठू की सारी जिम्मेदारी उसने सँभाली हुई थी। दोस्त के साथ-साथ वह उसकी माँ भी बन गई थी। उसके खाने-पीने और पिंजरे की साफ-सफाई का पूरा ध्यान वह स्वयं रखती थी। कुछ दिनों में उसने उसे 'मिट्ठू' और 'सौम्या' बोलना सिखा दिया। उसके मुँह से तीखी आवाज में पहली बार अपना नाम सुनने पर उसे वैसा ही सुख मिला था, जैसा एक माँ को अपने बच्चे के मुँह से पहली बार 'माँ' शब्द सुनकर मिलता है। ''मम्मी-मम्मी, मिट्ठू ने मेरा नाम बोला, पापा सुनो, मिट्ठू 'सौम्या' बोल रहा है,'' कहते हुए उसने पूरा घर सर पर उठा लिया था। उसने यह बात स्कूल में अपने सभी दोस्तों को भी बताई थी। धीरे-धीरे मिट्ठू अपने और सौम्या के नाम के अलावा 'गुड मॉर्निंग' और 'गुड नाइट' बोलना भी सीख गया।

एक दिन सौम्या दबे पाँव आई और मिट्ठू के पीछे जाकर आवाज लगाई, ''मिट्ठू!'' जैसे ही वह घूमा, वह भागकर फिर से उसके पीछे पहुँच गई और दुबारा आवाज लगाई, ''मिट्ठू!'' बहुत देर तक वह ऐसे ही खेलती रही। इस दौरान उसने महसूस किया कि मिट्ठू को पिंजरे के अंदर घूमने में मुश्किल हो रही है। वह तुरंत माँ के पास गई और उनसे बोली, ''मम्मी, क्या हम मिट्ठू के लिए बड़ा पिंजरा नहीं ला सकते। इस छोटे-से पिंजरे में वह आसानी से हिल-डुल भी नहीं पाता। कितना परेशान रहता है बेचारा!''

''इस बारे में तो हमने सोचा ही नहीं,'' माँ ने बात को समझते हुए कहा, ''बहेलिए ने जो दिया, हम वही ले आए। मैं तेरे पापा से कहूँगी, वे कल दफ्तर से आते हुए नया पिंजरा लेते आएँगे।''

अगले दिन झोंपड़ी के आकार का नया पिंजरा आ गया। पहले पिंजरे से लगभग दुगना बड़ा। मिट्ठू का कमरा बड़ा हो गया और वह पहले से ज्यादा खुश रहने लगा।

कुछ दिनों बाद सौम्या, हाथ में हरी मिर्च लेकर उसके साथ खेलने आई। उसने आधी मिर्च पिंजरे की तारों के बीच से भीतर सरका दी। जब मिट्ठू उसे खाने के लिए वहाँ पहुँचा तो उसने मिर्च वापस खींच ली और भागकर दूसरी ओर पहुँच गई। खेलते-खेलते वह सोचने लगी, 'कितना मजा आता अगर मैं मिट्ठू के साथ खुले में खेल पाती।' यह विचार आते ही मिर्च मिट्ठू की चोंच में थमाकर वह पापा के पास पहुँच गई।

''पापा, क्या मैं मिट्ठू को थोड़ी देर के लिए अपने कमरे में खुला नहीं छोड़ सकती? इससे उसे अपने पंख फैलाने के लिए ज्यादा जगह मिल जाएगी।''

''अगर उसे खुला छोड़ेंगे तो वह उड़ जाएगा। फिर तुम उसके साथ कैसे खेलोगी?''

''ऐसे कैसे उड़ जाएगा। मैं दरवाजा बंद रखूँगी। वह रहेगा तो कमरे में ही।''

''लेकिन फिर उसे पिंजरे में कैसे डालोगी?''

''बड़ा आसान तरीका है। जब उसे भूख लगेगी तो वह पिंजरे में दाल खाने जाएगा। तब मैं पिंजरा बंद कर दूँगी।'' सौम्या समझाते हुए बोली।

''अच्छा ठीक है। आजकल तो तुम उसे कुछ देर के लिए कमरे में खुला छोड़ सकती हो। लेकिन गरमी के मौसम में ऐसा मत करना, नहीं तो वह पंखे से टकरा जाएगा।''

''ठीक है पापा,'' सौम्या खुश होकर झट-से कमरे की तरफ भागते हुए बोली।

अब हर रोज एक-दो घंटे के लिए मिट्ठू का कमरा बड़ा हो जाता।

उसे भी पिंजरे का किवाड़ खुलने का इंतजार रहता था। जैसे ही किवाड़ खुलता, वह बाहर आ जाता। कभी सौम्या की पढ़ने की मेज पर बैठता, कभी उसके कंधे पर और कभी बंद खिड़की के पास बैठकर, बाहर आकाश की ओर देखता रहता।

सौम्या की परीक्षाएँ निकट आ रही थीं। अब वह मिट्ठू के साथ ज्यादा समय नहीं बिता पाती थी। वह अकेला बोर होता रहता था। मौसम बदल रहा था। सौम्या को पापा की बात याद थी कि पंखा चलते हुए उसे खुला नहीं छोड़ना है। 'कुछ दिनों बाद, जब बिना पंखे के रहना मुश्किल हो जाएगा, तो मिट्ठू को हमेशा पिंजरे में रहना पड़ेगा,' यह बात सोचकर वह परेशान रहने लगी।

थोड़ी देर तक इधर-उधर तलाश करने के बाद सौम्या का चेहरा उतर गया। उसे मिट्ठू कहीं दिखाई नहीं दिया। सब वापस घर की ओर चल पड़े। सौम्या का मूड ठीक करने के लिए माँ ने कहा, ''चल, तुझे कहीं घुमाने ले चलते हैं। खाना बाहर ही खाकर आएँगे।'' माँ की इस बात का कोई उत्तर दिए बिना वह सिर लटकाए धीरे-धीरे चलती रही।

इतवार का दिन था। मम्मी साफ-सफाई मे लगी थीं। पापा फाइलों और कागजों में उलझे हुए थे। अचानक सौम्या चिल्लाती हुई आई, ''पापा, मिट्ठू उड़ गया। मम्मी-मम्मी, मिट्ठू उड़ गया।''

''कैसे उड़ गया?'' पापा ने पूछा, ''क्या खिड़की और दरवाजा बंद नहीं किए थे?''

''दरवाजा तो बंद किया था,'' सौम्या रोते-रोते बोली, ''लेकिन, खिड़की खुली रह गई थी।''

''रात को सोते समय तो मैंने खिड़की बंद की थी। सुबह किसने खोली?'' माँ ने पूछा।

''सॉरी मम्मी...मैंने खोली थी,'' सौम्या सिसकियाँ भरते हुए बोली, ''अब मौसम बदलने लगा है, मुझे थोड़ी गरमी लग रही थी, तो मैंने खिड़की खोल दी। मुझे इस बात का ध्यान नहीं रहा कि मैंने मिट्ठू को कमरे में खुला छोड़ा हुआ है।''

''कोई बात नहीं बेटा,'' माँ घुटनों के बल जमीन पर बैठ गईं और उसे अपने सीने से चिपकाकर, उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोली, ''हम तुम्हें एक और तोता ला देंगे।''

''नहीं, मुझे दूसरा तोता नहीं चाहिए, मुझे मिट्ठू ही चाहिए,'' कहकर बिलखते हुए वह पापा के पास पहुँची और उनका हाथ पकड़कर उन्हें खींचते हुए बोली, ''चलिए पापा, मिट्ठू को ढूँढ़ने चलते हैं।''

''बेटी, ऐसे मिट्ठू थोड़ी न मिल जाएगा। वह उड़कर न जाने कहाँ चला गया होगा।''

''फिर भी पापा, कोशिश तो करते हैं। पार्क में जाकर देखते हैं। शायद वह वहीं हो।'' सौम्या ने जिद पकड़ ली। पापा को पता था कि इस तरह मिट्ठू को तलाश करना बेकार है, लेकिन बच्चे का मन रखने के लिए वे राजी हो गए, ''अच्छा ठीक है, चलते हैं। लेकिन पहले रोना बंद करो।''

उसका मुँह पोंछते हुए माँ बोली, ''मैं भी साथ चलती हूँ।''

पाँच मिनट बाद कॉलोनी के बड़े वाले पार्क में तीने मिट्ठू को तलाश कर रहे थे। वहाँ तरह-तरह के पक्षी, पेड़ की डालियों पर झूलते हुए चहचहा रहे थे। इतने पक्षियों के बीच में मिट्ठू को तलाश करना लगभग असंभव था।

थोड़ी देर बाद पिता ने समझाया, ''सौम्या, हमें इतना भी नहीं पता कि वह इस पार्क में है या नहीं। अगर यहाँ है भी, तो तोतों के झुंड में उसे कैसे पहचानेंगे और अगर पहचान लेंगे तो उसे पकड़ेंगे कैसे?''

''वह मेरा दोस्त है पापा, मैं हजारों तोतों में से उसे पहचान लूँगी,'' उसने पेड़ों पर नजर दौड़ाते हुए जवाब दिया, ''और वह मुझे देखेगा तो मुझसे मिलने जरूर आएगा।''

थोड़ी देर तक इधर-उधर तलाश करने के बाद सौम्या का चेहरा उतर गया। उसे मिट्ठू कहीं दिखाई नहीं दिया। सब वापस घर की ओर चल पड़े। सौम्या का मूड ठीक करने के लिए माँ ने कहा, ''चल, तुझे कहीं घुमाने ले चलते हैं। खाना बाहर ही खाकर आएँगे।'' माँ की इस बात का कोई उत्तर दिए बिना वह सिर लटकाए धीरे-धीरे चलती रही। वहाँ से जाने से पहले उसने मुड़कर पेड़ों की तरफ देखा और फिर छलकती हुई आँखें लिए पार्क के गेट से बाहर निकल गई।

रात के ग्यारह बज रहे थे। सौम्या अपने बिस्तर पर करवटें बदल रही थी। अचानक कुछ निश्चय करके वह उठी और दूसरे कमरे में जाकर माँ से चिपककर रोने लगी। माँ और पिता दोनों की नींद खुल गई।

''मिट्ठू की याद आ रही है?'' माँ ने उसे चूमते हुए पूछा।

जवाब में सौम्या बोली, ''सॉरी मम्मी, सॉरी पापा, मैंने आपसे झूठ कहा था।''

बात को न समझते हुए उसके माता-पिता ने एक-दूसरे की ओर देखा।

''कमरे की खिड़की मैंने जान-बूझकर खोली थी,'' अपनी बात आगे बढ़ाते हुए वह बोली, ''मै जब स्कूल से घर आती थी, तो पहले धीरे-से दरवाजा खोलकर मिट्ठू को देखती थी। वह उदास बैठा होता था। कभी-कभी वह पिंजरे की तारों को अपनी चोंच से काटने की कोशिश करता हुआ दिखता। मैं जब उसे आवाज लगाती, वह चहक उठता। मतलब, मेरे साथ खेलते हुए तो उसका मन बहल जाता था, लेकिन बाकी समय वह परेशान रहता था। कमरे में खुला छोड़ने पर वह अकसर खिड़की के पास जाकर बैठ जाता था। एक दिन मैं अपना होम-वर्क कर रही थी, तभी दो तोते आकर खिड़की के बाहर की तरफ बैठ गए। वे बार-बार खिड़की के काँच पर अपनी चोंच मार रहे थे। मिट्ठू भी काँच पर चोंच मारने लगा। शायद वे मिट्ठू के कोई दोस्त या रिश्तेदार होंगे। थोड़ी देर बाद दोनों उड़ गए और मिट्ठू कमरे में घूमने की बजाय चुपचाप अपने-आप पिंजरे में जाकर बैठ

गया, जैसे उसने मान लिया हो कि उसके भाग्य में पिंजरा ही लिखा है। यह देखकर मुझे बहुत बुरा लगा। मैंने सोचा कि जैसे मैं अपनी सहेलियों के साथ खेलती हूँ, वैसे मिट्ठू का भी तो मन करता होगा, अपने दोस्तों के साथ खेलने का। बस यही सोचकर मैंने खिड़की खोल दी।''

''लेकिन यह बात तुमने हमें पहले क्यों नहीं बताई?'' पिता ने हैरान होते हुए पूछा।

''आपने मिट्ठू मेरे जन्मदिन पर उपहार में दिया था, इसलिए मैंने सोचा कि आपको बुरा लगेगा।''

''जब तूने ही उसे उड़ाया था, तो रो क्यों रही है?'' माँ ने पूछा।

''उड़ाया तो इसलिए था, क्योंकि मैं उसे पिंजरे में नहीं देख सकती थी। लेकिन वह मेरा सबसे अच्छा दोस्त था, मम्मी। मैं अब उसके साथ कभी नहीं खेल पाऊँगी।''

माँ ने उसे पलंग पर अपने साथ बिठा लिया और बड़े प्यार से बोली, ''कम-से-कम तुझे इस बात की खुशी तो है कि तेरा दोस्त आजाद है। यही सोचकर मुसकरा दे और आज यहीं सो जा, हमारे पास।'' सौम्या बुझे मन से हल्के से मुसकराई और अपने माता-पिता के बीच चादर में घुस गई।

अगले दिन सौम्या सोकर उठी और दाल का डिब्बा लेकर मिट्ठू के पिंजरे के पास पहुँच गई। यह काम उसकी आदत बन चुका था। हर सुबह वह कटोरियों में दाल और पानी डालती थी। लेकिन आज उसका दोस्त उसके पास नहीं था। मन में मिट्ठू के आजाद होने की खुशी होते हुए भी खाली पिंजरा देखकर उसकी आँखें भर आईं।

तभी माँ आई और उसके मायूस चेहरे को देखकर उसके सिर पर हाथ फिराते हुए बोली, ''तैयार हो जा बेटी, स्कूल के लिए देर हो जाएगी।'' वह बुझे मन से तैयार होने लगी। थोड़ी देर बाद अचानक उसे टक-टक की आवाज सुनाई दी। उसने पलटकर देखा तो आँसुओं से भरी उसकी आँखों में चमक आ गई। मिट्ठू खिड़की के काँच पर अपनी चोंच मार रहा था। लेकिन आज वह अकेला नहीं था, तीन और तोते उसके साथ थे। ''मिट्ठू...'' कहते हुए वह उसकी ओर लपकी और झटपट खिड़की खोल दी। चारों तोते उड़कर भीतर आ गए। मिट्ठू उसके कंधे पर बैठ गया। वह बार-बार 'सौम्या... सौम्या...' बोल रहा था, मानो अपने साथियों से अपनी नन्हीं दोस्त का परिचय करवा रहा हो। उनकी धमाचौकड़ी की आवाज सुनकर सौम्या के माता-पिता भी वहाँ पहुँच गए।

सौम्या ने पिंजरे से कटोरी बाहर निकाली और दाल से भरकर उसे जमीन पर रख दिया। मिट्ठू और उसके साथी वहाँ बैठकर दाल खाने लगे। कोई उन्हें पकड़कर दुबारा पिंजरे में डालेगा या कमरे की खिड़की बंद कर देगा, इस बात का उन्हें बिल्कुल डर नहीं था। मिट्ठू को पता था कि उसका कमरा पहले से बहुत ज्यादा बड़ा हो चुका है। अब पंख फैलाने के लिए उसके पास पूरा आकाश है।

(आकाशवाणी में उद्घोषक एवं कहानीकार)

बाल-कविता | नरेन्द्र सिंह नीहार

आई ऋत वसंती

उपवन में जब फूल खिले,
खेतों में सरसों फूले
बौराए जब अमराई,
कोयल कूह-कूह बोले।

चढ़े वसंत की खुमारी,
मस्त हवाएँ सन-सन-सन,
बंदर बाबू ढोल बजाए,
भालू नाचे छम-छम-छम।

चले झूमते हाथी काका,
घोड़े हिनहिन करते।
गधे दुलत्ती फेंक रहे,
हिरन कुलाँचें भरते।
मोर, पपीहे, तोता, मैना,
बुलबुल गाती मस्ती में।
ढोल, मंजीरे, डफली बाजे,
गाँव नगर औ बस्ती में।।

22 बच्चों को मिला राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार

भारतीय बाल कल्याण परिषद् ने इस साल जिन 22 बच्चों को वीरता पुरस्कार दिया है, उनमें से हर एक की कहानी प्रेरणा देने वाली है। किसी ने दोस्तों को बचाने में अपनी जान गँवा दी तो किसी बच्ची ने हादसे में पूरे परिवार को बचा लिया। आइए, जानते हैं बालवीरों की कहानी...

मरकर भी डूब रहे तीन दोस्तों को बचा लिया

केरल के कोझीकोड के रहने वाले मुहम्मद मुहसिन ने समुद्र में बहते अपने दोस्तों को बचाने के लिए जान गँवा दी। उन्हें मरणोपरांत वीरता पुरस्कार के लिए चुना गया है। उनके अलावा कई ऐसे बच्चे हैं, जिन्होंने अपनी जान को खतरे में डालकर दूसरों को जीवन दिया।

बच्ची ने बचाई माता-पिता और दादा की जान

22 बच्चों में से 10 लड़कियों को भी इस पुरस्कार के लिए चुना गया है। बेटियों की बहादुरी की कहानी सुनाते हुए कई माता-पिता बेहद भावुक हो गए। ऐसी ही एक बेटी हैं हिमाचल प्रदेश की अलाइका। महज 13 साल की अलाइका उस वक्त अपने माता, पिता और दादा के लिए फरिश्ता बन गईं, जब उनकी कार अचानक सड़क से नीचे खाई में गिरने लगी। अलाइका की माँ सविता बताती हैं, ''हम एक बर्थडे पार्टी में जा रहे थे। पालमपुर के पास हमारी कार अचानक खाई में जाने लगी। किस्मत अच्छी थी कि एक पेड़ के तने से टकराकर वह रुक गई। इस हादसे के बाद अलाइका सबसे पहले होश में आई और लोगों को मदद के लिए बुलाया। यदि वह न होती तो आज हम लोग जिंदा न बचते।''

जलती बस से 42 लोगों को बचाया

अलाइका जैसा ही हादसा आदित्य के साथ भी हुआ था। बीते साल एक मई को 15 साल के आदित्य केरल के 42 अन्य पर्यटकों के साथ नेपाल की यात्रा से लौट रहे थे। भारतीय सीमा से करीब 50 किलोमीटर पहले बस में आग लग गई। आग लगते ही ड्राइवर मौके से फरार हो गया, जबकि 5 बच्चों और कुछ बुजुर्गों समेत तमाम यात्री बदहवास थे। बस के दरवाजे बंद थे। इस बीच आदित्य ने हथौड़े से बस का पिछला शीशा तोड़ दिया। इस दौरान उनके हाथ और पैरों में शीशे से चोटें भी लगीं। आदित्य की यह वीरता ही थी कि बस के डीजल टैंक के फटने से पहले सभी यात्री निकल पाए।

आतंकी फायरिंग से माता-पिता और बहनों को बचाया

बीते साल 24 अक्टूबर की बात है। कश्मीर के कुपवाड़ा जिले के चौकीबल और तुमिना में पाकिस्तान ने फायरिंग शुरू कर दी। 16 साल के मुगल उस वक्त घर में ही थे। उनके घर की पहली मंजिल पर पाकिस्तान का एक गोला आकर गिरा। वह बाहर निकल आए, लेकिन तभी उन्हें याद आया कि उनके माता-पिता और दो बहनें अभी अंदर ही हैं। इसके बाद वह तुरंत घर में गए और अपनी दो बहनों को सुरक्षित निकालकर लाए। इसके बाद मकान ढहने से पहले उन्होंने माता और पिता को भी जगाकर बाहर निकाल लिया।

अशरफ ने हेलिकॉप्टर क्रैश में चलाया बचाव अभियान

पिछले साल 27 फरवरी को भारतीय वायुसेना का MI-17 हेलिकॉप्टर क्रैश हो गया था। बडगाम में हुए इस हादसे के बाद मौके पर पहुँचने वाले लोगों में 18 साल के अशरफ भी थे। उन्होंने उस मलबे में एक व्यक्ति को जिंदा देखा। इसके बाद अपनी जान पर खेलकर घायल शख्स को निकाला। हालांकि उनकी जान नहीं बच सकी। इसके बाद घटनास्थल पर पहुँची एनडीआरएफ की टीम के साथ भी वह बचाव कार्य में जुटे रहे।

इन्हें भी मिलेगा बहादुरी का पुरस्कार

पुरस्कार पाने वाले अन्य बच्चों में असम के मास्टर श्री कमल कृष्ण दास, छत्तीसगढ़ की कांति पैकरा और वर्णेश्वरी निर्मलकर, कर्नाटक की आरती किरण सेठ और वेंकटेश, केरल के फतह पीके, महाराष्ट्र की जेन सदावर्ते और आकाश मछींद्र खिल्लारे को दिया जाएगा। इसके अलावा मिजोरम के तीन बच्चों और मणिपुर व मेघालय से एक-एक बच्चे को वीरता पुरस्कार के लिए चुना गया है ©पाँ.स्तं.

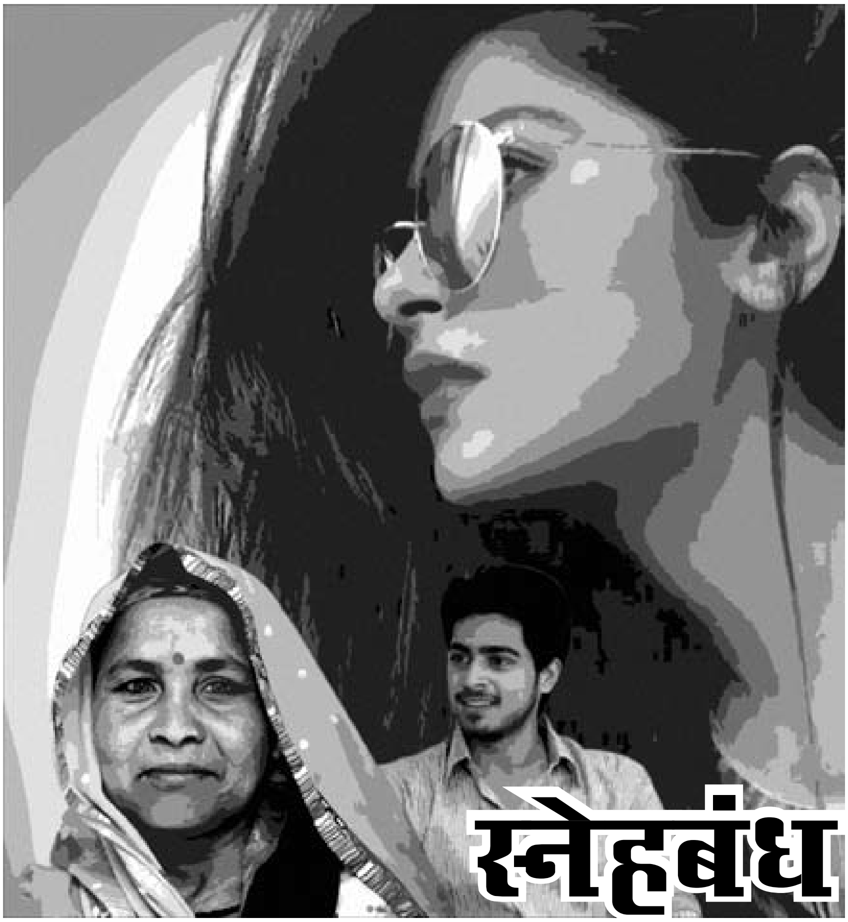

स्नेहबंध

मालती जोशी
वरिष्ठ लेखिका

मेरे बच्चों को मोटूमल कहने का हक इसे किसने दे दिया? अभी तो घर में आई भी नहीं और रोब झाड़ने लगी? वाह, यह भी कोई बात हुई! तुम्हारे माँ-बाप ने तुम्हें नहीं खिलाया तो हम क्या करें?

''माँ, ये है मीतू... मैत्रेयी।'' ध्रुव ने परिचय करवाया तो देखती ही रह गई। कटे बाल के नीचे एक छोटा-सा चेहरा, वह भी आधा गॉगल्स से ढका हुआ। नेवी ब्ल्यू रंग की जीन्स के ऊपर चटख पीले रंग का पुलोवर। उस पर बने हुए केबल्स इतने प्यारे कि कोई और होता तो पास बिठाकर पहले डिजाइन उतार लेती, बाकी बातें बाद में होतीं।

''पर ये मीतू थी... मैत्रेयी।''

अपनी सारी प्रतिक्रिया मन ही में समेटकर मैंने सहज स्वर में कहा, ''ड्राइंगरूम में चलकर बैठो तुम लोग, मैं पापा को बुला लाऊँ?''

बच्चों के पापा हस्बेमामूल बगिया में ईजी चेयर में लेटे अखबार पढ़ रहे थे। चार पन्नों का अखबार है, लेकिन पढ़ने में सुबह से शाम कर देंगे। अपनी सारी खीज उन पर उँडेलते हुए मैंने कहा, ''बहूरानी आई हैं, चलकर मुआयना कर लीजिए।''

''बहूरानी!'' उन्होंने चौंककर पूछा, फिर चश्मा उतारकर मुझे सीधे देखते हुए बोले, ''बहूरानी आई है तो तुम्हारा स्वर इतना तल्ख क्यों हैं?''

एक-दो नहीं, साथ रहते पूरे अट्ठाईस साल हो गए हैं। मेरे स्वर का एक-एक उतार-चढ़ाव उन्हें कंठस्थ हो गया है। फिर भी मैंने कोई जवाब नहीं दिया और चाय बनाने के बहाने रसोई में चली गई।

आधा-पौने घंटे बाद जब चाय-नाश्ता सजाकर बाहर ले गई, उस समय ड्राइंगरूम कहकहों से गुलजार था। इस बीच शायद शिव भी कॉलेज से लौट आया था और उसी के किसी चुटकुले पर सब लोग ठहाके लगा रहे थे।

मुझे देखते ही शिव ने आगे बढ़कर ट्रे थाम ली। ध्रुव ने मेज से सारा कबाड़ हटाकर जगह बनाई। पानी का जग और चटनी की शीशी अंदर छूट गई थी। ट्रे रखकर शिव दौड़कर दोनों चीजें ले आया। सबकुछ एकदम स्वाभाविक ढंग से ही हो रहा था। जब से सविता ससुराल गई है, बच्चे इसी तरह माँ का हाथ बँटा लेते हैं। पर पता नहीं क्यों, आज मुझे यह सब अच्छा नहीं लगा। थोड़ा तो सब्र किया होता इन लोगों ने! मैं भी तो देखती, मीतू नाम की यह लड़की कितना अदब-कायदा जानती है। घर की बहू बनकर आ रही है, यह तो हुआ नहीं कि खुद चलकर किचन तक आती, झूठ-मूठ ही सही, मदद के लिए पूछती। बस, लाट साहब की तरह बाहर बैठी रही। लड़के बेचारे बैरों की तरह दौड़-धूप कर रहे हैं।

नाश्ते के लिए गरम समोसे बना लिए थे। सूजी के लड्डू और घर का बना चिवड़ा भी साथ था। जनता ने नाश्ते का सरंजाम देखा और खुश हो गई।

''हाय माँ! आपने यह सब घर पर बनाया है।'' मीता किलककर बोली, ''मैं तो बिलीव नहीं कर सकती, रोज इतना रिच नाश्ता देती हैं आप! तभी आपके दोनों सुपुत्र मोटूमल हो रहे हैं।''

''ऐ! हमें नजर मत लगाओ,'' ध्रुव ने टोका, ''माँ की जीवन-भर की साधना है हमारे पीछे।''

''जानती हैं मीता जी,'' शिव ने कृत्रिम गंभीरता ओढ़कर कहा, ''माँ ने हमको खिला-पिलाकर ऐसा तैयार कर दिया है कि अब कैसी ही कर्कश बीवी मिलें, हम निपट लेंगे। मैदान छोड़कर भागेंगे नहीं।''

कमरा एक बार फिर हँसी में डूब गया। मुझे लेकिन बड़ा ताव आ रहा था।

मेरे बच्चों को मोटूमल कहने का हक इसे किसने दे दिया? अभी तो घर में आई भी नहीं और रोब झाड़ने लगी? वाह, यह भी कोई बात हुई! तुम्हारे माँ-बाप ने तुम्हें नहीं खिलाया तो हम क्या करें? तुम अपने राज में डबलरोटी खिला-खिलाकर उसे दुबला कर लेना, बस!

''चलूँ माँ,'' मैंने अपनी तंद्रा से चौंककर देखा, सब लोग उठ खड़े हो गए थे। मीता नमस्ते कर रही थी। गेट तक छोड़कर हम लोग लौट आए। ध्रुव उसे घर तक छोड़ने चला गया।

''पहली बार आई थी,'' बच्चों के पापा घर में आते ही शुरू हो गए, ''जिस-तिस को तो तुम नेग बाँटती फिरती हो। उसे यों ही खाली हाथ भेज दिया!''

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। खाली प्लेट-प्याले समेटकर रसोई में चली आई। 'हुँह! पहली बार आई थी तो कोई क्या करे! रीति-रिवाजों का ठेका क्या हमने ही

ले रखा है! वह क्या एक बार झुककर पैर नहीं छू सकती थी! एकदम ही अंग्रेज बनी जा रही थी।'

सारी शाम मैं रसोई में ही बनी रही। मुझे मालूम था, मेरी प्रतिक्रिया जानने को सब उत्सुक होंगे। पर मैंने किसी को हवा नहीं लगने दी। शिव तक एक-दो बार आकर मँडरा गया, पर मैं व्यस्त होने का दिखावा करती रही।

रात खाने की मेज पर भी एक अव्यक्त तनाव था। बच्चों के पापा ने एक-दो चुटकुले सुनाकर उसे तोड़ने की कोशिश भी की, पर बात कुछ बनी नहीं।

खाने के बाद भी काम कहाँ खत्म होता है! सारे दरवाजे-खिड़कियाँ मुझी को देखनी होती हैं। घर-भर की बत्तियाँ बुझानी होती हैं। टंकी में पाइप छोड़ना होता है। दूध-दही के बरतनों को जाली की अलमारी में रखना होता है। आँगन में सूखते कपड़े उतारना होता है।

एक-एक काम निपटाती जा रही थी कि देखा, ध्रुव पास आकर खड़ा हो गया है।

''माँ!'' उसने काँपते हुए स्वर में पुकारा।

''क्या है?'' तौलिए को तहाते हुए मैंने पूछा।

''तुम्हें...तुम्हें मीता कैसी लगी?''

''मेरे लगने का क्या है! तुम्हें पसंद आनी चाहिए, बस!''

''नो ममा, तुम्हारी पसंद बहुत जरूरी है। तुम्हारी और पापा की।''

शाम से मन में जो अंधड़ उठ रहा था, ध्रुव के प्रश्न से तीव्र हो उठा।

''तुमने जवाब नहीं दिया माँ!''

''अच्छा, यह बताओ, क्या उसे पता था कि तुम उसे कहाँ ले जा रहे हो?'' मैंने प्रतिप्रश्न किया।

''हाँ, क्यों?''

''तो क्या वह ढंग के कपड़े पहनकर नहीं आ सकती थी? कम-से-कम तुम उसे...।''

''मैंने कहा था, माँ!''

''फिर?''

''वह बोली, मैं जैसी हूँ, वैसी ही उन्हें देख लेने दो। बेकार नाटक करने से फायदा! खैर, कपड़ों को छोड़ो। वैसे कैसी लगी, बताओ?''

ध्रुव इतनी आजिजी से पूछ रहा था कि उसका दिल दुखाते न बना। ''अच्छी है,'' मैंने अनमने ढंग से कहा और बात समाप्त कर दी। वरना सच तो यह था कि मैंने मीता को ठीक से देखा ही नहीं था। पहली ही नजर में उसका हुलिया देखा और मन खट्टा हो गया था। बहू को लेकर मन में कितनी कोमल कल्पनाएँ थीं, सब राख हो गई थीं, गुस्सा तो अपने लाड़ले पर आ रहा था। प्रेम करते समय इन लोगों की अक्ल क्या घास चरने चली जाती है!

कैसे प्यारे-प्यारे रिश्ते आ रहे थे, पर तकदीर में तो यह सर्कस-सुंदरी लिखी थी न!

एक उसाँस भरकर रह गई मैं।

एक बार हम लोगों की स्वीकृति की मुहर लगने भर की देर थी, फिर तो सारे काम फटाफट और कायदे से होते चले गए। मीता के पिता जी स्वयं घर आए और उन्होंने औपचारिक रूप से रिश्ते की पहल की। मीता को अपनी बहू बना लेने के लिए करबद्ध निवेदन किया। उन्होंने बताया कि पत्नी की मृत्यु के बाद उनके बच्चे अकसर होस्टल में ही पले हैं। वे भी हमेशा टूर पर ही बने रहे।

दो साल पहले लड़के की शादी हुई है। तब से घर कुछ आकार ग्रहण करने लगा है। होस्टल में रहने के कारण मीतू काफी कुछ सीखने से वंचित रह गई है। वे तो डर रहे थे, पर ध्रुव ने उन्हें आश्वस्त किया है कि माँ बहुत सहनशील और स्नेहमयी है, वे उसे अपने अनुसार ढाल लेंगी।

उत्तर में ध्रुव के पापा ने भी उन्हें आश्वस्त किया। कहा कि हम लोग इतने दकियानूसी नहीं हैं कि एक आर्किटेक्ट लड़की में सोलहवीं सदी की बहू तलाशें।

इस प्रकार बहुत ही सौजन्यपूर्ण वातावरण में परिचय का पहला दौर समाप्त हुआ। फिर धूमधाम से सगाई हुई। दोनों पक्षों ने जी खोलकर खर्च किया। दान-दहेज तो कुछ लेना था नहीं, लेन-देन की कड़वाहट-भरी चर्चा से बच गए हम लोग। फिर भी मैंने सबकी नजर बचाकर समधी जी के हाथ में एक लिस्ट थमा दी थी। पहले बेटे की शादी थी। नाते-रिश्तेदारों के नेग तो मिलने ही चाहिए थे। अपनी बेटी को तो लोग देते ही हैं। जिंदगी-भर यह देना समाप्त ही नहीं होता। पर बाकी लोगों को मौका तो सिर्फ शादी में ही आता है न।

एक लिस्ट मैंने ध्रुव को भी पकड़ाई थी। लिस्ट क्या थी, होनेवाली बहू के लिए पूरी आचार संहिता थी : मीता अब शादी के बाद ही इस घर में आएगी। भविष्य में वह बाल नहीं कटवाएगी। हाथ में चूड़ियाँ डालने की आदत डालेगी। शादी में सिर ढँकेगी। घर में मेहमान रहेंगे तब तक साड़ी पहनेगी। लोगों के सामने ध्रुव को नाम लेकर नहीं पुकारेगी। आदि आदि...।

खूब लम्बी सूची थी। बारीक से बारीक जो भी बात याद आती गई, जोड़ दी थी। शिव ने तो उसका नाम बीससूत्री कार्यक्रम रख दिया था। आते-जाते ध्रुव को छेड़ देता, ''दादा भाई, भाभी को कितने सूत्र रटा दिए?''

कभी कहता, ''भाभी से कहना, फर्स्ट डिवीजन न आने से भी चलेगा। पर कम-से-कम पासिंग मार्क्स तो आने ही चाहिए।''

यह छेड़छाड़ सिर्फ मजाक के तौर पर नहीं होती थी। इसमें एक अव्यक्त आक्रोश भी था। माँ के कारण उन लोगों की इमेज एकदम पुराणपंथी हो गई थी। ध्रुव मुँह से तो कुछ नहीं कहता था, पर शिव के छेड़ने पर जैसी उदास हँसी हँस देता, उससे यह स्पष्ट हो जाता था।

आखिर एक दिन मैंने कह ही दिया, ''देखो शिव, ये मजाक उड़ानेवाली बातें नहीं हैं। ये मत सोचो कि मैं अपने लिए कुछ कर रही हूँ। मेरी तो बस यही इच्छा है कि नई बहू की आते ही आलोचना न शुरू हो जाए। आखिर मेरी भी तो वह कुछ लगती है और तुम तो जानते हो, शादियों में कुछ लोग आते ही इसी मकसद से हैं कि नुक्स निकालें और आलोचना शुरू कर दें।''

बच्चे इसके बाद चुप हो गए थे।

पर अपना सोचा सब कहाँ हो पाता है!

''तुम्हारी सारी शर्तों का पालन करेगी, तब तो तुम्हें वह अच्छी लगेगी न माँ!'' ध्रुव ने एक दिन गले में बाँहें डालकर बड़ी आशा से पूछा था। तब यही सोचकर संतोष कर लिया था कि लड़का आज भी मुझे कितना चाहता है। आसपास के वातावरण को देखते हुए यह भी कम न था।

शादी हुई और खूब धूमधाम से हुई।

घर की पहली शादी थी। अनगिनत मेहमान आए थे। उनमें से कइयों को निराश लौटना पड़ा। टीका-टिप्पणी का एक भी मौका हाथ नहीं लगा।

मैं खुद बहुत डरी हुई थी। एक तो लड़की की माँ नहीं थीं। कर्ता-धर्ता बड़ी बहन थी, जो अमेरिका में ही बस गई थी। पति-पत्नी दोनों डॉक्टर थे। भैया-भाभी तो अभी नए ही थे। पर स्वागत-सत्कार में, खान-पान में कहीं कोई त्रुटि या अव्यवस्था नहीं हो पाई थी।

मीता के पापा तो बिछे जा रहे थे, पर बहन-बहनोई, भैया-भाभी, चाचा-ताऊ सभी सौजन्य और विनम्रता की मूर्ति बने हुए थे। और जयमाला के समय जब मीता को देखा तो बस आँखें जुड़ा गईं। अपना यह रूप-लावण्य इतने दिनों तक उसने कहाँ छिपा रखा था। लाल सुर्ख बनारसी साड़ी में लिपटी वह किसी सलोनी गुड़िया-सी लग रही थी।

अंतर्जातीय विवाह को लेकर एक शूल था मन में, वह भी जाता रहा। इसी बात को लेकर ननदरानी कोंचती रही हैं। अब सर उठाके सबके सामने कह सकूँगी, ''भाई, हमने तो लड़की का रूप-गुण देखा, विद्या-बुद्धि देखी और घर-परिवार देखा। बस, जात-पाँत को आजकल पूछता ही कौन है?''

आठ-दस दिन घर में मेला-सा लगा रहा।

मीता जितने दो-चार दिन रही, ननदों के बीच दबी-ढँकी बैठी रही। उनके बच्चों का लाड़-दुलार करती रही, रिश्ते की सास और जिठानियों की मान-मनुहार करती रही। सभी लोग प्रसन्न थे और जाते समय हर कोई मुझे बधाई देता हुआ गया।

X X X

शादी के बाद दोनों 8-10 दिन के लिए मसूरी घूमने चले गए थे। उनके लौटने तक मैंने सविता को रोक लिया था। सोचा, ननद-भौजाई थोड़े दिन साथ रह लेंगी।

दूसरे दिन सुबह-सुबह मैं रसोई में व्यस्त थी कि सविता पास आकर फुसफुसाई, ''माँ! बहूरानी को तो देखो।''

देखा, बड़े-बड़े पीले फूलोंवाली मैक्सी पहनकर वह मेज पर प्लेटें लगा रही है।

मैं और सविता, दोनों एक-दूसरे का मुँह ताक रहे थे। इस बात को कौन उठाए और कैसे? मैं तो आजकल लड़कों से खौफ खाने लगी थी। पर सविता तो उन दोनों को घास नहीं डालती थी। दनदनाती हुई बाहर चली गई और बोली, ''मीतारानी, आज ये कौन-सी ड्रेस निकाल ली?''

''घर की ड्रेस है, दीदी!'' फिर सविता की प्रश्नार्थक दृष्टि को समझते हुए बोली, ''माँ का ऑर्डर था कि मेहमानों के सामने साड़ी पहननी होगी। इसलिए इतने दिन पहनती रही। पर इतना बँधा-बँधा लगता है उसमें।''

''तो हमें मेहमानों में नहीं गिनती तुम?''

''आप तो घर की हैं, दीदी हैं अपनी।''

और कोई वक्त होता तो मैं इसी बात पर निहाल हो जाती, पर इस समय समस्या जरा नाजुक थी। मैंने आगे बढ़कर कहा, ''बेटे, घर में जब-तब कोई आ निकलता है और लोग अकसर तुम्हें देखने के लिए ही आते हैं।''

''पर माँ, साड़ी पहनकर जरा भी कंफर्टेबल नहीं लगता। काम तो कर ही नहीं सकती मैं। बस, गुड़िया की तरह सजने-सँवरने के ही दिन हैं। काम करने को तो जिंदगी पड़ी है। और अभी तो मैं बैठी हूँ।''

''ठीक है। लेकिन माँ, ऑफिस में तो साड़ी पहनकर जाना जरूरी नहीं है न? मुझसे तो गाड़ी चलाते न बनेगी।''

गाड़ी का मतलब लूना। ये भी एक शूल था मन में। शादी के सामान के साथ लूना देखकर मेरी भाभी फिच्च-से हँस दी थी, ''वाह ध्रुव जी! सीधेपन की हद कर दी आपने। आजकल बजाज सुपर से नीचे कोई बात नहीं करता। आप कम-से-कम...''

''मामीजी,'' ध्रुव बात काटकर बोला, ''यह मेरी नहीं, मीता की गाड़ी है। मेरे पास तो अपनी प्रिया है। मीता ने पापा से कहा था कि जेवर चाहें न दें, पर एक गाड़ी जरूर दें।''

यानी सब-कुछ अपने-आप ही तय हो गया था। मन इतना खट्टा हो गया था! स्कूटर ही ले लेते तो क्या हो जाता! प्रिया-शिव के काम आ जाती। स्कूटर पर तो दोनों ही जा सकते थे। तब यह पहनने-ओढ़ने का झंझट भी न खड़ा होता।

''दफ्तर सलवार-कमीज पहनकर जाया करना'', मैंने फैसला सुना दिया। लेकिन बहू घर में आती है तो समस्या सिर्फ पहनने-ओढ़ने की ही तो नहीं रहती।

उसका घर-भर में उन्मुक्त होकर घूमना, खिलखिलाना, दिन-भर ध्रुव डार्लिंग की रट लगाना, शिव से छीना-झपटी करना, भूख लगने पर नाश्ते के डिब्बे टटोलना, बात-बात पर गले में झूल जाना, सब-कुछ आँखों में खटकने लगता।

बच्चों के पापा तक को तो उसने नहीं बख्शा था। सुबह वे पेपर पढ़ते तो उनकी कुर्सी के हत्थे पर बैठकर ही पूरा पेपर पढ़ जाती। घर में रहती तब तक उनके आसपास मँडराया करती, पापा का जाप किए जाती। उन्हें इसरार कर-करके खाना खिलाती, दवाई समय पर न लेने के लिए डाँटती। शाम को लौटती तो चाय का कप हाथ में लेकर सीधे बगिया में पहुँच जाती और छोटे से पीढ़े पर बैठकर उनसे बतियाती रहती। उस समय तो सचमुच मेरा खून जल जाता। घर में तो जो चल रहा था, ठीक ही था। बाहर उसका प्रदर्शन करने की क्या जरूरत थी? आसपास के घरों में कई जोड़ी आँखें उस समय खिड़कियों पर टँग जाती थीं।

हैरत तो यह थी कि बच्चों को, उनके पापा को यह सब सहज-स्वाभाविक लगता था। उनके माथे पर शिकन तक न आती थी। उस दिन तो हद ही हो गई। रोज की तरह हम लोग दोपहर की चाय ले रहे थे कि मीता आँधी की तरह घर में घुस आई। ''अरे, आज इतनी जल्दी!''

''पहले आप लोग आँखें बन्द कीजिए, प्लीज!''

''क्या बात है?''

''पहले आँखें बंद!''

और हमारे पलक झपकाते ही उसने दोनों के गले में एक-एक फूलमाला डाल दी और तालियाँ बजाते हुए किलकने लगी, ''मैनी हैप्पी रिटर्न्स ऑफ द डे।''

'अरे, बात क्या है... मैंने कहना चाहा' और एकदम मुझे याद आ गया, आज 12 दिसंबर था, हमारी शादी की सालगिरह। दूसरी-दूसरी बातों में इतनी खो गई थी कि इसकी याद ही न आई थी।

मेरा चेहरा देखते ही मेरे गले में झूल गई, ''पकड़ी गईं न! आप

लोगों ने सोचा होगा, चुप्पी लगा जाएँगे तो सस्ते में छूट जाएँगे। ऐसा नहीं होगा। पापा जी, तीन-चार कड़कते नोट तैयार रखिए। हम लोगों की नीयत आज अच्छी नहीं है।''

''तुम्हें कैसे पता चला, बेटे! हमें तो याद ही नहीं रहा था।'' इन्होंने गद्‌गद होते हुए पूछा।

''लंच के समय ध्रुव की डायरी उलट-पलट रही थी। तब नजर पड़ी। उसकी तो ऐसी खबर ली है मैंने। इतनी इंपार्टेंट चीज भूल गया।''

''ध्रुव है कहाँ?'' मैंने पूछा।

''शिव को लेने कॉलेज गया है। हमने तड़ी मारी है तो उसे पढ़ने थोड़े ही देंगे। आज तो हंगामा होगा।''

थोड़ी देर में वे दोनों भी आ गए। फिर तीनों में मिलकर हम दोनों की आरती उतारी, पैर छुए और उपहार भी दिए। मेरे लिए प्योर सिल्क की साड़ी और पापा के लिए पुलोवर। उसी समय दोनों चीजों का उद्‌घाटन करना पड़ा। फिर अमरीका से उपहार में मिले कैमरे से घर पर रंगीन तस्वीरें खींची गईं। फिर सब लोग फेमस स्टूडियो गए। वहाँ एक ग्रुप फोटो के लिए मीता पारंपारिक बहू की वेशभूषा में सजी थी और मेरे पीछे खूब अच्छे से सिर ढककर खड़ी थी। शिव बार-बार उसे छेड़ रहा था।

फर्स्ट शो हम लोगों ने 'अंगूर' देखी। फिर ब्ल्यू डायमंड में खाना खाया। क्वालिटी में आइसक्रीम और बनारसी पानवाले के यहाँ का पान खाकर लौटे ते रात के ग्यारह बज रहे थे। बेतरह थक गई थी मैं, पर यह थकान भी कितनी मीठी थी!

''बाप रे, थक गई मैं तो! इन लोगों ने सचमुच एक हंगामा कर डाला। अब इतनी उछल-कूद के लायक थोड़े ही रह गए है हम।'' रात मैंने हँसते हुए कहा।

पर देखा, ये चुप हैं और आग्नेय दृष्टि से मुझे घूर रहे हैं।

''क्या हुआ?'' मैंने घबराकर पूछा।

''वह लड़की बेचारी माँ-माँ कहकर मरी जाती है, और तुम?''

''क्यों, मैंने क्या किया है?'' मैंने खीझकर कहा। मन में छाई खुशी भाप बनकर उड़ने लगी थी।

''मुझसे क्या पूछती हो? अपने-आप से पूछो कि तुमने क्या नहीं किया है! वह बेचारी बिना माँ की लड़की!''

''बिना माँ की है तो मैं क्या करूँ!'' मैं एकदम फट पड़ी। शाम ममता का एक सोता फूट पड़ा था, अंतस में वह जमने लगा था, ''बिना माँ की है तो मैं क्या करूँ, यह तो बताइए! गोद में लेकर घूमूँ या लोरी गाकर सुनाऊँ?''

उन्होंने जवाब नहीं दिया और करवट बदलकर लेट गए। इतना गुस्सा आया। यह अच्छा तरीका है, जवाब देते न बने तो बात ही खत्म कर दो!

''अजीब मुसीबत है,'' मैं बुदबुदाई, ''दिनभर घर में धींगामुश्ती चलती रहती है। छोटे-बड़े का भी लिहाज नहीं रखा जाता। फिर भी मुझे चैन नहीं है। पराई लड़की पर तो लोगों को इतनी ममता हो जाती है! साल-छः महीने में अपनी जाई घर आती है, उसका तो कभी ऐसा लाड़-दुलार नहीं होता।''

''लाड़-दुलार क्या खाक करूँगा? वह तो तुम्हारे अनुशासन में पली हुई बिटिया है। आज तक कभी खुलकर बात भी की है उसने मुझसे?'' अब चुप रहने की बारी मेरी थी।

जनवरी के प्रथम सप्ताह में ध्रुव को अचानक छः महीने की ट्रेनिंग के लिए जर्मनी जाने का आदेश मिला। घर में एक खुशी की लहर दौड़ गई। कितने सारे लोगों में सिर्फ उसी का चयन हुआ था। गर्व से हम लोगों के कलेजे गज-गज भर के हो गए थे।

जोर-शोर से तैयारियाँ शुरू हो गई और मेरा दिल बैठने लगा। लड़का पहली बार इतनी दूर, परदेश में जा रहा था। और फिर नयी-नवेली बहू को पीछे छोड़कर जा रहा था।

''मीतू को भी क्यों नहीं ले जाते? घूम आएगी।'' इन्होंने कहा था। लेकिन मीता ने इस प्रस्ताव का विरोध किया। वह बोली, ''बेकार रुपए फेंकने से क्या फायदा, पापा जी! ध्रुव का खर्च तो कंपनी देगी। मेरा तो हमीं लोगों को उठाना पड़ेगा। कभी अपना भी चान्स आएगा। है न शिव?''

वह हमेशा की तरह हँसमुख बने रहने का भरसक प्रयास करती, पर कभी-कभी उसका चेहरा बेहद उदास हो आता। स्वाभाविक भी था। पर मुझे चिंता हो चली थी। आखिर मैंने एक दिन ध्रुव से कहा, ''बेटे, तुम्हारे लौट आने तक मीता अपने पापा के यहाँ रहे तो कैसा है?''

''कहीं भी रह लेगी माँ! छः महीने की तो बात है। पलक झपकते बीत जाएँगे। और सब-कुछ ठीक-ठाक रहा तो लौटते समय पन्द्रह-बीस दिन के लिए उसे बुला लूँगा। घूम-घाम लेंगे।''

उसने तो बात समाप्त कर दी थी, पर मेरी चिन्ता वैसी की वैसी बनी हुई थी। बच्चों के पापा का इन दिनों कुछ ठीक नहीं था। वह यहाँ उदास बनी रहेगी तो उसका सम्बन्ध सीधे मुझसे जोड़ देंगे, इसीलिए डर लग रहा था।

शिव और मीता उसे छोड़ने मुंबई तक गए थे। लौटकर मीता अपने पापा के यहाँ चली गई। उसकी भाभी के यहाँ लड़का हुआ था। फिर महीने-भर बाद भाभी अपने पीहर चली गई तो उसने घर की देखभाल के लिए वहाँ रह जाना चाहा तो हमने कोई आपत्ति नहीं की।

घर एकदम सुनसान हो गया था।

बच्चों के पापा ध्रुव से ज्यादा मीता को मिस कर रहे थे। हर चौथे-आठवें दिन समधियाने पहुँच जाते। कभी घसीटकर साथ मुझे भी ले जाते। तब समधी जी चुटकी लेते, ''अपने बच्चों के लिए कैसे दौड़-दौड़कर आ जाते हैं आप। मुझ गरीब की तो कभी सुध भी न ली।''

शिव भी अकसर देर से घर लौटता। कभी भाभी के साथ शॉपिंग करनी होती थी या कभी उन्हें मूवी दिखानी होती थी।

कभी-कभार वह भी घर पर आ जाती, पर पहले का-सा तूफान बरपा नहीं करती। हँसती-खिलखिलाती, पर उसमें पहले की-सी जीवंतता नहीं थी। जब वह चली जाती तो यह कहते, ''कहा था, साथ चली जाओ। तब नहीं मानी, पैसे का मुँह देखती रही। अब मन-ही-मन घुल रही है।''

मार्च का अंतिम सप्ताह रहा होगा। एक रात इनके पेट में जोर का दर्द उठा। पता नहीं कितनी देर से तड़प रहे थे। मेरी तो अचानक नींद खुली तो देखा, पेट पकड़े बैठे हैं। चेहरा सफेद पड़ गया है।

''क्या हुआ?'' मैंने घबराकर पूछा, ''क्या पेट दर्द कर रहा है?''

उन्होंने जवाब नहीं दिया। मैं उठी, पानी गरम किया। रुई में हींग की डली लपेटकर उसे जलाया। फिर प्लेट में अजवायन, काला नमक, हींग

और गरम पानी लेकर इनके पास आई। वे मना करते रहे, पर जब मैं बार-बार आग्रह करने लगी तो चिढ़कर बोले, ''जरा बात तो समझा करो। वैसा दर्द नहीं है, भाई!''

''फिर कैसा है?''

''मैं... मैं दोपहर से बाथरूम नहीं गया हूँ।''

''और अब बता रहे हैं!'' मैं फटी-फटी आँखों से उन्हें देखती रह गई।

शिव के पेपर्स चल रहे थे। पढ़कर शायद अभी-अभी सोया था, पर उसे जगाना पड़ा। उतनी रात जाकर वह डॉ. शुक्ला को लिवा लाया।

उन्होंने मुआयना किया और पूछा, ''ये तकलीफ कब से है आपको?''

''जी, 15-20 दिन से थोड़ा कष्ट हो रहा था।''

इतना ताव आया मुझे। इतने दिनों तक चुप बने रहने में क्या तुक थी! शिव बोला, ''माँ! यह समय गुस्सा करने का नहीं है। बाद में निपट लेना। पहले उन्हें सम्हालो।''

राम-राम करके वह रात बीती। सुबह भर्ती होना ही पड़ा। प्रोस्टेट की शिकायत थी। ऑपरेशन जरूरी था। इन्होंने पहले ही अपने आदेश सुना दिए :

'प्राइवेट नर्सिंग होम नहीं जाएँगे। सरकारी अस्पताल में भी प्राइवेट वार्ड नहीं लेंगे। जनरल में रहेंगे।' इस ऑपरेशन के बाद नर्सिंग की बहुत जरूरत होती है। प्राइवेट वार्ड में कोई झाँकता भी नहीं। दस बार बुलाने जाना पड़ता है।

उनकी बात न मानने का कोई उपाय नहीं था। खजाने की चाबी उन्हीं के पास थी। ध्रुव यहाँ होता तो बात दूसरी थी, पर अब उतनी दूर से बुलाने का कोई मतलब भी न था।

X X X

जनरल वार्ड में जो एक रात गुजारी है, उफ! जिंदगी-भर याद रहेगी। इनकी वैसी हालत में नींद आने का कोई प्रश्न ही नहीं था। पर आसपास के वातावरण ने मन को इतना बोझिल कर दिया कि सुबह उठकर लगा, मैं ही बीमार हूँ। और दुर्गन्ध अब भी याद आती है तो मन पर काँटे से उग आते हैं। सुबह शिव कहीं से चाय लाया था मेरे लिए, पर घूँट भर भी गले से नहीं उतरी।

दस बजे ऑपरेशन होने को था। नौ बजे ही इन्हें स्ट्रेचर पर डालकर ले गए। मैं और शिव भी पीछे-पीछे चल पड़े। जहाँ तक जाने दिया, वहाँ तक गए। फिर मैं वहीं बैठकर इष्टदेव का जाप करने लगी। शिव बेचारा दौड़-धूप में व्यस्त हो गया।

''नमस्ते बहिन जी!''

मैंने चौंककर देखा, मीता के पापा थे।

''आपने तो खबर भी नहीं की। इतने बेगाने हो गए हैं हम लोग!''

उनके स्वर में आक्रोश था, शिकायत थी। मैं क्या जवाब देती।

''वो तो मीतू अभी किसी काम से घर गई थी, तब पड़ोस के मेहता साहब ने बताया।''

''सब-कुछ इतना अचानक हो गया,'' मैंने अपराधी स्वर में कहा, ''शिव बेचारा एकदम अकेला पड़ गया था। सारी दौड़-भाग उसी के जिम्मे थी।''

''यही तो मैं कह रहा हूँ। उसे अकेले सारी दौड़-भाग करने की क्या जरूरत थी! हम लोग किसलिए हैं? कल को ध्रुव सुनेगा तो क्या कहेगा?''

उनसे तो जो भी कहेगा, मुझे तो अपनी चिंता हो गई थी। ध्रुव मुझसे क्या कहेगा? इन पर इतना ताव आ रहा था। दर्द से तड़प रहे थे, पर मजाल है जो बटुए की पकड़ जरा-सी ढीली हो जाए। जनरल वार्ड में रहेंगे। वहाँ नर्सिंग अच्छी होती है- हुँह! अब इतने बड़े आदमी को उस नर्क में ले जाऊँगी तो कैसा लगेगा!

अपनी उस दुश्चिंता में यह पूछना भी याद न रहा कि मीता कहाँ है।

साढ़े ग्यारह बजे उन्हें थियेटर के पासवाले कमरे में लाकर रखा गया। ऐसे हट्टे-कट्टे, हँसते-बोलते व्यक्ति को इस तरह असहाय अवस्था में देखकर मेरी तो रुलाई फूट पड़ी। मीता के भाई नरेश मुझे सहारा देकर बाहर ले आए और वापस बेंच पर बिठा दिया। असहाय-सी मैं वहाँ बैठी रही।

दो घंटे बाद उन्हें वार्ड में ले जाने की अनुमति मिली। ये दो घंटे मेरे लिए दो युग हो गए थे।

वार्ड में वापसी के समय काफिला जरा बड़ा था। घर-परिवार के लोग थे और स्टाफ के भी। ढेर-सी शीशियाँ स्ट्रेचर के साथ चल रही थीं और सब लोग उन्हें उठाए हुए थे।

''माँ, तुम सीढ़ियों से आ जाओ। लिफ्ट में तुम्हें परेशानी होगी।'' शिव ने कहा तो मैं सीढ़ियों की ओर मुड़ गई।

हाँफती-हाँफती ऊपर पहुँची, तब तक स्ट्रेचर शायद वार्ड में पहुँच चुका था, क्योंकि गलियारे में उसका कहीं पता नहीं था। मैं वार्ड तक पहुँची ही थी कि नरेश जी की आवाज आई, ''माँजी, इधर आइए।''

उनके पीछे चलती हुई मैं गलियारे के छोर तक पहुँची। डीलक्स रूम का दरवाजा खुला और खाली स्ट्रेचर थामे लोग बाहर निकले।

''यह कमरा!'' मैंने अस्फुट स्वर में कहा।

''भाभी ने बुक करवाया है।'' मेरा असमंजस ताड़कर शिव पास आकर फुसफुसाया।

''ये उसके बस की ही बात थी जी,'' उसके पापा गर्व से बता रहे थे, ''सुपरिंटेंडेंट से जाकर भिड़ गई। खड़े-खड़े रूम अलॉट करवा लिया। बहुत लड़ाकू है यह लड़की।''

मैंने मीता की ओर देखा। वह चुपचाप इनके पलंग के पास खड़ी थी।

''घर पर तो तिनका भी नहीं उठाती,'' नरेश बोले, ''यहाँ आई है, तब से सफाई में जुटी है। तीन बार तो घर के चक्कर लगा आई है।''

''ये सास जी को खुश करने के फॉर्मूले हैं।'' समधी जी ने स्नेहसिक्त स्वर में कहा।

कमरा सचमुच धुला-पुछा चमक रहा था। दोनों पलंगों पर घर की साफ चादरें और तकिये रखे हुए थे। टेबल पर सफेद टेबल क्लाथ था। अलमारी में कागज बिछे हुए थे। उसमें मेरे और इनके कुछ कपड़े तहाकर रखे हुए थे। चाय, शक्कर, कप, प्लेटें, माचिस कुछ भी नहीं भूली थी वह। बाथरूम में बाल्टी, मग, तौलिया, चौकी, सब व्यवस्थित ढंग से सजा हुआ था।

थोड़ी देर में स्टोव की घरघराहट शुरू हो गई। देखा, मीता चाय बना रही थी।

''माँ, चाय पी लीजिए।'' थोड़ी देर में वह मेरे सामने खड़ी थी। कमरे में आने के बाद से उसने पहली बार बात की थी और उसका स्वर अत्यंत सपाट था।

''चाय! यहाँ?'' मैंने एक बेमतलब-सा जुमला उठाया।

''तो कहाँ पीएँगी! क्या पापा को इस हालत में छोड़कर आप घर जाएँगी?''

उसकी बात में तर्क था, पर उससे भी ज्यादा वजनदार उसकी आवाज थी। मैंने चुपचाप प्याला ओठों से लगा लिया। मेरे चाय लेते ही सबने जैसे राहत महसूस की, क्योंकि सभी थके हुए थे।

बहुत बेमन से प्याला उठाया था मैंने, पर सच कहूँ तो पीने के बाद जी एकदम हलका हो गया। सुबह से सिर भारी हो गया था। यह भी थोड़ा उतर गया।

पाँच बजे के करीब उन्हें कुछ होश आया। मीता उनके पास ही बैठी हुई थी। उसे देखकर उतनी पीड़ा में भी वे थोड़ा-सा मुसकरा दिए। तब मुझे अहसास हुआ कि सचमुच उनकी यंत्रणा बहुत भीषण रही होगी। नहीं तो क्या ऑपरेशन से पहले एक बार भी अपनी लाड़ली बहू को याद न करते?

''पापा, आप और भैया अब घर जाइए।'' मीता का फरमान छूटा, ''रात को मेरा और माँ का खाना लेकर भैया आएगा। आप अब सुबह आइएगा।''

''मैं फल-फूल खा लूँगी।'' मैंने हल्का-सा प्रतिवाद किया।

''आपके लिए पक्का खाना बन जाएगा।'' उसने मेरी ओर बिना देखे जवाब दिया।

''वैसे बहन जी, चाहें तो हमारे साथ घर चलकर...''

''पापा, प्लीज!'' उसने जैसे सारे विवाद को समाप्त करते हुए कहा और उन दोनों को जबरन घर रवाना किया। फिर शिव के साथ बैठकर उसने सारे पर्चे पढ़े और फिर शिव को दवाइयाँ लाने भेज दिया तथा खुद इनके पलंग के पास स्टूल खींचकर बैठ गई।

दूसरे पलंग पर मैं चुपचाप पड़ी रही। बोलने की शक्ति ही नहीं रह गई थी। दो रातों का जागरण था, थकान थी, तनाव था। कब झपकी लग गई, पता ही नहीं चला। मीता ने खाने के लिए जगाया, तब जाकर आँख खुली।

समधी जी से रहा नहीं गया होगा। खाना लेकर खुद आ गए थे। बदले में लाड़ो की फटकार भी सुननी पड़ी। वे शिव का भी खाना लाए थे, पर मीता ने उसे अस्पताल में खाने नहीं दिया।

''तुम पापा के साथ घर जाओगे और सुबह पेपर के बाद ही यहाँ आओगे, समझे?''

''लेकिन भाभी, यहाँ...'' वह मिमियाया।

''यहाँ की चिंता मत करो। यहाँ मैं हूँ, माँ हैं, भैया है।''

शिव बहुत कुनकुनाया, पर आखिर उसे जाना ही पड़ा। उन लोगों को छोड़ने के लिए नरेश जी नीचे तक गए। मीता ने उनसे मेरे लिए पान मँगवाया। पान के बिना आज पूरा दिन हो गया था, पर मुझे याद ही नहीं आई थी। पर पता नहीं कैसे मीता जान गई थी कि खाने के बाद मुझे तलब जरूर आएगी।

खाने के बाद उसने मेरा बिस्तर ठीक किया। फिर बाथरूम में जाकर सारी प्लेटें-गिलास धो डाले। दूध एक बार फिर गरम किया और सोने की तैयारी करने लगी।

''भैया, बारह बजे तक मैं एक झपकी ले लूँ। फिर ड्यूटी पर आ जाऊँगी। फिर चाहे आप पूरी रात सोये रहना।'' उसने कहा और आरामकुर्सी में हाथ का तकिया बनाकर लेट गई।

नरेश जी पलंग के पास एक कुर्सी खींचकर बैठ गए। मेरे आराम में जरा भी खलन न डालते हुए दोनों भाई-बहन नाइट ड्यूटी निभाने को तत्पर थे। मुझे कैसा तो लगा।

''मीता!'' मैंने स्नेहसिक्त स्वर में आवाज दी, ''भैया आरामकुर्सी में लेट जाएँगे। तू इधर पलंग पर आ जा ना, दिन-भर खड़ी की खड़ी है।''

पता नहीं मेरी आवाज में कुछ था या उसने प्रतिवाद नहीं करना चाहा। वह चुपचाप मेरे पास आकर लेट गई। ''आप सोने लगें तो मुझे जगा लीजिएगा, भैया,'' उसने कहा और आँखें मूँद लीं। नरेशजी आरामकुर्सी पलंग के पास खिसकाकर उसमें लेट गए। कमरे में एक अजीब-सी शांति छा गई।

मैंने मीता की ओर देखा। पता नहीं क्यों, उसे देखकर मुझे सविता की याद हो आई। दो बच्चों की माँ हो गई है, पर अब भी कभी-कभी उस पर बचपन सवार हो जाता है। माँ के पास लेटने का मोह हो आता है। उन क्षणों में वह एकदम नन्हीं सवि बन जाती है।

मेरे पास लेटी यह नन्हीं-सी लड़की! इसका भी तो कभी-कभी मन होता होगा! तब किसके आँचल में मुँह छुपाती होगी। बड़ी बहन है, वह सात समंदर पार इतनी दूर है। भाभी तो खुद ही लड़की है अभी।

वह मेरी ओर पीठ करके लेटी थी निस्पंद। सलवार-सूट उतारकर उसने नाइटी पहन ली थी। उसमें वह एकदम बच्ची-सी लग रही थी। दिनभर किसी उग्र तेज से दपदप करता उसका चेहरा अब एकदम निरीह, निष्पाप शिशु का-सा लग रहा था।

ममता का एक ज्वर-सा उठा मन में। एकदम उसे अंक में भर लेने की इच्छा हुई। पर संकोच से मैं बस उसकी पीठ पर, बालों पर हाथ फेरती रही। वह मेरे वात्सल्य के उद्रेक से अनजान वैसी ही निस्पंद पड़ी रही।

अचानक मेरी उँगलियाँ उसकी पलकों को छू गई। वे गीली थीं।

''क्या हुआ बेटे?'' मैंने प्यार से पूछा।

वह कुछ नहीं बोली। बस, जैसे रुलाई रोकने के लिए होंठ सख्ती से भींच लिये।

''अपने पापा जी के लिए परेशान हो? पर डॉक्टर साहब तो कह रहे थे, वे एकदम ठीक हैं। ऑपरेशन बहुत अच्छा हुआ है। बस, एक-दो दिन में उठकर बैठ जाएँगे। यही कह रहे थे न!'' कहते-कहते मैं भी शंकाकुल हो उठी।

वह एकदम पलटी। कुछ क्षण मुझे देखती रही, फिर मेरी छाती में मुँह छुपाकर सुबकते हुए बोली, ''पहले यह बताइए, आपने हमें खबर क्यों नहीं की? पापा जी इतने बीमार हो गए और किसी को मेरी याद भी न आई?''

यही तो। अपने-आपको कठघरे में खड़ा करके मैं बार-बार पूछ रही थी- 'मुझे उसकी याद क्यों न आई? अपनी बिटिया को कैसे भूल गई थी मैं?' ©पाँ.स्तं.

गोखले के साथ पूना में

मैं पूना पहुँचा। वहाँ के सब संस्मरण देने में मैं असमर्थ हूँ। गोखले और (भारत सेवक समाज) सोसायटी के सदस्यों ने मुझे अपने प्रेम से नहला दिया। जहाँ तक मुझे याद है, उन्होंने सब सदस्यों को पूना बुलाया था। सबके साथ कई विषयों पर मैंने दिल खोलकर बातचीत की। गोखले की तीव्र इच्छा थी कि मैं भी सोसायटी में सम्मिलित हो जाऊँ। मेरी इच्छा तो थी ही।

मेरे बंबई पहुँचते ही गोखले ने मुझे खबर दी थी, ''गवर्नर आपसे मिलना चाहते हैं। अतएव पूना आने के पहले उनसे मिल आना उचित होगा।'' इसलिए मैं उनसे मिलने गया। साधारण बातचीत के बाद उन्होंने कहा, ''मैं आपसे एक वचन माँगता हूँ। मैं चाहता हूँ कि सरकार के बारे में आप कोई भी कदम उठाएँ, उसके पहले मुझसे मिलकर बात कर लिया करें।''

मैंने जबाव दिया, ''वचन देना मेरे लिए बहुत सरल है। क्योंकि सत्याग्रही के नाते मेरा नियम ही है कि किसी के विरुद्ध कोई कदम उठाना हो, तो पहले उसका दृष्टिकोण उसी से समझ लूँ और जिस हद तक उसके अनुकूल होना संभव हो, उस हद तक अनुकूल हो जाऊँ। दक्षिण अफ्रीका में मैंने सदा इस नियम का पालन किया है और यहाँ भी वैसा ही करनेवाला हूँ।''

लार्ड विलिंग्डन ने आभार माना और कहा, ''आप जब मिलना चाहेंगे, मुझसे तुरंत मिल सकेंगे और आप देखेंगे कि सरकार जान-बूझकर कोई बुरा काम नहीं करना चाहती।''

मैंने जवाब दिया, ''यह विश्वास ही तो मेरा सहारा है।''

मैं पूना पहुँचा। वहाँ के सब संस्मरण देने में मैं असमर्थ हूँ। गोखले और (भारत सेवक समाज) सोसायटी के सदस्यों ने मुझे अपने प्रेम से नहला दिया। जहाँ तक मुझे याद है, उन्होंने सब सदस्यों को पूना बुलाया था। सबके साथ कई विषयों पर मैंने दिल खोलकर बातचीत की। गोखले की तीव्र इच्छा थी कि मैं भी सोसायटी में सम्मिलित हो जाऊँ। मेरी इच्छा तो थी ही। किंतु सोसाइटी के सदस्यों को ऐसा लगा कि सोसाइटी के आदर्श और काम करने की रीति मुझसे भिन्न है, इसलिए मुझे सदस्य बनना चाहिए या नहीं इस बारे में उनके मन में शंका थी। गोखले का विश्वास था कि मुझमें अपने आदर्शों पर दृढ़ रहने का जितना आग्रह है, उतना ही दूसरों के आदर्शों को निबाह लेने का और उनके साथ घुलमिल जाने का मेरा स्वभाव है। उन्होंने कहा, ''हमारे सदस्य अभी आपके इस निबाह लेने वाले स्वभाव को पहचान नहीं पाए हैं। वे अपने आदर्शों पर दृढ़ रहने वाले स्वतंत्र और दृढ़ विचार के लोग हैं। मैं आशा तो करता हूँ कि वे आपको स्वीकार कर लेंगे। पर स्वीकार न भी करें तो आप यह न समझना कि उन्हें आप के प्रति कम आदर या कम प्रेम है। इस प्रेम को अखंडित रखने के लिए वे कोई जोखिम उठाते हुए डरते हैं। पर आप सोसाइटी के सदस्य बनें या न बनें मैं तो आपको सदस्य ही मानूँगा।''

मैंने अपने विचार गोखले को बता दिए थे, ''मैं सोसाइटी का सदस्य चाहे न बनूँ तो भी मुझे एक आश्रम खोलकर उसमें फीनिक्स के साथियों को रखना और खुद वहाँ बैठ जाना है। इस विश्वास के कारण कि गुजराती होने से मेरे पास गुजरात की सेवा के जरिए देश की सेवा करने की पूँजी अधिक होनी चाहिए, मैं गुजरात में कही स्थिर होना चाहता हूँ।'' गोखले को ये विचार पसंद पड़े थे, इसलिए उन्होंने कहा, ''आप ऐसा अवश्य करें। सदस्यों के साथ आपकी बातचीत का जो भी परिणाम आए, पर यह निश्चित है कि आपको आश्रम के लिए पैसा मुझी से लेना है। उसे मैं अपना ही आश्रम समझूँगा।''

मेरा हृदय फूल उठा। मैं यह सोचकर खुश हुआ कि मुझे पैसा उगाहने के धंधे से मुक्ति मिल गई और यह कि अब मुझे अपनी जवाबदारी पर नहीं चलना पड़ेगा, बल्कि हर परेशानी के समय मुझे रास्ता दिखाने वाला कोई होगा। इस विश्वास के कारण मुझे ऐसा लगा मानो मेरे सिर का बड़ा बोझ उतर गया हो।

गोखले ने स्व. डॉक्टर देव को बुलाकर कह दिया, ''गांधी का खाता अपने यहाँ खोल लीजिए और इन्हें आश्रम के लिए तथा अपने सार्वजनिक कार्यों के लिए जितनी रकम की जरूरत हो, आप देते रहिए।''

अब मैं पूना छोड़कर शांति निकेतन जाने की तैयारी कर रहा था। अंतिम रात को गोखले ने मुझे रुचने वाली एक दावत दी और उसमें उन्होंने जो चीजें मैं खाता था, उन्हीं का अर्थात् सूखे और ताजा फलों के आहार का ही प्रबंध किया। दावत की जगह उनके कमरे से कुछ ही दूर थी, पर उसमें भी सम्मिलित होने की उनकी हालत न थी। लेकिन उनका प्रेम उन्हें दूर कैसे रहने देता? उन्होंने आने का आग्रह किया। वे आए भी, पर उन्हें मूर्च्छा आ गई और वापस जाना पड़ा। उनकी ऐसी हालत जब-तब हो जाया करती थी। अतएव उन्होंने संदेशा भेजा कि दावत जारी ही रखनी है। दावत का मतलब था, सोसाइटी के आश्रम में मेहमानघर के पास वाले आँगन में जाजम बिछाकर बैठना, मूँगफली, खजूर आदि खाना, प्रेमपूर्ण चर्चाएँ करना और एक-दूसरे के दिलों को अधिक जानना।

पर गोखले की यह मूर्च्छा मेरे जीवन के लिए साधारण अनुभव बनकर रहने वाली न थी। क्रमशः

किस्त-दर-किस्त

किलकारियों और करुण-क्रंदन के बीच

संजय कुमार मिश्र
M 0997 1189 229

किलकारियों को मातमी करुण क्रंदन में तब्दील होने के बीच बहुत बड़ा रिक्त स्थान है, जिसमें जच्चे-बच्चे का सही पोषण का अभाव, उचित इलाज के लिए डॉक्टर और अन्य कर्मचारियों का भ्रष्टाचार, कामचोरी और अमानवीयता। साधनों की कमी से सरकारी अस्पतालों की नारकीय स्थिति।

नए साल के जश्न में जब पूरी दुनिया डूबी थी, उसमें अपनी किलकारियों के साथ पूरी दुनिया में 3,92,078 नवजात शामिल हुए। भारत में तो सबसे ज्यादा (67385)। भारत में जन्मे ये बच्चे उसी समय आँखें खोल रहे थे जब एक तरफ नए साल का उत्सव का माहौल तथा दूसरी तरफ कोटा, जोधपुर और बीकानेर के सरकारी अस्पतालों में सैकड़ों बच्चों की हो रही मौतों से पूरा परिदृश्य शोक और सिसकियों से गमगीन था। सरकार की उपेक्षा, लापरवाही और असंवेदनशीलता से मरते बच्चों के माता-पिता तथा उनके प्रियजनों के लिए नववर्ष तो शोक दिवस था। नववर्ष के दिन हजारों किलकारियों का गूँजना खासकर उन परिवारों के लिए जिनके घर ये बच्चे पैदा हुए, सुखद और सुकून पहुँचाने वाली बात हो सकती है। इसके साथ ही एक दिन में पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा बच्चे का भारत में पैदा होना यहाँ के नीति-नियंताओं को चिंतन और मूल्यांकन के लिए भी विवश करता है कि क्या हमारे देश के पास इस रफ्तार से बढ़ती जनसंख्या के बोझ को सँभालने लायक संसाधन और संवेदना है?

नए साल के पहले दिन दुनिया में करीब चार लाख बच्चों ने जन्म लिया। इनमें सबसे अधिक (67,385) भारत में पैदा हुए। यह जानकारी संयुक्त राष्ट्र बाल कोष (यूनिसेफ) ने दी है। इस मामले में भारत के बाद दूसरे नंबर पर चीन का रहा, जहाँ भारत से काफी कम 46,299 बच्चे पैदा हुए। भारत और चीन के बाद इस सूची में नाइजीरिया, पाकिस्तान, इंडोनेशिया, अमेरिका, कांगो और इथियोपिया रहे। इन नन्हे नवांकुरों को खेलते-खिलखिलाते हुए देखकर जहाँ असीम खुशियों की अनुभूति होती है, वहीं अगर उसको सही पोषण और उचित इलाज, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और रोजगार अगर नहीं मिले तो परिवार, समाज और देश को हर कदम पर दुःख, मातम और अराजकता का भी सामना करना पड़ता है। कोटा, जोधपुर और बीकानेर में सैकड़ों की संख्या में मरने वाले बच्चे न तो पहले हैं और न आखिरी, इसके पहले पिछले साल चमकी बुखार से मुजफ्फरपुर बिहार में, 2017 में गोरखपुर में, 2013 में कोलकाता के बी.सी. रॉय चिल्ड्रेन हॉस्पिटल में सैकड़ों बच्चों की जान जाती रही है। इसके अलावा भी शिशुओं की मौतों की आए दिन घटने वाली अनेक लोमहर्षक घटनाएँ होती हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ (यूनिसेफ) की रिपोर्ट बताती है कि भारत में कुपोषण, उचित इलाज और देखरेख के अभाव में करीब आठ लाख नवजात शिशुओं की मौत हर साल हो जाती है। यहाँ औसतन हर दो मिनट में तीन नवजातों की मृत्यु होती है। वार्षिक मानव विकास सूचकांक-2019 में कहा गया है कि 189 देशों में भारत का नंबर 129वाँ है, जिसमें पिछले साल के मुकाबले 1 अंक का सुधार हुआ है। भारत में अभी भी 36.4 करोड़ गरीब रह रहे हैं, जो दुनिया के गरीबों की आबादी का 28 फीसदी हैं। दुनिया भर में गरीबों की संख्या 130 करोड़ है। स्वास्थ्य सेवा सुलभ होने के मामले में भारत दुनिया के 195 देशों में 154वीं पायदान पर है। स्वास्थ्य सेवा पर भारत सरकार का खर्च जीडीपी का मात्र 1.5 फीसदी है। हालाँकि वर्तमान केन्द्र सरकार ने 2025 तक यह खर्च 2.5 तक करने का संकल्प लिया है।

गर्भ में पलने वाला बच्चा इस बात से अनभिज्ञ होता है कि वह जिस भू-भाग में पैदा होने वाला है, वहाँ पहले से ही बेसुमार लोग भरे पड़े हैं। यह तो परिवार, समाज और सरकार को तय करना है कि हम उतने ही मानव संसाधन को इस धरती पर आने दें, जितने का भार वह सह सके और उनको सारी आधारभूत सुविधाएँ मिल सकें। अनुमान है कि साल 2027 से पहले तक भारत आबादी के मामले में चीन को पीछे कर देगा। 2019 में चीन की आबादी 1.43 अरब और भारत की आबादी 1.37 अरब रही। सर्वाधिक आबादी वाले इन दोनों देशों ने 2019 में वैश्विक जनसंख्या में क्रमशः 19 और 18 प्रतिशत की हिस्सेदारी है। विश्व के भू-भाग का मात्र 2.5 प्रतिशत जमीन तथा 4 फीसद जल भारत के पास है।

यूनीसेफ ने जो आँकड़ा दिया है, वह एक दिन का है। इसे अगर हम औसत मान लें, तो इस साल देश में दो करोड़ 45 लाख बच्चे पैदा होंगे। यानी ऑस्ट्रेलिया की पूरी आबादी के बराबर। बात सिर्फ करोड़ों बच्चों के जन्म की ही नहीं है, यह उनके लिए जरूरी संसाधन जुटाने की चुनौती की भी है। हमारी आबादी सघनता दूसरे देशों के मुकाबले पहले ही काफी अधिक है और ग्लोबल वार्मिंग के दौर में अगर यह आगे भी बढ़ती रहती है, तो इससे पैदा होने वाली जटिल समस्याएँ अनेक परेशानियों को जन्म देगी। उस पर भी कोढ़ के उपर खाज के रूप में हर स्तर पर भ्रष्टाचार और कुशासन सब गुड़ गोबर कर देता है। दुःखद स्थिति तो यह है कि जनसंख्या नियंत्रण की सुविचारित नीति तो छोड़िए, इस पर ज्यों ही बात तक की जाती है, उसको सांप्रदायिक रूप देकर बात का बतंगड़ बना चर्चा से गायब कर दिया जाता है।

किलकारियों को मातमी करुण क्रंदन में तब्दील होने के बीच बहुत बड़ा रिक्त स्थान है, जिसमें जच्चे-बच्चे का सही पोषण का अभाव, उचित इलाज के लिए डॉक्टर और अन्य कर्मचारियों का भ्रष्टाचार, कामचोरी और अमानवीयता। साधनों की कमी से सरकारी अस्पतालों की नारकीय स्थिति। मरते बच्चों की हृदयविदारक चीखों की नौकरशाही और राज्य सरकारों की असंवेदनशील बहरापन और कुटिल चुप्पी जैसी तमाम परिस्थितियाँ हैं।

इसमें कोई शक नहीं है कि वर्तमान केन्द्र सरकार देश की हर बुनियादी आवश्यकताओं एवं जटिल समस्याओं के समाधान के अनेक क्षेत्रों में प्रयास कर रही है। चाहे वह स्वच्छता, स्वास्थ्य, पेयजल, आवास, शिक्षा, गंगा सफाई, पर्यावरण, कृषि सुधार, महिला कल्याण एवं सुरक्षा आदि। परंतु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारी अधिकांश समस्याओं के कारणों में एक बहुत बड़ा कारक बेशुमार बढ़ती जनसंख्या है। अगर इसपर अभी भी गंभीरता से काम नहीं हुआ तो सारी आधारभूत व्यवस्था बढ़ती जनसंख्या के बोझ तले दबकर कुछ वर्षों में ही चरमरा जाएगी। आज समय की आवश्यकता है कि केन्द्र, सभी राज्य सरकारें तथा पूरा समाज अपने तमाम मतभेदों को परे रखकर सुचिंतित स्वास्थ्य एवं जनसंख्या नियंत्रण की नीति बनाकर एक अभियान चलाएँ, ताकि किसी भी नवजात की किलकारियाँ कुछ ही दिनों या क्षणों में मातमी करुण-क्रंदन में न बदलें। ©पाँ.स्तं.

SHYAMA POWER INDIA LIMITED

shyama power

An ISO 9001: 2015 Company

Shyama Power provides high quality Engineering, Procurement and Construction Services for Construction of High Voltage Transmission/Distribution Lines Substations and Rural Electrification works.

Corporate Office
Plot no. 49, Sector – 44
Gurgaon, Haryana – 122002
Tel : 0124 – 2645000

Registered Office
Naga Cottage, Circular Road
Dimapur – 797112
Nagaland, Tel : 0386 - 226177

POSTAL REGD. NO. DL(S)-01/3287/2019-21
RNI NO. DELHIN/2006/18597
PUBLISHING DATE: 25TH-26TH PREVIOUS MONTH
POSTING DATE: 5TH-6TH EVERY MONTH